# उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

**MAJY-601**

**तृतीय सेमेस्टर**

# होराशास्त्र एवं फलादेश विवेचन-01

मानविकी विद्याशाखा

**ज्योतिष विभाग**

## पाठ्यक्रम सम्पादन एवं संयोजन


**डॉ. नन्दन कुमार तिवारी**
**असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग**
**उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी**


| इकाई लेखन | खण्ड | इकाई संख्या |
|---|---|---|
| **प्रोफेसर भारतभूषण मिश्र**<br>ज्योतिष विभाग<br>राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, मुम्बई परिसर। | **1** | **1, 2, 3, 4, 5** |
| **डॉ. नन्दन कुमार तिवारी**<br>असिस्टेन्ट प्रोफेसर, ज्योतिष विभाग<br>उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी | **2** | **1,2,3,4** |




**प्रकाशन वर्ष-** 2021

**प्रकाशक -** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।

**मुद्रक: -**

**ISBN NO. -**

**एम.ए. (ज्योतिष)** **MAJY-601**

## तृतीय सेमेस्टर – प्रथम पत्र

# होराशास्त्र एवं फलादेश विवेचन-01

## अनुक्रम

# एम.ए. (ज्योतिष)

## (MAJY-20)

## तृतीय सेमेस्टर

## प्रथम पत्र

## होराशास्त्र एवं फलादेश विवेचन- 01

## MAJY- 601

# खण्ड - 1

# होरा स्कन्ध

# इकाई - 1 नक्षत्र एवं ग्रह स्वरूप, उच्च-नीच, मूलत्रिकोणादि विवेचन

## इकाई की संरचना

## 1.1 प्रस्तावना

छात्रों आपका एम.ए. (ज्योतिष) तृतीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में स्वागत है। ज्योतिष शास्त्र को वेद का चक्षु कहा गया है। जिस प्रकार नेत्र के बिना हम कार्य करने में असमर्थ होते हैं वैसे ही ज्योतिष के बिना अन्य शास्त्रों का उपयोग करने में कठिनाई होती है। आज हम इस पाठ के माध्यम से जानने जा रहे हैं कि नक्षत्र और ग्रह क्या हैं इनके द्वारा हमारे जीवन में क्या प्रभाव पडता है?

वस्तुत: सम्पूर्ण ज्योतिषरूपी वृक्ष की जड नक्षत्र और ग्रह ही हैं। इनके माध्यम से ही काल के शुभाशुभ परिणाम का ज्ञान होता है। आकाश में हमें चमकते हुए अनगिनत तारे दिखते हैं । इन्हीं तारों में कुछ पुंज हमारे लिए अत्यन्त प्रभावी हैं। जिनका प्रभाव हमारे जीवन मे बहुत ही निकटतम रूप से प्राप्त होता है। उनको हम नक्षत्र के नाम से जानते हैं। ग्रहों की स्थिति वा उनके स्थान का ज्ञान का मूलस्रोत नक्षत्र ही हैं। हमारे आचार्यों ने नक्षत्रों के गुण धर्म के अनुसार ग्रहों के फलों का अनुभव किया उसी का समग्र रूप आज हमें फलित शास्त्र के रूप में प्राप्त हो रहा है। ज्योतिष के वास्तिवक नामकरण का आधार यही नक्षत्र हैं।

## 1.2 उद्देश्य

मित्रों इन्हीं नक्षत्रों के गुण धर्म से जब ग्रह का सम्बन्ध होता है तो वह गुण धर्म सभी चराचर को प्रभावित करते हैं। हमें ग्रहों का गुण जानने के लिए नक्षत्रों का गुण भी जानना चाहिए। राशियों की प्रकृति भी जाननी चाहिए जिसके आधार पर हम ग्रहों का प्रभाव समझ पाएँगें।

1- इस पाठ को पढकर हम नक्षत्रों का गुण धर्म प्रकृति को जानेंगे।
2- इस पाठ के माध्यम से हम नक्षत्रों की विविध संज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
3- ग्रहों का स्वरूप और उनके गुण पदार्थों का जानेंगे।
4- ग्रहों का उच्चस्थान, नीच स्थान काल तत्त्व आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

## 1.3 मुख्यभाग

नक्षति शोभां गच्छति इस व्युत्पत्ति के आधार पर आकाशमण्डल में सुशोभित होने वाले, चमकने वाले तारमण्डलों को नक्षत्र कहते हैं। हमारे ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्र ही आधार भूत हैं। सम्पूर्ण भचक्र को 27 नक्षत्रों में बाँटा गया है। इन्हीं नक्षत्रों के समूह को राशि कहते हैं। आप तो जानते ही हैं कि राशियों की संख्या 12 है। हमारा भचक्र 360 अंशों का होता है। उसके अनुसार भचक्र को 12 भागोंमें विभाजित करने पर हमें 30 अंश प्रत्येक भाग को मिलते हैं। $12x30^0= 360^0$। इस क्रम में नक्षत्रों के विभाजन करने पर प्रत्येक नक्षत्र $13^0$ 20’ कला का अर्थात् 800 कला का

होता है। प्रत्येक नक्षत्र में 4 चरण होते हैं। नक्षत्र का प्रत्येक चरण 3-20 कला का होता है। राशि चक्र के 27 समभाग करने पर 27 नक्षत्रों का स्थान निश्चित हो जाता है। 1 राशि में सवा दो नक्षत्र अर्थात् 9 चरण होते हैं। शिशु का जिस चरण में जन्म होता है उसी आद्यक्षर से उसका नामकरण किया जाता है। जैसे किसी का रेवती के तृतीय चरण में जन्म हुआ तो उसका नाम चन्द्रपकाश या अन्य च से प्रारम्भ होने वाले नामकरण किए जा सकते हैं।

नक्षत्र के पर्याय – गण्ड, भ, र्क्ष, तारा, उडु, धिष्ण्य ऋक्ष आदि ये नक्षत्रों के पयार्य कहे गए हैं।

**नक्षत्रों के नाम**

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृग:।
आर्द्रापुनर्वसूपुष्यस्तथाऽश्लेषा मघा तत:।
पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुम्मराफाल्गुनी तत:।
हस्ताश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम्।
अनुराधा ततो ज्येष्ठा मूलं चैव निगद्यते।
पूर्वाषाढोत्तराषाढा त्वभिजिच्छ्रवणस्तत:।
धनिष्ठा शततारख्यं पूर्वाभाद्रपदा तत:।
उत्तराभाद्रपदाश्चैव रेवत्येतानिभानि च।[1]

| क्रम | नक्षत्र | चरण | राशि |
|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | चू, चे, चो, ला | |
| 2 | भरणी | ली, लू, ले, लो | |
| 3 | कृत्तिका | अ, इ, उ, ए | मेष (कृ. के 1 चरण तक) |
| 4 | रोहिणी | ओ, वा,वी, वू | |
| 5 | मृगशिरा | वे, वो, का, की | वृष (मृग. के 2 चरण तक) |
| 6 | आर्द्रा | कु,घ, ड.,छ | |
| 7 | पुनर्वसु | के, को, हा, ही | मिथुन (पुन. के 3 चरण तक) |
| 8 | पुष्य | हू, हे, हो, डा | |
| 9 | श्लेषा | डी, डू, डे, डो | कर्क (श्लेषा के 4 चरण तक) |
| 10 | मघा | मा, मी, मू, मो | |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | मो, टा, टी, टू | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | टे,टो, पा, पी | सिंह (उ.फा. के 1 चरण तक) |
| 13 | हस्त | पू, ष, ण, ठ | |

1 बृहदवकहडाचक्रम् नक्षत्र विवेक श्लोक 1,2,3, 4

| 14 | चित्रा | पे, पो, रा, री | कन्या (चि. के 2 चरण तक) |
|---|---|---|---|
| 15 | स्वाती | रू, रे, रो, ता | |
| 16 | विशाखा | ती, तू, ते, तो | तुला (वि. के 1 चरण तक) |
| 17 | अनुराधा | ना, नी, नू, ने | |
| 18 | ज्येष्ठा | नो, या, यी, यू | वृश्चिक (ज्ये. के 4 चरण तक) |
| 19 | मूल | ये, यो, भा, भी | |
| 20 | पूर्वाषाढा | भू, ध, फ, ढ | |
| 21 | उत्तराषाढा | भे, भो, जा, जी | धनु (उ.षा. के 1 चरण तक) |
| 22 | श्रवण | जू, जे, जो, खा | |
| 23 | धनिष्ठा | गा, गी, गू, गो | मकर (धनि. के 2 चरण तक) |
| 24 | शतभिषा | गो, सा, सी, सू | |
| 25 | पूर्वाभाद्रपद | से, सो, दा, दी | कुम्भ (पू.फा. के 3 चरण तक) |
| 26 | उत्तराभाद्रपद | दू, थ, झ, ञ, | |
| 27 | रेवती | दे, दो, चा, ची | मीन |

**अभिजित नक्षत्र-** अभिजित की भी गणना नक्षत्रों में की जाती है। वस्तुत:यह नक्षत्र अन्य नक्षत्रों की अपेक्षा बहुत दूर होने के कारण इसका उपयोग कम किया जाता है। उत्तराषाढा की अन्तिम चरण की 15 घटी एवं श्रवण के आरम्भ की 4 घटी = 19 घटी अभिजित का मान विद्वानों ने निश्चित किया है। मुख्यत:नक्षत्र27 ही हैं अभिजित सहित गणना करने पर 28 नक्षत्र हो जाते हैं।

**उपखण्ड एक**

प्रिय छात्रों आपने नक्षत्रों के नाम व उनसे राशि का निर्माण अच्छे से समझ लिया होगा। आगे नक्षत्रों का स्वरूप जानने के लिए नक्षत्रों के स्वामी और नक्षत्रों की संज्ञा का ज्ञान होना आवश्यक है। जिसके द्वारा हम उनकी प्रकृति और उपयोग समझ सकते हैं। इसलिए इस खण्ड में हम नक्षत्रो के स्वामी एवं नक्षत्रों के कार्य और गुण को दर्शाने वाली संज्ञाओं का अध्ययन करेंगे।

**नक्षत्रों के स्वामी**

**नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृत् रुद्रादितिज्योरगा।**
**ऋक्षेशा पितरोभगोऽर्यमरवी त्वष्टासमीर: क्रमात्।**
**शक्राग्नीखलु मित्रइन्द्रनिऋति: क्षीराणिविश्वेविधि:।**

**गोविन्दो वसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधा।।**[2]

इनका क्रमश: विवरण अध: प्रदत्त तालिका में देखें। नक्षत्रोंके स्वामी के आधार पर मुहूर्तादि का निर्णय किया जाता है। साथ ही जब नक्षत्रदोष हेतु शान्ति की आवश्कता होती है तब नक्षत्र स्वामी के जप व दान का विधान शास्त्रों में बताया गया है।

| क्रम | नक्षत्र | स्वामी |
|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | नासत्य, दस्र, |
| 2 | भरणी | अन्तक , यम |
| 3 | कृत्तिका | अग्नि, |
| 4 | रोहिणी | धाता, ब्रह्मा |
| 5 | मृगशिरा | शशभृत्, शशी |
| 6 | आर्द्रा | रुद्र |
| 7 | पुनर्वसु | अदिति |
| 8 | पुष्य | ईज्य , गुरु |
| 9 | श्लेषा | सर्प |
| 10 | मघा | पितृ |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | भग, योनि |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | अर्यमा |
| 13 | हस्त | रवि |
| 14 | चित्रा | त्वष्टा |
| 15 | स्वाती | वायु |
| 16 | विशाखा | शक्राग्नी |
| 17 | अनुराधा | मित्र |
| 18 | ज्येष्ठा | इन्द्र |
| 19 | मूल | निऋति |
| 20 | पूर्वाषाढा | जल |
| 21 | उत्तराषाढा | विश्वेदेव |
| 22 | श्रवण | गोविन्द |
| 23 | धनिष्ठा | वसु |
| 24 | शतभिषा | वरुण |

[2]. मुहूर्तचिन्तामणि नक्षत्राध्याय कश्लो 1

| 25 | पूर्वाभाद्रपद | अजपाद |
|---|---|---|
| 26 | उत्तराभाद्रपद | अहिर्बुध्न्य नामक सूर्य |
| 27 | रेवती | पूषा नामक सूर्य |

इसके बाद हम नक्षत्रों की संज्ञा विशेष का ज्ञान करेंगे।

**ध्रुव संज्ञक नक्षत्र**

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।
तत्र स्थिरं बीजगेह-शान्त्यारामदिसिद्धये।।[3]

अर्थ- तीनों उत्तरा, रोहिणी और रविवार ये सभी ध्रुव संज्ञक हैं । इन नक्षत्रों में कृषि से सम्बन्धित कार्य, शान्तिकार्य, पौष्टिक कार्य, घर से सम्बन्धित कार्य और वाटिका लगाना आदि कार्य शुभ कहे गए हैं।

**चर-चल संज्ञक नक्षत्र**

स्वात्यादित्ये श्रुते: त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्।।[4]

अर्थ- स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और सोमवार ये चर और चल संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में वाहनादि कार्य और पेड-पौधे लगाना आदि कार्य शुभ होते हैं ।

**उग्रगणनक्षत्र**

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति।[5]

अर्थ- तीनों पूर्वा, भरणी और मघा ये नक्षत्र उग्र/ क्रूर संज्ञक कहे गए हैं। इनके नाम के अनुसार सभी उग्रकार्य इन नक्षत्रों में सम्पादित करना चाहिए। साथ ही अग्नि से सम्बन्धित कार्य जैसे- ईंट आदि पकाने के लिए भट्टा लगाना, चूल्हा, गैस आदि का कार्य करना शुभ होता है। इसी क्रम में विष, रसायन, आदि का कार्य भी इन नक्षत्रों में लाभप्रद होता है।

**मिश्रगणनक्षत्र**

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।

---

[3]. बृहदवकहडाचक्रम् नक्षत्र विवेक श्लोक 6
[4]. बृहदवकहडाचक्रम् नक्षत्र विवेक श्लोक7
[5]. मुहूर्तचिन्तामणि अध्याय 4 .श्लो 2

तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति ।। [6]

अर्थ- विशाखा, कृत्तिका और बुधवार मिश्र व साधारण संज्ञक हैं। इनमें अग्निकार्य, मशीन आदि का कार्य करना, मिश्र कार्य ( जो अन्य नक्षत्रों में कहे गए हैं) वृषोत्सर्गादि कार्य भी किए जा सकते हैं।

**लघुगणनक्षत्र**

हस्ताश्वि -पुष्याभिजित: क्षिप्रं लघुगुरुस्तथा।

तस्मिन् पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ।।[7]

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित और गुरुवार ये लघु/ क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र कहे गए हैं। इनमें व्यापार से सम्बन्धित सभी कार्य ( दुकान खोलना, व्यापार आरम्भ करना, खरीदना, बेचना) , स्त्री प्रेम सम्बन्धित कार्य, शिक्षा से सम्बन्धित कार्य, कलात्मक कार्य, शिल्पकार्य आदि शुभ होते हैं।

**मृदुगणनक्षत्र**

मृगान्त्यचित्रा- मित्रर्क्षं मृदु-मैत्रं भृगुस्तथा।

तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ।। [8]

अर्थ- मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा और शुक्रवार ये मृदु संज्ञक नक्षत्र हैं। इनमें संगीत से जुडे कार्य, वस्त्र से सम्बन्धित कार्य व व्यवसाय, खेल के कार्य, मित्रों के कार्य और आभूषणादि कार्य शुभ होते हैं।

**तीक्ष्ण/ दारुणसंज्ञक नक्षत्र**

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरितीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।

तत्राभिचारघातोग्रभेदा: पशुदमादिकम् ।।[9]

अर्थ- मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा और शनिवार ये सभी तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक हैं। इनमें अभिचार कार्य, उग्र कार्य, पशुओं का नियन्त्रण आदि कार्य करना शुभ है।

अब इन्हीं सभी विषयों को सूची बद्ध प्रस्तुत किया जा रहा है।

---

[6]. मुहूर्तचिन्तामणि अध्याय .श्लो 25

[7]. मुहूर्तचिन्तामणि अध्याय .श्लो 26

[8]. मुहूर्तचिन्तामणि अध्याय .श्लो 27

[9]. मुहूर्तचिन्तामणि अध्याय .श्लो 28

| क्रम | संज्ञा | नक्षत्र | दिन | कार्य |
|---|---|---|---|---|
| 1 | ध्रुव | तीनों उत्तरा, रोहिणी | रविवार | स्थिर, बीज, गृह, शान्ति, वाटिका |
| 2 | चर-चल | स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा | सोमवार | गजाश्वारोहण , वाटिका, भ्रमण |
| 3 | उग्र-क्रूर | तीनों पूर्वा, भरणी, मघा | मंगलवार | घात, अग्नि, शाठ्य, विष, शस्त्रादि |
| 4 | मिश्र-साधारण | विशाखा, कृत्तिका | बुधवार | अग्निकार्य, मिश्रकार्य, वृषोत्सर्गादिकार्य |
| 5 | क्षिप्र-लघु | हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित | गुरुवार | पण्य- रति- ज्ञान- आभूषाणादि |
| 6 | मृदु-मैत्र | मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा | शुक्रवार | गीत, वस्त्र, क्रीडा, मित्र कार्य, भूषणादि |
| 7 | तीक्ष्ण-दारुण | मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्लेषा | शनिवार | घात, उग्र, पशुदमन, |

**अभ्यास प्रश्न**

1- क्षं किसे कहते हैं?
2- नक्षत्र का अर्थ क्या है?
3- अभिजित को मिलाकर कितने नक्षत्र होते हैं?
4- यम किस नक्षत्र के स्वामी हैं?
5- नक्षत्र का कलात्मक मान कितना होता है?

**उपखण्ड दो**

प्रिय छात्रों , मुहूर्त के अतिरिक्त नक्षत्रों का उपयोग जन्म, यात्रा, पूजन जपादि कार्यों नष्टवस्तु के ज्ञान में भी नक्षत्रों का उपयोग किया जाता है। जब किसी शिशु का जन्म होता है तब प्रश्न किया जाता है कि बालक मूलजन्मा तो नहीं है । ये मूल क्या कहीं मूल नक्षत्र की बात तो नहीं की जा रही है। आप भी यही सोच रहे होंगे। तो आईए इस विषय को समझते हैं। मित्रों यदि आप नक्षत्रों और राशियों को ध्यान से देखें कि कुछ नक्षत्रों के अन्तसे अथवा आरम्भ से राशि का आरम्भ होता है। चलिए उनको खोजते हैं।

तो आपने दे,खा कि रेवती में मीन का अन्त और अश्विनी में मेष काआरम्भ होता है। आगे चलिए श्लेषा में कर्क का अन्त और मघा में सिंह का आरम्भ होता है। इसके बाद ज्येष्ठा में वृश्चिक का

अन्त और मूल में धनु का आरम्भ होता है।

**गण्डान्त दोष-**

रेवती, अश्विनी, श्लेषा, मघा, ज्येष्टा और मूल ये 06 नक्षत्र ही गण्डान्त/मूल कहलाते हैं। इनमें जन्म लेने वालो को मूलजन्मा कहते हैं। मूल में जन्म लेने वालों की मूल शान्ति शास्त्रों में बताई गई हैं।

**नष्टवस्तु ज्ञानार्थ नक्षत्रों की संज्ञा**

प्रिय छात्रों लोक व्यवहार में गत वस्तु के ज्ञान के लिए भी ज्योतिष का उपयोग किया जाता है। चोरी हुई, रखकर भूल गई आदि वस्तुओं के ज्ञान के लिए बताई जा रही नक्षत्र संज्ञा का प्रयोग किया जा सकता है। रोहिणी नक्षत्र से अन्धक, मन्द, मध्य और सुलोचन संज्ञक4 भागों में नक्षत्रों को बाँटा गया है।

जैसे-

अन्धकं मन्दनेत्रं च मध्यचक्षु: सुलोचनम्।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तावृत्या पुन: पुन:।।[10]

| क्रम/संज्ञा | नक्षत्र | नक्षत्र | नक्षत्र | नक्षत्र | नक्षत्र | नक्षत्र | नक्षत्र | गतवस्तु फल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अन्धाक्ष | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | वि. | पू.षा. | धनि. | रेवती | शीघ्र लाभ |
| मन्दाक्ष | मृग. | श्लेषा | हस्त | अनु. | उ.षा. | शत. | अश्वि. | प्रयत्न लाभ |
| मध्याक्ष | आर्द्रा | मघा | चि. | ज्ये. | अभि. | पू;भा. | भरणी | केवल जानकारी मिले |
| सुलोचन | पुन. | पू.फा. | स्वा. | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृत्तिका | अलाभ |

अभ्यास प्रश्न

6- गण्डान्त नक्षत्रों की संख्या कितनी है?

7- मूलजन्मा किसे कहते हैं?

8- ज्येष्ठा में किस राशि का अन्त होता है?

[10]. बृहदवकहडाचक्रम् नक्षत्र विवेक श्लोक 14

9- अश्विनी से किस राशि का आरम्भ होता है?

10- अन्धक नक्षत्र में गई वस्तु का फल क्या है?

## 1.4 मुख्यभाग खण्ड दो

फलित ज्योतिष शास्त्र में मुख्यत: ग्रहों के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। पराशर के अनुसार पूर्वाभिमुख चलते हुए नक्षत्रों को भोग करने वालों को ग्रह कहते हैं। यथा- गच्छन्तो भानि गृह्णन्ति सततं ये तु ते ग्रहा:। ग्रहों की संख्या 9 है।

अथ खेटा रविश्चन्द्रो मंगलश्च बुधस्तथा।
गुरु: शुक्र: शनी राहु- केतुश्चैते यथक्रमम्।। [11]

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु

विशेष- राहु और केतु को छाया ग्रह माना जाताहै। इनका कोई पिण्ड नहीं है।

**ग्रहों के पर्याय**-

| क्रम | ग्रह | पर्याय |
|---|---|---|
| 1 | सूर्य | हेलि, तपन, दिनकर, दिवाकर, भानु, पूषा, अरुण , अर्क |
| 2 | चंद्र | शीतद्युति, सोम, ग्लौ, इन्दु |
| 3 | मंगल | आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर |
| 4 | बुध | सौम्य, वित्, ज्ञ |
| 5 | गुरु | जीव, देवेज्य |
| 6 | शुक्र | काव्य, सित, दावनेज्य |
| 7 | शनि | सूर्यपुत्र, कोण, मन्द, आर्कि |
| 8 | राहु | सर्प, फणि,तम |
| 9 | केतु | ध्वज, शिखी |

**ग्रहों का स्थान**

हम यहाँ ग्रहों की राशियाँ जानेंगे। सभी ग्रह अलग-अलग राशियों के स्वामी होते हैं। जैसे-

मेषवृश्चिकयोर्भौम: शुक्रो वृषतुलाभृतो:।

बुध: कन्यामिथुनयो: कर्कस्वामी तु चन्द्रमा:।

स्यान्मीनधन्विनोर्जीव: शनिमकरकुम्भयो:।

[11] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो 11 .

सिंहस्याधिपति: सूर्य:कथितो गणकोत्तमै:।[12]

अर्थात्- मेष-वृश्चिक के मंगल, वृष-तुला के शुक्र, मिथुन-कन्या के बुध, कर्क के चंद्रमा, धनु-मीन के गुरु, मकर-कुंभ के शनि और सिंह के सूर्य स्वामी हैं। जब कहीं राशीश या स्वगृही आदि लिखा मिले तब हमें ग्रह अपनी राशि में हैं यह समझना चाहिए।

**ग्रहों का उच्च नीचादि ज्ञान**

ग्रह अपनी राशि में होने से स्वगृही कहलाते हैं। जब यही ग्रह अपने उच्च राशि में होते हैं तब ये उच्चगृही कहलाते हैं।

अज-वृष-मृगाङ्गना-कुलीरा-झष-वणिजौ च दिवाकरादितुङ्गा:।
दश-शिखि-मनुयुक्-तिथि-इन्द्रियांशै:, त्रिनवकविंशतिश्च तेऽस्तनीचा:।[13]

अर्थात्- सूर्य मेष में, चंद्र वृष में, मंगल मकर में, बुध कन्या में, गुरु कर्क में, शुक्र मीन में और शनि तुला में उच्च का होता है। उक्त राशियों में क्रमश: 10, 03, 28, 15, 05,27,20 इन अंशो में ग्रह उच्च होते हैं। ग्रह के उच्च स्थान से सप्तम स्थान नीच स्थान कहे गए हैं। उच्च स्थान में ग्रह बलवान और नीच में निर्बल होता है।

**मूलत्रिकोण स्थान**

रवे: सिंहे नखांशाश्च त्रिकोणमपरे स्वभम् ।
उच्चम्- इन्दोर्वृषे त्र्यंशा: त्रिकोणमपरेंSशका:।
मेषेऽर्कांशास्तु भौमस्य त्रिकोणमपरे स्वभम्।
उच्चं बुधस्य कन्यायामुक्तं पंचदशांशका:।
तत: पंचांशका: प्रोक्तं त्रिकोणमपरे स्वभम् ।
चापे दशांशा जीवस्य त्रिकोणमपरे स्वभम् ।
तुले शुक्रस्य तिथ्यंशास्त्रिकोणमरे स्वभम्।
शने: कुम्भे नखांशाश्च त्रिकोणमपरे स्वभम् ।। [14]

इन सभी का विवरण तालिका में देखा जा सकता है।

**ग्रहों का उच्च नीच मूलत्रिकोणादि बोधिका**

---

[12] भुवनदीपक श्लो 12
[13] बृहज्जातकम् अध्याय 01, श्लो 13
[14] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो52.-54

| | **सूर्य** | **चंद्र** | **मंगल** | **बुध** | **गुरु** | **शुक्र** | **शनि** | **राहु** | **केतु** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वगृह | सिंह | कर्क | मेष , वृश्चिक | मिथुन कन्या | धनु, मीन | वृष, तुला | मकर, कुम्भ | कन्या | मीन |
| उच्च | मेष | वृष | मकर | कन्या | कर्क | मीन | तुला | मिथुन | धनु |
| | $10^0$ | $03^0$ | $28^0$ | $15^0$ | $05^0$ | $27^0$ | $20^0$ | | |
| नीच | तुला | वृश्चिक | कर्क | मीन | मकर | कन्या | मेष | धनु | मिथुन |
| | $10^0$ | $03^0$ | $28^0$ | $15^0$ | $05^0$ | $27^0$ | $20^0$ | | |
| मूलत्रिकोण | सिंह | वृष | मेष | कन्या | धनु | तुला | कुम्भ | | |
| | $20^0$ | $3^0$-$30^0$ | $0^0$ -$12^0$ | $15^0$-$20^0$ | 0-$10^0$ | 0-$15^0$ | 0-$20^0$ | | |

**राहुकेतु का गृहोच्चनीचस्थानादि**

यद्बुधस्य ग्रहस्योच्चं राहोस्तद् गृहमुच्यते।
यद्बुधस्य गृहं राहो: तदुच्चं ब्रुवते बुधा:।
कन्याराहुगृहं प्रोक्तं राहूच्चं मिथुनं स्मृतम्।
राहुनीचं धनुर्वर्णादिकं शनिवदस्य च ।[15]

अर्थ- जो बुध का उच्च स्थान है वही राहु की राशि जाननी चाहिए। जो बुध का गृह है वही राहु का उच्च स्थान है। इसके अनुसार कन्या राहु का स्वगृह, मिथुन उच्च और धनु नीच स्थान है। राहु के वर्णादि का ज्ञान शनि के अनुसार करना चाहिए।

**ग्रहस्वरूपादि ज्ञान**

भार्गवेन्दु जलचरौ ज्ञजीवौ ग्रामचारिणौ।
राहुक्षितिजमन्दार्का ब्रुवतेऽरण्यचारिण:।[16]

अर्थ- शुक्र और चंद्रमा जलचर हैं, बुध और गुरु ग्रामचर, राहु मंगल, शनि एवं सूर्य वनचरग्रह कहे गए हैं।

[15]. भुवनदीपक 18-19

[16]. भुवनदीपक 23

प्रयोजन- ग्रह अपने स्थान में बलवान होते हैं। किसी स्थान विशेष या नष्ट वस्तु के स्थान आदि का ज्ञान करने के लिए भी इनका उपयोग किया जाता है।

**ग्रहों का आत्मासंज्ञादि का ज्ञान**

दिवाकरो हि विश्वात्मा मन: कुमुदबान्धव:।
सत्त्वं कुजो बुधो वाणीदायको विबुधै: स्मृत:।।
देवेज्यो ज्ञानसुखदो भृगुवीर्यप्रदायक:।
क्रूरदृग् विबुधैरुक्तच्छायासूनुश्च दु:खद:।।

भावार्थ- सूर्य विश्व की आत्मा अर्थात् पूरे ब्रह्माण्ड की आत्मा है। चंद्र मन,मंगल साहस,बुध वाणी, गुरु ज्ञान, शुक्र वीर्यदाता अर्थात काम और शनि दु:ख है।

**ग्रहों की राजसंज्ञादि**

राजानौ भानुहिमगू नेता ज्ञेयो धरात्मज:।
बुधो राजकुमारश्च सचिवौ गुरुभागर्वौ।।
प्रेष्यको रविपुत्रश्च सेना स्वर्भानुपुच्छकौ।
एवं क्रमेण वै विप्र! सूर्यादींस्तु विचिन्तयेत्।।[17]

भावार्थ- सूर्य और चंद्रमा राजा, मंगल नेता, बुध राजकुमार, गुरु और शुक्र सचिव (मंत्री) और शनि दास (सेवक) है।

**अभ्यास प्रश्न-**

11- मेष का स्वामी कौन है ?
12- वृष में कौन सा ग्रह उच्च होता है ?
13- शनि की मूलत्रिकोण राशि बताएँ।
14- राहु का उच्च स्थान क्या है ?
15-गुरु कब नीच कहलाता है ?

**ग्रहों के वर्ण**

रक्तश्यामो दिवधीशो गौरगात्रो निशाकर:।

[17] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .14-15

नातिदीर्घः कुजो रक्तो दूर्वाश्यामो बुधस्तथा।।

गौरगात्रो गुरुर्ज्ञेयः शुक्रः श्यामस्तथैव च।

कृष्णदेहो रवेः पुत्रो ज्ञायते द्विजसत्तम।।[18]

भावार्थ- सूर्य का लाल एवं श्याम से मिश्रित, चंद्र का गौरवर्ण, मंगल का रक्त वर्ण, बुध का दूर्वा के समान सांवला, गुरु का गौर वर्ण, शुक्र श्यामल और शनि का कृष्णवर्ण ऋषियों ने कहा है।

**ग्रहों के देवता**

वह्न्यम्बु शिखिजा विष्णु-विडौजः शचिका द्विज।

सूर्यादीनां खगानां तु देवा ज्ञेयाः क्रमेण च।।[19]

भावार्थ- अग्नि, वरुण, कार्तिकेय, विष्णु, इन्द्र, शची (इन्द्र की पत्नी) और ब्रह्मा ये सूर्य से शनि पर्यन्त ग्रहों के देवता कहे गए हैं। छात्रों ग्रह दोष निवारण हेतु पीडित ग्रह के देवता का पूजनादि कार्य शान्तिकारक होता है।

**ग्रहों का पुरुषत्वादि**

क्लीबौ द्वौ सौम्यशौरी च युवतीन्दुभृगू द्विज।

नराः शेषाश्च विज्ञेया भानुभौमो गुरुस्तथा।।[20]

भावार्थ- बुध और शनि –नपुंसक, चंद्र और शुक्र- स्त्री, अन्य सभी ग्रह पुरुष हैं।

**ग्रहों के तत्त्व**

अग्नि-भूमि-नभस्तोय-वायवः क्रमतो द्विज।

भौमादीनां ग्रहाणां तु तत्त्वान्येतानि वै क्रमात्।।[21]

भावार्थ- मंगल- अग्नि, बुध- भूमि, गुरु- आकाश, शुक्र- जल और शनि- वायु तत्त्वों के कारक कहे गए हैं। जो ग्रह बलवान होगा उस तत्त्व के गुण जातक में अधिक पाए जाते हैं।

**ग्रहों के वर्ण और गुण**

हम ग्रहों के वर्ण और गुणों को जानेंगे। ग्रहों के अन्दर जिस वर्ण का जिस गुण का प्रभाव रहता है उसी वर्ण का प्रभाव जातक में अधिक पाया जाता है।

---

[18] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .17-18

[19] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .19

[20] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .20

[21] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .21

**ग्रहो की जाति संज्ञा व गुण**

गुरुशुक्रौ विप्रवर्णौ कुजार्कौ क्षत्रियौ द्विज।
शशिसौम्यौ वैश्यवर्णौ शनि: शूद्रो द्विजोत्तम।।
सात्त्विका भानुचन्द्रेज्या राजसौ सौम्यभार्गवौ।
तामसौ कुजमन्दौ तु ज्ञेया विद्वद्वरै: सदा।।[22]

भावार्थ- ब्राह्मण- गुरु और शुक्र, क्षत्रिय- मंगल और सूर्य, वैश्य- चंद्रमा और बुध, शूद्र- शनि
सत्वगुण- सूर्य,चंद्र और गुरु। रजोगुण- बुध और शुक्र। तमोगुण- मंगल और शनि
राहुकेतु के लिए विशेष -

राहुश्चाण्डालजातिश्च केतुर्जात्यन्तरं तथा।

अर्थात्- राहु चाण्डाल जाति का एवं केतु अन्त्यज (नीच कर्म करने वाले) जाति का है।

**ग्रहों का स्वरूप**

प्रिय छात्रों ग्रहों का एक स्वरूप विशेष आचार्यों ने फलितशास्त्र मे वर्णित किया है उस स्वरूप के अनुसार ही बलवान ग्रह जातक को प्रभावित करता है। जैसे किसी के लग्न मे सूर्य का प्रभाव अधिकाधिक हो तो उस जातक का वर्ण सूर्यस्वरूप के समान होगा । अत: हमें ग्रहों का स्वरूप जानना अत्यावश्यक है।

**सूर्य और चंद्र का स्वरूप**

मधुपिंगलदृक् चतुरस्रतनु: पित्तप्रकृति: सविताल्पकच:।
तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफ: प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक्।।[23]

अर्थ- वारामिहिर कहते हैं कि सूर्य का स्वरूप - शहद के समान पीली दृष्टि वाला, लम्बाई चौडाई में तुल्य अर्थात् न बहुत लम्बा न बहुत छोटा (मध्यम शरीर) पित्तप्रकृति और कम केशयुत होता है। चंद्र का स्वरूप - गोल आकृति का छोटा शरीर, बातकफाधिक, बुद्धिमान् , मधुरभाषी, और सुन्दर नेत्र वाला होता है।

**मंगल और बुध का स्वरूप**

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदार: पैत्तिक: सुचपल: कृशमध्य:।

[22] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .22-23
[23] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .24

शिलष्टवाक्सततहास्यरुचिर्ज्ञ: पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च।।

अर्थ- मंगल का स्वरूप - तरूणावस्था वाला, क्रूर दृष्टि , दानी, पित्त प्रकृति, चंचलस्वभाव और शरीर के मध्यभाग में दुर्बल होता है।

बुध का स्वरूप- कठिन भाषा का ज्ञाता ( शास्त्रीय भाषा का प्रयोग करने वाला) हास्य प्रिय, वात, कफ और पित्त प्रकृति से युक्त होता है।

**गुरु और शुक्र का स्वरूप**

बृहत्तनु: पिंगलमूर्धजेक्षणो बृहस्पति: श्रेष्ठमति: कफात्मज:।

भृगु: सुखीकान्तवपु: सुलोचन: कफानिलात्मासितवक्रमूर्धज:।।

अर्थ- गुरु का स्वरूप- मोटा शरीर, पिंगल केश, श्रेष्ठ बुद्धि वाला और कफात्मक प्रकृति वाला होता है।

शुक्र का स्वरूप- सुखमय शरीर का भोगी, सुन्दर नेत्र वाला, कफवायु प्रकृति और टेढे बालों वाला होता है।

**शनि का स्वरूप**

मन्दोऽलस: कपिलदृक्कृशदीर्घगात्र:।

स्थूलद्विज: परुषरोमकचोऽनिलात्मा।।[24]

अर्थ- शनि का स्वरूप- कर्म में आलस्य, कपिल वर्ण के आँखें , लम्बा शरीर, मोटे दॉतों वाला एवं वातप्रकृति वाला होता है।

**ग्रहों के धातु**

अस्थि रक्तस्तथा मज्जा त्वङ्मेदो वीर्यमेव च।

स्नायुरेते धातव: स्यु: सूर्यादीनां क्रमाद् द्विज।।[25]

अर्थ- अस्थि , रक्त, मज्जा, त्वचा, मेदा, वीर्य और स्नायु के क्रमश: सूर्यादि ग्रहों के धातु कहे गए हैं।

**ग्रहों के देवालयादि स्थान**

देवालय-पयोवह्निक्रीडादीनां तथैव च।

---

[24] बृहज्जातकम् 8.9।2.10.11

[25] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .32

कोश-शय्याद्युत्कराणामीशा: सूर्यादय: क्रमात्।।[26]

अर्थ- सूर्यादि ग्रहों के क्रमश: मन्दिर, जलाशय, अग्निस्थान, क्रीडास्थान, कोशागार, शयनगृह और कूडा-कचडा आदि का स्थान कहा गया है।

### ग्रहों का कालादि विवरण

अयनक्षणवारर्त्तु-मासपक्षसमा द्विज।
सूर्यादीनां क्रमाज्ज्ञेया निर्विशंङ्कं द्विजोत्तम।।[27]

अर्थ-अयन (6 मास), क्षण,वार (दिन), ऋतु,मास, पक्ष और वर्ष ये सूर्यादि ग्रहों के काल बताए गए हैं।

### ग्रहों का रस

कटुश्च लवणस्तिक्तो मिश्रितो मधुरोऽम्लक:।
कषाय: क्रमशो ज्ञेया: सूर्यादीनामिमे रसा:।।[28]

अर्थ- कडवा,नमकीन,तीखा, मिश्रित, मीठा, खट्टा, कसैला, ये सूर्यादि शनि पर्यन्त ग्रहों के रस बताए गए हैं। छात्रों ग्रहों के रस से हम जातक के भोज्यपदार्थादि का ज्ञान कर सकते हैं।

### ग्रहों के दिक्काल बल

बुधेज्यो बलिनौ पूर्वे रविभौमौ च दक्षिणे।
वारुणे सूर्यपुत्रश्च सितचन्द्रौ तथोत्तरे।
निशायां बलिनश्चन्द्र-बुध-सौरा भवन्ति हि।
सर्वदा ज्ञो बली ज्ञेयो दिने शेषा द्विजोत्तम। ।
कृष्णे च बलिन: कू्रा: सौम्या वीर्ययुता सिते।
सौम्यायने सौम्यखेटो बली याम्यायनेऽपर:।।
अब्दमासदिवा होराऽधीशास्तु बलवत्तर:।
श.भौ.बु.गु.शु. सौराद्या वृद्धितो बलवत्तरा:।।[29]

---

[26] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .33

[27] बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अध्याय 03, श्लो .34

[28] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्र -335

भावार्थ- बुध-गुरु पूर्व में बली, सूर्य - मंगल दक्षिण में , शनि पश्चिम में और शुक्र -चंद्र उत्तर में बली होते हैं।

विशेष- लग्नस्थान को पूर्व, दशम को दक्षिण , सप्तम भाव को पश्चिम और चतुर्थ को उत्तर कहते हैं।

- पापग्रहकृष्ण पक्ष में एवं शुभग्रह शुक्ल पक्ष में बलवान होते हैं।
- पाप ग्रह दक्षिणायन में एवं शुभग्रह उत्तरायण में बली होते हैं।
- वर्ष का स्वामी से मास का स्वामी उससे दिन का स्वामी उससे होरा का स्वामी उत्तरोत्तरबलवान होते हैं।
- शनि, मंगल, बुध, गुरु,शुक्र, चंद्र औरसूर्य ये क्रमश: उत्तरोत्तर बली होते हैं।

अब हम ग्रहों के सम्पूर्ण स्वरूप का तालिका के माध्यम से अध्ययन करेंगे।

| संज्ञा/ ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभाशुभ | क्रूर | शुभ | अशुभ | शुभ परन्तु युति के अनुसार शुभाशुभ | शुभ | शुभ | अशुभ | अशुभ | अशुभ |
| आत्मादि | आत्मा | मन | सत्त्व | वाणी | ज्ञान | काम | दु:ख | | |
| पुरुष/स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | नपुंसक | पुरुष | स्त्री | नपुंसक | | |
| राजा आदि | राजा | रानी | नेता | राजकुमार | मंत्री | मंत्री | सेवक | | |
| देवता | अग्नि | जल | कार्तिकेय | विष्णु | इन्द्र | इन्द्राणी | ब्रह्मा | | |
| पंचतत्त्व | | | अग्नि | भूमि | आकाश | जल | वायु | | |
| वर्ण (जाति) | क्षत्रिय | क्षत्रिय | वैश्य | वैश्य | ब्राह्मण | ब्राह्मण | शूद्र | चाण्डाल | अन्त्यज |
| रस | कटु | नमकीन | तीखा | मिश्रित | मीठा | खट्टा | कसैला | | |
| धातु | अस्थि | रक्त | मज्जा | त्वचा | शरीर | वीर्य | स्नायु | | |
| काल | अयन | क्षण | वार | ऋतु | मास | पक्ष | वर्ष | | |
| सत्वादिगु | सत | सत | तम | रज | सत | रज | तम | | |

[29] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्र 36-3,37,38,39

| ण | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | |
| जलचरादि | वनचर | जलचर | वनचर | ग्रामचर | ग्रामचर | जल चर | वनचर | वन चर | |
| स्थान | देवालय | जल स्थान | अग्नि स्थान | क्रीडास्थल | कोशागार | शयनागार | कूडा स्थान | | |
| दिग्बल | दक्षिण | उत्तर | दक्षिण | पूर्व | पूर्व | उत्तर | पश्चिम | | |
| कालबल | दिवा | रात्रि | दिवा | सर्वदा | दिवा | दिवा | रात्रि | | |

अभ्यास प्रश्न

16- ग्रहों में राजकुमार किसे कहते हैं?

17- कुण्डली में दशमस्थान की कौन सी दिशा होती है?

18- नपुंसक ग्रह कौन हैं?

19- मोटे दाँत वाला स्वरूप किस ग्रह का कहा गया है?

20-स्नायु सूचक ग्रह कौन है ?

## 1.5 सारांश

प्रिय छात्र आपने नक्षत्रों एवं ग्रहों का ठीक प्रकार से अध्ययन किया। आपने जाना कि नक्षत्रों की संख्या 27 अभिजित सहित 28 है। नक्षत्रों के आधार पर मूहूर्त एवं ग्रहों के फल का निर्णय होता है। नक्षत्रों की संज्ञा के अनुसार उनके कार्य भी निश्चित किए गए हैं। जिनके आधार पर आवश्यकता के अनुसार मुहूर्त निकाला जा सकता है। गण्डान्त नक्षत्रों में जन्म लेने वालों को मूल जन्मा कहते हैं। इनकी शान्ति भी उन्हीं नक्षत्रों पर की जाती है। नक्षत्रों का फल निर्णय में बहुत ही महत्त्व है। ग्रह जिस नक्षत्र में बैठे होते हैं उसके अनुसार अपना फल परिवर्तन करते हैं। नक्षत्रों के स्वामी के अनुसार नक्षत्रों की शान्ति की जाती है। इसके साथ ही आपने जाना कि 7 ग्रह और 2 छाया ग्रह हैं। जिसमें सूर्य को आत्मा कहा गया है। इनकी प्रकृति गुण धर्म स्वरूप आदि भी यथा क्रम का अध्ययन किया। इस पाठ का सम्यक् अध्ययन करने पर निश्चित ही आगामी पाठों के अध्ययन एवं ज्योतिष को जानने में सहायता प्राप्त होगी।

## 1.6 शब्दावली

अयन- दो होते हैं उत्तरायण और दक्षिणायन,

कर्क राशि से धनु राशि तक सूर्य का संचार दक्षिणायन कहलाता है। मकर से मिथुन तक सूर्य का संचार उत्तरायण कहलाता है।

ईज्य- गुरु का पर्याय

उच्चादि – ग्रहों के फल के आधार पर ऋषियों ने उनके उच्च स्थानादि कहे हैं। उच्च राशिमें बैठा हुआ ग्रह बलवान होकर अपने उच्चतम फलों को देता है। नीच में बैठा हुआ बलहीन होकर अपने निम्नतम फलों को देता है।

ऋतु- ऋतुएँ 6 होती हैं। वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर

गण्डान्त- गण्ड अर्थात् नक्षत्र उसका अन्त भाग,

पक्ष- शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष

वार- दिनों के नाम सूर्यादि7 वार होते हैं।

मास- 12 चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन

## 1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1- र्क्ष किसे कहते हैं? - नक्षत्र
2- नक्षत्र का अर्थ क्या है? - जो हमेशा स्थिर रहते हैं
3- अभिजितको मिलाकर कितने नक्षत्र होते हैं? - 28
4- यम किस नक्षत्र के स्वामी हैं? -भरणी
5- नक्षत्र का कलात्मक मान कितना होता है? - 800 कला का
6- गण्डान्त नक्षत्रों की संख्या कितनी है? -06
7- मूलजन्मा किसे कहते हैं? -जिनका जन्म मूल नक्षत्रों में होता हैं।
8- ज्येष्ठा में किस राशि का अन्त होता है? - वृश्चिक का
9- अश्विनी से किस राशि का आरम्भ होता है? -मेष का
10- अन्धक नक्षत्र में गई वस्तु का फल क्या है? - शीघ्र लाभ
11-मेष का स्वामी कौन है ? - मंगल
12- वृष में कौन सा ग्रह उच्च होता है ? - चंद्रमा
13-शनि की मूलत्रिकोण राशि बताएँ। - कुम्भ
14- राहु का उच्च स्थान क्या है ? - मिथुन
15-गुरु कब नीच कहलाता है ? - कर्क के $5^0$ पर
16- ग्रहों में राजकुमार किसे कहते हैं? - मंगल को
17- कुण्डली में दशमस्थान की कौन सी दिशा होती है? - दक्षिण
18-नपुंसक ग्रह कौन हैं? -बुध व शनि
19- मोटे दाँत वाला स्वरूप किस ग्रह का कहा गया है? -शनि
20-स्नायु सूचक ग्रह कौन है ? - शनि

## 1.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र – पराशर रचित-व्याख्या-पं.देवचन्द्र झा, चौखम्भा वाराणसी प्रकाशन, वाराणसी

बृहज्जातकम्- वाराह मिहिर –व्याख्या डॉ.नर्वदेश्वर तिवारी, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली

भुवनदीपकम्- श्रीपद्मप्रभु सूरि रचित, व्याख्या- डॉ.शुकदेव चतुर्वेदी, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली

बृहदवकहडाचक्रम्- व्याख्या श्रीमकलकान्त शुक्ल, चौखम्भा वाराणसी प्रकाशन, वाराणसी

मुहूर्तचिन्तामणि- रामदैवज्ञ रचित, व्याख्या- केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, बनारस

## 1.9 सहायक/ उपयोगी पाठ्यसामग्री

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र

बृहज्जातकम्

भुवनदीपकम्

बृहदवकहडाचक्रम्

मुहूर्तचिन्तामणि

जातकपारिजातम्

सारावली

फलदीपिका

लघुजातकम्

## 1.10 निबंधात्मक प्रश्न

1- ग्रहों के उच्चनीचादि स्थानों का विवेचना करें।
2- नक्षत्रों के स्वामी का क्रमश: उल्लेख करें।
3- उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में करणीय कार्यो की सूची बनाऍं।
4- गण्डान्त संज्ञक नक्षत्रों कौन हैं ?
5- ग्रहों का मूलत्रिकोणादि स्थान की सूची बनाएँ।
6- ग्रहों के स्वरूप का विवेचन करें।

# इकाई - 2 राशि प्रभेद एवं स्वरूप विवेचन

## इकाई की संरचना

## 2.1 प्रस्तावना

सिद्धान्त, संहिता और होरा ये ज्योतिष के तीन प्रमुख भाग हैं। जिसमें भी सर्वथा लोकोपकारक, साक्षात् मनुष्य के स्वभाव, प्रकृति, सुख दु:खादि का ज्ञान कराने वाला होरा शास्त्रपरमोपयोगी है। हम इसी होरा शास्त्र का क्रमश: ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। हमने पूर्व पाठों में नक्षत्रों और ग्रहों का परिचय प्राप्त किया है। पूर्व पाठ में हमने 27 नक्षत्रों से राशि निर्माण की प्रक्रिया को भी समझ लिया है। अब आपके मन में कई प्रश्नउठ रहे होंगे कि राशियों के द्वारा मनुष्य की प्रकृति, सुख-दु:ख, हानि लाभ जैसे विषयों का ज्ञान कैसे हो सकता है। इन सभी जिज्ञासाओं की शान्ति के लिए इस पाठ में हम राशियों के स्वरूप को समझेंगे। आप देखेंगे कि महर्षियों ने कितना सूक्ष्म चिन्तन मनुष्य की प्रकृति को समझने के लिए प्रकट कियाहै। ये राशियाँ ही मनुष्य के जन्म कालीन ग्रहों के प्रभाव को गुण बाँट देती हैं। मित्रों तो आइए हम अब इस पाठ के माध्यम से विषय का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

## 2.2 उद्देश्य

ज्योतिष का सूक्ष्मतम ज्ञान प्राप्त करना आपका उद्देश्य है और आपके उद्देश्य को प्रामाणिक और सरल एवं सहजतया प्राप्त करवाना इस पाठ्यक्रम का एकमात्र लक्ष्य है। तो इस पाठ को पढने से हमे क्रमश: ये लाभ प्राप्त होंगे।

1- राशियाँ की विविध संज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
2- पाठ से हमें 12 राशियों की प्रकृति वैशिष्ट्य का ज्ञान प्राप्त होगा।
3- ऋषियों एवं अनुसन्धाताओं केद्वारा प्राप्त राशियों के भेदों का महत्त्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त होगा।
4- राशियों के विविध स्वरूपों का अधिगम प्राप्त होगा।
5- राशियों के शुभाशुभ स्वभाव और बलवत्ता आदि विशिष्ट गुण धर्मो का पाठ के द्वारा अनुशीलन होगा।।

## 2.3 मुख्यभाग

मित्रों! हमने पूर्व पाठ में राशि का सामान्य परिचय प्राप्त किया था उसका पुन: स्मरण करते हुए हम विषय को समझेंगे। हमारे भचक्र को अर्थात् पूरे आकाश मण्डल को 360 अंशों में बाँटा गया है। इनको हमने नक्षत्रों के आधार पर 27 वर्गीकरण किया तब एक नक्षत्र को 13 अंश 20 कला का भाग प्राप्त हुआ। उसी क्रम में 360 अंशों के इस भचक्र को 12 भागों में बाँटने से 30 अंशों का एक भाग प्राप्त होता है। ये 12 भाग ही 12 राशियों का विभाजन है। राशि- राशि का शाब्दिक अर्थ समूह है। किसका समूह, नक्षत्रों का समूह। राशि-क्षेत्र-गृह-र्क्ष-भानि-भवनम् चैकार्थसम्प्रत्यया:।[30]

**[30]. बृहज्जातकम् 4-1**

वाराहमिहिर कहते हैं कि क्षेत्र, गृह, र्क्ष, भाव, भवन, भ आदि सभी राशि शब्द के ही परिचायक हैं। सवा दो नक्षत्र (1 नक्षत्र में 4 चरण और 9 चरण ) की 1 राशि का निर्माण होता है। अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों के द्वारा 12 राशियों का विभाजन किया गया है। जैसे अश्विनी के चार चरण, भरणी के 4 चरण और कृत्तिका के प्रथम चरण तक को मेष राशि कहा जाता है। एक नक्षत्र का मान 13 अंश 20 कला होने से एक चरण का मान 3 अंश 20 कला होता है। $3^{\circ} 20' \times 9 = 30^{0}$ एक राशि का मान होता है। $30^{0} \times 12$ राशि $= 360^{0}$ पूरा राशि चक्र होता है। जिनका नाम इस प्रकार हैं।

**मेषो वृषश्च मिथुनः कर्क-सिंह-कुमारिकाः।**
**तुलालि-चाप-मकराःकुम्भ–मीनौ यथाक्रमम्।।**[31]

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या,तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन

**राशियों के पर्याय**

| **क्रम** | **राशि** | **अंग्रेजी नाम** | **पयार्य नाम**[32] |
|---|---|---|---|
| 1 | मेष | ARIES | अज, विश्व, क्रिय, तुम्बुरु, आद्य |
| 2 | वृष | TAURUS | उक्ष, गौद्व ताबुरु, गोकुल |
| 3 | मिथुन | GEMINI | द्वन्द, नृयुग्म, जुतुम, यम, युग, तृतीय |
| 4 | कर्क | CANCER | कुलीर, कर्काटक |
| 5 | सिंह | LEO | कण्ठीरव, मृगेन्द्र, लेय |
| 6 | कन्या | VIRGO | पाथोन, रमणी, तरुणी |
| 7 | तुला | LIBRA | तौली, वणिक्, जूक, घट |
| 8 | वृश्चिक | SCORPIO | अलि, अष्टम, कौर्पि, कीट |
| 9 | धन | SAGITTARIUS | धन्वी, चाप, शरासन |
| 10 | मकर | CAPRICORN | मृग,मृगास्य, नक्र |
| 11 | कुम्भ | AQUARIUS | घट, तोयधर |
| 12 | मीन | PISCES | अन्त्य, मत्स्य, पृथुरोम, झष |

**उपखण्ड एक**

प्रिय छात्रों हमने राशियों के नाम एवं उनके पर्याय को अच्छी तरह से समझ लिया। आप सोच रहे होंगे ये पर्याय व्यर्थ में याद रखने से क्या लाभ। आपको ये पर्याय जानना बहुत जरूरी है ग्रन्थों में महर्षियों ने अलग- अलग नामों से राशियों का प्रयोग किया है। इसलिए उस समय कठिनाई

[31]. बृहत्पाराशर 03-5
[32]. जातकपारिजात 4-1,5, 6

न हो तदर्थ राशियों पर्याय स्मरण कर लेना चाहिए।

चलिए अब हम आगे बढते हैं। ये 12 राशियाँ हमारे शरीर में अलग-अलग स्थानों मे रहती हैं। इसका सूक्ष्म विभाजन हमारे ऋषियों ने किया है। ये 12 राशियाँ उस परमपुरुष काल नियन्ता के शरीर में बाँटी गई इसलिए इनको काल पुरुष राशियाँ भी कहा जाता है। तो आईए अब हम इन राशियों का काल पुरुष में कहाँ –कहाँ स्थान है इसको विस्तार से समझते हैं।

**कालपुरुष के अंग विभाग**

> **शीर्षानने तथा बाहू हृत्क्रोडकटिवस्तय:।**
> **गुह्योरुयुगले जानुयुग्मे वै जंघके तथा।**
> **चरणौ द्वौ तथाऽजादेर्ज्ञेया: शीर्षादय:क्रमात्।।**[33]

अर्थात्- पराशर कहते हैं कि उस कालपुरुष के सिर से पैर तक ये 12 राशियाँ स्थित हैं जिनके अनुसार हम अपने शरीर में या जातक के शरीर में इसका अनुसरण कर शुभाशुभ फल का ज्ञान करते हैं। कालपुरुष के शिर, मुख, दोनो हाथ, हृदय, उदर, कटि, वस्ति, प्रजननांग, ऊरु, जानु, जंघा और चरण में क्रमश: इन राशियों का स्थान अवस्थित है। जिसको हम अधो दत्त चित्र के अनुसार स्पष्ट समझ सकते हैं।

अगले दिए गए पृष्ठ पर अंकित छाया चित्र में कालपुरूष को आप भली –भॉति समझ सकते हैं -
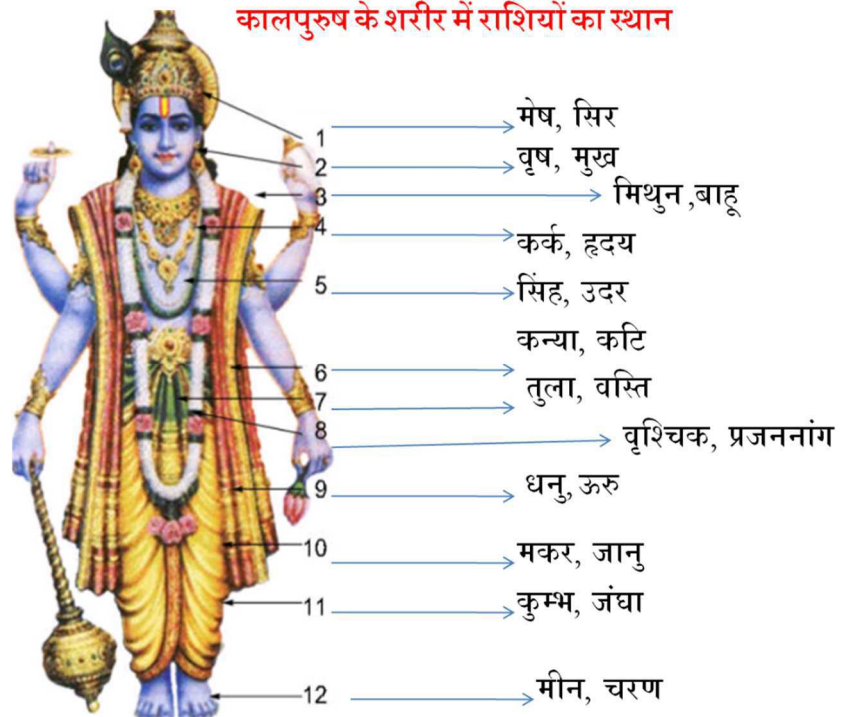
[33] बृहत्पाराशर 04-5

## अभ्यास प्रश्न

1- कौर्पि किसे कहते हैं ?
2- घट किस राशि का पर्याय है ?
3- झष किस राशि की संज्ञा है ?
4- कृत्तिका के 3 चरण में कौन सी राशि होगी ?
5- आद्य किस राशि का नाम है ?

## उपखण्ड दो

सुधी छात्रों हमने 12 राशियों के शरीर में स्थानों का ठीक प्रकार से अध्ययन कर लिया। अब हमें इसको प्रयोग के रूप में समझना होगा।

ये 12 राशियाँ कुण्डली में मूलत: 12 भाव के नाम से जानी जाती हैं। प्रायश: कुण्डली में जिस घर या भाव पर जो अंक लिखा होता है वह उस राशि की संख्या होती है। जैसे इस चक्र के अनुसार आप इसका अधिगम कर सकते हैं।

**राशि व भाव स्पष्टीकरण चक्र**
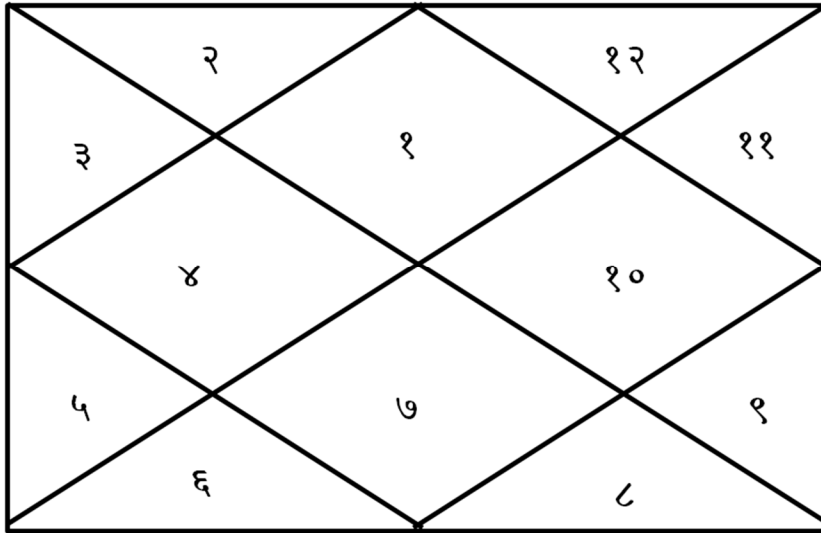
इस चक्र में दिखनेवाले अंक राशियों के द्योतक हैं। इसे लग्न में मेष राशि है ऐसा पढा जाएगा। द्वितीय में वृष, तृतीय में मिथुन, चतुर्थ में कर्क,पंचम में सिंह, षष्ठ भाव में कन्या, सप्तम में तुला, अष्टम में वृश्चिक, नवम में धनु, दशम में मकर, एकादश में कुम्भ और द्वादश में मीन राशि है। जिस भाव में जो राशि होती है उसका स्वामी ही उस भाव का **भावेश** अर्थात् भाव का स्वामी कहलाता है। उस भाव का स्वामी होने के कारण उसका उस भाव फल में पूरा नियन्त्रण रहता है।जैसे कुण्डली में लग्नेश कौन है यह जिज्ञासा हो तो आप देखेंगे कि लग्न में मेष राशि है इसलिए इसका स्वामी मंगल हुआ। अत:

इसका ज्ञान होना अत्यावश्यक है। अब इन्हीं राशियों में बैठे हुए ग्रह को हम कहेंगे कि अमुक ग्रह इस राशि में इस भाव पर बैठा है।

**अभ्यास प्रश्न**

6- एक राशि में कितने अंश होते हैं
7- एक राशि में नक्षत्र के कितने चरण होते हैं
8- एक चरण का अंशात्मक मान कितना है
9- कृत्तिका का 3 चरण किस राशि का स्थान है
10- भावेश किसेकहते हैं

## 2.3 मुख्यभाग खण्ड दो

हमने राशियों का प्रयोग कुण्डली में कैसे किया जाताहै, इसका अधिगम अच्छे से कर लिया है। अब इसके बाद हम राशियों के विविध भेदों का अध्ययन करेंगे। ये सभी भेद अपने संज्ञानुसार राशि के स्वरूप को परिभाषित करते हैं। जिनके द्वारा हम ग्रहों के फल को अनुभूत कर पाते हैं।

**राशियों की चरादि संज्ञा**

**चरस्थिरद्विस्वभावा: क्रूराक्रूरौ नरस्त्रियौ।**
**पित्तानिलत्रिधात्वैक्य-श्लैष्मिकाश्च क्रियादय:।।**[34]

अर्थात्- मेष आदि राशियाँ क्रमश: चर, स्थिर, द्विस्वभाव संज्ञक होती हैं। इन्हीं की क्रमश: क्रूर-अक्रूर, मनुष्य-स्त्री संज्ञाएँ कही गई हैं। इन्हीं राशियों के त्रिकोणानुसार इनकी पित्त, वात, त्रिधातु और कफ संज्ञा कही गई हैं। अब सोचेंगे कि त्रिकोण क्या है तो आईए उसे समझते हैं।
मित्रों हमने ऊपर एक चक्र देखा जिसमें राशियों को समझाया गया है। उसी चक्र में पहला, पाँचवां और नवां घर में मेष, सिंह, और धनु राशि मिल रही हैं ये राशियाँ मेष लग्न के लिए त्रिकोण राशियाँ हैं।अर्थात् 1, 5, 9 क्रम से जो राशि मिलेंगी वह त्रिकोण राशि कहलाएँगी। इस प्रकार हम देखेंगे की 4 त्रिकोण राशियाँ प्राप्त हो रही हैं। जैसे-

**त्रिकोण राशियाँ-**

प्रथम त्रिकोण- मेष, सिंह, धनु
द्वितीय- वृष, कन्या, मकर
तृतीय- मिथुन, तुला, कुम्भ
चतुर्थ- कर्क, वृश्चिक और मीन

---

**[34]. बृहत्पाराशर 05-5**

**धातुमूलादि संज्ञाएँ**

मेषादाह चरं स्थिराख्यमुभयं द्वारं बहिगर्भभम्,
धातुर्मूलमितीह जीव उदितं क्रूरं च सौम्यं विदु:।
मेषाद्या: कथितास्त्रिकोणसहिता: प्रागादिनाथा: क्रमाद्,
ओजर्क्षं समभं पुमांश्च युवति: वामाङ्गमस्तादिकम्।।[35]

अथार्त्- मन्त्रेश्वर जी इस श्लोक में राशियों की संज्ञाओं का वर्णन कर रहें हैं। जिसमें प्रथम पंक्ति में चरादि संज्ञा जो हमने पढ लिया उसके बाद राशियों के क्रम से द्वार, बहि और गर्भ ये तीन संज्ञाएँ बताते हैं। दूसरी पंक्ति में धातु, मूल और जीव ये तीन संज्ञाएँ स्पष्ट करते हैं। उसी क्रम में त्रिकोण राशियाँ क्रमश: पूर्वादि दिशाओं की स्वामिनी होती हैं। यही 12 राशियाँ क्रमश: विषम समादि नाम वाली भी होती हैं।

**राशियों के वर्ण**

रक्तगौ-शुककान्तिपाटला: पाण्डुचित्ररुचिनीलकाञ्चना:।
पिंगल:शबलबभ्रु पाण्डुरास्तुम्बुरादिभवनेषु कल्पिता:।।[36]

अर्थात्- मेषादि राशियों का क्रमश: लाल, सफेद, तोता के जैसे हरा, पाटल, पाण्डु, चित्रवर्ण, नीला,सुनहरा, पिंगल, रंग बिरंगा, नेवले के समान और पीला मिला सफेद ये वर्ण कहे गए हैं।

**राशि द्योतक वस्तुएँ-**

वस्त्राद्यं शालिमुख्यं वनफलनिचय: कन्दली मुख्यधान्यम्।
त्वक्सारं मुद्गपूर्वं तिलवसनमुखं त्विक्षुलोहादिं च।
शस्त्राश्वं कांचनाद्यं जलजनिकुसुमं तोयजातं समस्तम्।
व्याम्याहु: क्रियादिष्वबलयुतेष्वल्पताधिक्यभाञ्जि।[37]

अर्थात्- मेष का वस्त्र, वृष शालि, मिथुन वनफल, कर्क केला, सिंह मुख्यधान्य, कन्या बाँस आदि, तुला मूंग,तिल आदि, वृश्चिक ईख लोहा आदि , धनु शस्त्र, अश्व आदि, मकर का सोना , कुंभ जल में उत्पन्न होने वाले, मीन का जलोत्पन्न पदार्थ आदि कहे गए हैं।

ऊपर दी गई सभी संज्ञाओं को हम तालिका के अनुसार समझने का प्रयास करते हैं।

| **संज्ञा** | **मेष** | **वृष** | **मिथुन** | **कर्क** | **सिंह** | **कन्या** | **तुला** | **वृश्चिक** | **धनु** | **मकर** | **कुम्भ** | **मीन** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चरादि | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव |
| पुरुषादि | पुरु | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री |

[35] फलदीपिका 09-1

[36] जातकपारिजात 23-1

[37] जातकपारिजात 24-1

| | ष | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्रूरादि | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर |
| द्वारादि | द्वार | बहि | गर्भ | द्वार | बहि | गर्भ | द्वार | बहि | गर्भ | द्वार | बहि | गर्भ |
| धत्वादि | धातु | मूल | जीव | धातु | मूल | जीव | धातु | मूल | जीव | धातु | मूल | जीव |
| पूर्वादि | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर |
| समादि | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम |
| वर्ण | लाल | सफेद | हरा | पाटल | पीला | चित्रवर्ण | नीला | सुनहरा | पीला | रंगीला | नेवला के समान | पीला मिश्रित सफेद |

**उपखण्ड एक**

सुधी जनों अब हम राशियों की विविध संज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त कर रहें हैं। इन संज्ञाओं का क्रमशः ज्ञान प्राप्त करें उसके पहले आपके मन में उठने वाले कई प्रश्नों की चर्चा करना आवश्यक है। आप सोच रहे होंगे कि इन संज्ञाओं का अर्थ क्या है प्रयोजन क्या है तो आईए महत्त्वपूर्ण संज्ञाओं के भाव यहाँ क्रमशः प्रस्तुत किए जा रहे हैं। जैसे-

**चरादि संज्ञा-** राशियों की चर स्थिरऔर द्विस्वभाव संज्ञा बताई गई हैं। चर का अर्थ संचरण शील, चलने वाला। स्थिर अपने नाम के अनुसार है। द्विस्वभाव में संचरण एवं स्थिरता दोनों गुण हैं। द्विस्वभाव का पूर्वार्द्ध स्थिर और उत्तरार्द्ध चर संज्ञा केसमान है। इन संज्ञाओ का विविध प्रयोजन हैं जैसे-

**मुहूर्त में**-चर राशियों में किया गया कार्य शीघ्र होता है। स्थिर में स्थिरत्व रहेगा और द्विस्वभाव में कार्य कुछ होगा बाद में रुक जाएगा।

**प्रश्न-** प्रश्न काल में चर राशि में किया गया प्रश्न घटना कारक होता है। स्थिर में यथावत् और द्विस्वभाव में पूर्वार्द्ध में यथावत् उत्तरार्द्ध में चर के समान जनना चाहिए।

ग्रह फल- चर में बैठा हुआ ग्रह शीघ्र फल देकर परिवर्तन करेगा। स्थिर में फल में स्थिरता और द्विस्वभाव में पूर्ववत् समझना चाहिए।

**पृष्ठोदयादि**- शीर्षोदय राशि में बैठा हुआ ग्रह अपना फल शीघ्र प्रदान कर देता है। पृष्ठेदय वाला विलम्ब से फल प्रदान करता है।

**जाति-** राशियों की जाति के अनुसार जातक के अन्दर उस जाति का स्वभाव अधिक पाया जाएगा।
**वर्ण-** राशियों के वर्ण के अनुसार जातक का वस्तु का या विचारणीय विषय का वर्ण निश्चित होगा।
**तत्त्व–** जिस राशि में जो प्रधान तत्त्व है उसी तत्त्व की प्रधानता जातक के स्वभाव में अधिक मात्रामें रहेगी।
**आकार-** राशियों का जो आकार बताया जा रहा है उसी के अनुसार शरीर का कद, व अंग विशेष का आकार या वस्तु का आकार निश्चित करना चाहिए।
**दिवा/रात्रिबल-** दिन में बलवान राशियाँ अपने फल को दिन में प्रदान करेंगी रात्रिबली राशियाँ रात्रि में।
**क्षेत्र विशेष-** राशियों का क्षेत्र स्थान विशेष का द्योतक है।

**गुण विशेष-** सत्त्वादि गुण के अनुसार जातक के गुण का निणर्य होता है।

**दिशा-** दिशा के अनुसार जातक का कार्य क्षेत्र या घटना की दिशा आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।

इन सभी संज्ञाओं के साथ साथ राशियों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध भी जानना आवश्यक है। इन 12 राशियों के स्वामी भी कहे गए हैं। जो इन राशियों के अधिप हैं। साथ ही इन्हीं कुछ राशियों में कुछ ग्रह अपना उच्चतम फल प्रदान करते हैं तो कुछ निम्नतम। यद्यपि यह विषय प्रथम इकाई में हम पढ चुके हैं विस्तृत रूप में वहाँ से समझ लेना चाहिए यहाँ केवल विषय का सम्बन्ध स्पष्ट करने के लिए कुछ अंश स्मरण कराए जा रहे हैं। जैसे-

**राशियों में ग्रहों उच्च-नीच,मूलत्रिकोण आदि का ज्ञान**

| | **सूर्य** | **चंद्र** | **मंगल** | **बुध** | **गुरु** | **शुक्र** | **शनि** | **राहु** | **केतु** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वगृह | सिंह | कर्क | मेष , वृश्चिक | मिथुन कन्या | धनु, मीन | वृष, तुला | मकर, कुम्भ | कन्या | मीन |
| उच्च | मेष | वृष | मकर | कन्या | कर्क | मीन | तुला | मिथुन | धनु |
| | $10^0$ | $03^0$ | $28^0$ | $15^0$ | $05^0$ | $27^0$ | $20^0$ | | |
| नीच | तुला | वृश्चिक | कर्क | मीन | मकर | कन्या | मेष | धनु | मिथुन |
| | $10^0$ | $03^0$ | $28^0$ | $15^0$ | $05^0$ | $27^0$ | $20^0$ | | |
| मूलत्रिकोण | सिंह | वृष | मेष | कन्या | धनु | तुला | कुम्भ | | |
| | $20^0$ | $3^0$-$30^0$ | $0^0$-$12^0$ | $15^0$-$20^0$ | 0-$10^0$ | 0-$15^0$ | 0-$20^0$ | | |

नोट- हमने पूर्व में पढा है कि एक राशि में 30 अंश होते हैं या ये कहें 30 अंश ही एक राशि है। इस उपर्युक्त तालिका में दिए गए अंशों का विवरण उसी के अनुसार समझना चाहिए। उदाहरण-

इस कुण्डली में सूर्य कैसा है तो उच्च का है। चंद्रमा वृश्चिक में है इसलिए तालिका के अनुसार नीच का है। मंगल कर्क राशि में है तो नीच का है। बुध मीन राशि में है इसलिए नीच का है। गुरु धनु राशि में है अत: मूलत्रिकोण राशि का है। शुक्र मीन में है अत: उच्च का है। शनि कुम्भ में है अत: स्वगृही है और मूलत्रिकोण में है। राहु मिथुन में उच्च का है केतु धनु में है अत: वह भी उच्च का है। इसी अनुसार हम ग्रहों का उच्च नीच,मूलत्रिकोण आदि का ज्ञान कर सकते हैं।
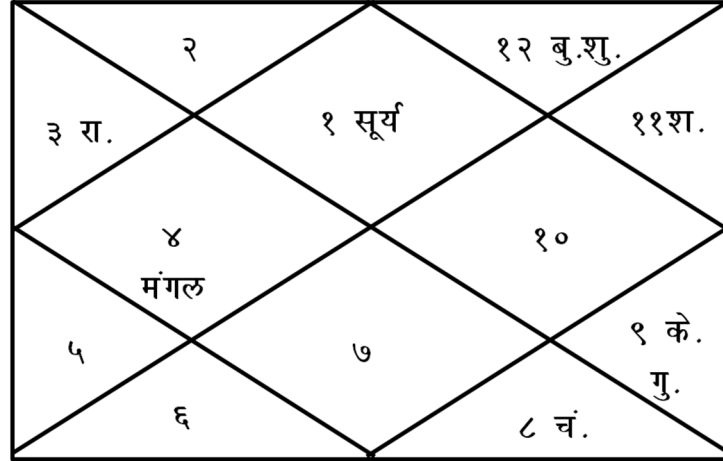
**अभ्यास प्रश्न**

11- पित्त सूचक कौन सी राशियाँ हैं ?

12- बुध की मूलत्रिकोण राशि कौन सी हैं ?

13- विषम राशि कौन-कौन सी हैं ?

14- अक्रूर राशियाँ कौन सी हैं ?

15- द्विस्वभाव संज्ञक राशियाँ कौन कौन सी हैं?

## उपखण्ड दो

प्रिय छात्रों हमने पूर्व खण्ड में राशियों के नाम संज्ञा स्थान आदि का ज्ञान प्राप्त किया है। उसी क्रम में राशि के स्वरूप को समझने के लिए हमें राशियों की प्रकृति का सूक्ष्मतमज्ञान होना आवश्यक है। 12 राशियों का नाम के अनुसार ही मुख्यत: स्वरूप जानना चाहिए। उसमें भी राशि विशेष का कुछ अपना विशिष्ट आकार आचार्यों ने बताया है। इन राशियों के स्वरूप व आकार के अनुसार जातक के गुण धर्म होते हैं।

**मेष का स्वरूप :-**

**रक्तवर्णो बृहद्गात्र: चतुष्पाद् रात्रिविक्रमी।**
**पूर्ववासी नृपज्ञाति: शैलाचारी रजोगुणी।**

**पृष्ठोदयी पावकी च मेषराशिः कुजाधिपः।।**[38]

अर्थात्- इस श्लोक में मेष का स्वरूप बताया गया है कि मेष राशि का लाल वर्ण, लम्बा शरीर, चार पैर, रात में बलवान, पूर्व दिशा में निवास, क्षत्रिय वर्ण, पर्वतों में भ्रमणशील,रजो गुण, पृष्ठ भाग से उदय होने वाली अग्नितत्त्व प्रधान, और स्वामी मंगल हैं।

विशेष- राशि के जो गुण धर्म बताए गए हैं ये सभी गुण धर्म जातक के अन्दर इसके बलाबल के अनुसार विद्यमान रहेंगे। हम क्रमशः आगे के पाठों में इसका विशद अध्ययन करेंगे।

**वृषराशि स्वरूप :-**

**श्वेतः शुक्राधिपो दीर्घः चतुष्पाच्छर्वरीवली।**
**याम्येट् ग्राम्यो वणिग् भूमी रजः पृष्ठोदयो वृषः।**[39]

अर्थात्- वृष का शुक्र स्वामी, लम्बा शरीर, चार पैर, रात्रि में बलवान्, दक्षिण दिशा में निवास, गावों में भ्रमणशील, वैश्य जाति,भूमितत्त्व प्रधान, रजोगुण, पृष्ठ से उदय होने वाला स्वरूप है।

**मिथुन का स्वरूप :-**

**शीर्षोदयी नृमिथुनं सगदं सवीणकम्।**
**प्रत्यङ् मरुद् द्विपद्रात्रिबली ग्रामव्रजोऽनिली।**
**समगात्रों हरिद्वर्णो मिथुनाख्यो बुधाधिपः।।**[40]

अर्थात्- मिथुन राशि गदा और वीणा के साथ,पुरुष-स्त्री की जोडी, शिर से उदय होने वाली, पश्चिम दिशा में निवास, वायुतत्त्व प्रधान, दो पैर, रात्रि में बलवान्, ग्राम में विचरण करने वाली, वात प्रकृति, समान शरीर, हरित वर्ण और बुध इसके स्वामी हैं।

**कर्क का स्वरूप :-**

**पाटलो वनचारी च ब्राह्मणो निशि वीर्यवान्।**
**बहुपादीस्थूलतनुस्तथा सत्त्वगुणी जली।**
**पृष्ठोदयी कर्कराशिर्मृगाङ्काधिपतिः स्मृतः।।**[41]

अर्थात्- चंद्रमा की राशि कर्क, पाटल वर्ण, वनचर,ब्राह्मण गुण धर्म वाली, रात्रि में बलवान्, अनेक पैर, मोटा शरीर, सत्त्वगुण, जलतत्त्व प्रधान, पृष्ठ भाग से उदय होने वाली होती है।

---

[38] बृहत्पाराशर -56-7

[39] बृहत्पाराशर 08-5

[40] बृहत्पाराशर 09-5

[41] बृहत्पाराशर 11-5

**सिंह का स्वरूप :-**

**सिंह: सूर्याधिप: सत्त्वी चतुष्पात् क्षत्रियो वनी।**
**शीर्षोदयी बृहद्गात्र: पाण्डु: पूर्वेड् द्युवीर्यवान्।**

सिंह का सूर्य स्वामी है। यह राशि सत्त्व गुण, चार पैरोंवाली, क्षत्रिय वर्ण, वनचर, शीर्ष से उदय होने वाली, बडा शरीर, पाण्डुवर्ण, पूर्वदिशा में निवास और दिन में बलवान् होती है।

**कन्या का स्वरूप :-**

**पार्वतीयाथ कन्याख्या राशिर्दिनबलान्विता।**
**शीर्षोदया च मध्यांगा द्विपाद्याम्यचरा च सा।**
**सा सस्य दहना वैश्या चित्रवर्णा प्रभञ्जिनी।**
**कुमारी तमसा युक्ता बालभवा बुधाधिपा।।**[42]

अर्थात् – बुध कन्या के स्वामी हैं। यह राशि पर्वतीय प्रदेशों में विचरण करने वाली, दिन में बलवान्, शिर से उदय होने वाली, मध्यम शरीर, दक्षिण दिशा में निवास, सस्य और अग्नि साथ में लिए हुए , वैश्य जाति, चित्रवर्ण, वायु तत्त्व प्रधान और कुमार अवस्था वाली होती है।

**तुला का स्वरूप :-**

**शीर्षोदयी द्युवीर्याढ्यो धट: कृष्णो रजोगुणी।**
**पश्चिमो भूचरो घाती शूद्रो मध्यतनुर्द्विपाद्।**

अर्थात् –शुक्र तुला का स्वामी है। यह राशि शीर्षोदय, दिन में बलवान्, कृष्णवर्ण, रजोगुण, पश्चिम दिशा, भूमि चर, हिंसक प्रवृत्ति, शूद्रजाति, मध्यमशरीर और दो पैर वाली होती है।

**वृश्चिक का स्वरूप :-**

**स्वल्पाङ्गो बहुपाद् ब्राह्मणोबिली।**
**सौम्यस्थो दिनवीर्याढ्य: पिशंगो जलभूवह:।**
**रोमस्वाढ्यो ऽतितीक्ष्णाग्रो वृश्चिकश्च कुजाधिप:।।**

अर्थात् – वृश्चिक का स्वामी मंगल है। यह राशि छोटे शरीर, बहुत पैर, ब्राह्मण जाति, बिल में स्थान, दिवाबली, उत्तर दिशा निवास, पिशंग वर्ण,जलतत्त्व, भूमिचर, अति रोम एवं अत्यधिक तेज से डंक (प्रहार) करने वाली होती है।

**धनु का स्वरूप :-**

**पृष्ठोदयी त्वथ धनुर्गुरुस्वामी च सात्त्विक:।**

---

42 बृहत्पाराशर 14-5

**पिंगलो निशि वीर्याढ्य: पावक: क्षत्रियो द्विपात्**
**आदावन्ते चतुष्पाद: समगात्रो धनुर्धन:**
**पूर्वस्थो वसुधाचारी बहुतेज: समन्वित:।।**[43]

अर्थात्- धनु का स्वामी गुरु है। इस राशि में सत्त्वगुण, पिंगल वर्ण, रात्रि में बलवान्, अग्नितत्त्व, क्षत्रियवर्ण, पूर्वार्द्ध में दो पैर- उत्तरार्द्ध में 4 पैर, समानशरीर, धनुर्धारण, पूर्व दिशा में निवास, भूमिचर और अत्यधिक तेज आदि गुण पाए जाते हैं।

**मकर का स्वरूप :-**

**मन्देशस्तामसो भूमियाम्येट् च निशि वीर्यवान्**
**पृष्ठोदयी बृहद्गात्र: कर्बुरो वनभूचरो।**
**आदौ चतुष्पादन्ते तु विपदो जलगो मत:।**

अर्थात्-मकर राशि का स्वामी शनि है। इस राशि में तामस गुण, भूमि तत्त्व, दक्षिण में निवास, रात्रिबल, पृष्ठ से उदय, बडा शरीर, चित्रवर्ण, वन एवं भूमि में निवास, पूर्वार्द्ध में चतुष्पद एवं उत्तरार्द्ध में पद रहित और जल में संचरण करने वाले गुण पाए जाते हैं।

**कुम्भ का स्वरूप :-**

**कुम्भ: कुम्भी नरो बभ्रुवर्णो मध्यतनुर्द्विपात्।**
**द्युवीर्यो जलमध्यस्थो वातशीर्षोदयी तम:।**
**शूद्र: पश्चिमदेशस्य स्वामीदैवाकरि: स्मृत:।।**

अर्थात्- कुम्भ का स्वामी शनि है। इस राशि में घडा लिए हुए पुरुष की आकृति, भूरा वर्ण, मध्यम शरीर, दो पैर, दिवाबल, पानी का मध्य में संचार, वायुतत्त्व, शिर से उदय, तामस गुण, शूद्रजाति, पश्चिम में निवास आदि गुण पाए जाते हैं।

**मीन का स्वरूप :-**

**मीनौ पुच्छास्यसंलग्नौ मीनराशिर्दिवाबली।**
**जली सत्तवगुणाढ्यश्च स्वस्थो जलचरो द्विज:।**
**अपदो मध्यदेही च सौम्यस्थो ह्युभयोदयी।**

अर्थात्- मीन का स्वामी गुरु है। इस राशि के स्वभाव में मुख-पुच्छ मिश्रित दो मछलियों की तरह, दिन में बलवान्, जलतत्त्व, सत्त्वगुण, स्वस्थ चेहरा, जलचर, ब्राह्मण जाति, पदहीनता, मध्यम शरीर, उत्तर दिशामें निवास, उभयोदय आदि गुण पाए जाते हैं।

---

[43] बृहत्पाराशर 18-17-5

नोट- हमने अभी तक जो राशियों के स्वरूपाध्ययन में संज्ञाएँ समझी हैं इनका फल निर्णय में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन सभी विषयों का हृदयंगम होना बहुत जरुरी है जिससे हम आगे आने वाले विषयों को अच्छी तरह समझ सकते हैं। अभी इसी पाठ में पठित सभी संज्ञाओं को , राशियों का स्वरूप को और स्पष्ट करने के लिए तालिका दी जा रही है। जिसमें राशियों की अन्य संज्ञाओं का भी विवरण दिया गया है। जिसका क्रमश- हमें अभ्यास के द्वारा अधिगम सरल व सहज हो जाएगा।

## राशि स्वरूप बोधक तालिका

| मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन | राशि/ संज्ञा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिर | मुख | बाहू | हृदय | उदर | कटि | वस्ति | प्रजनन | ऊरु | जानु | जंघा | चरण | शरीर में स्थान |
| चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चर | स्थिर | द्विस्वभाव | चरादि |
| पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुषादि |
| क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूर | अक्रूर | क्रूरादि |
| पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | दिशा |
| पृष्ठो | पृष्ठो | शीर्षो. | पृष्ठो | शीर्षो | शीर्षो | शीर्षो | शीर्षो | पृष्ठो | पृष्ठो | शीर्षो | उभयोदय | उदय |
| रात्रि | रात्रि | रात्रि | रात्रि | दिन | दिन | दिन | रात्रि | रात्रि | रात्रि | दिन | दिन | बल |
| अग्नि | पृथ्वी | वायु | जल | अग्नि | पृथ्वी | वायु | जल | अग्नि | पृथ्वी | वायु | जल | तत्त्व |
| पर्वत | ग्राम | ग्राम | वन | वन | पर्वत | भूमि | भूमि | भूमि | वन /भूमि | जल | जल | जलचरादि |
| लम्बा | लम्बा | समान | मोटा | बडा | मध्यम | मध्यम | छोटा | समान | बडा | मध्यम | मध्यम | शरीर |
| क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | ब्राह्मण | जाति |
| विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | विषम | सम | समादि |

## अभ्यास प्रश्न

16-पूर्व दिशा सूचक राशियाँ कौन सी हैं ?
17-मीन का स्वामी कौन है ?
18-धनुर्धारण किया हुआ किस राशि का स्वरूप है ?
19- तुला राशि की कौन सी दिशा है ?
20- कर्कराशि पृष्ठोदय या शीर्षोदय है ?

## 2.4 सारांश

प्रिय छात्रों हमने इस पाठ के माध्यम से होरा शास्त्र की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। इस पाठ में 12 राशियों के स्वामी का ज्ञान प्राप्त हुआ। 12 राशियों की चर स्थिर आदि संज्ञाओं का ज्ञान, ये राशियाँ क्रमश: शिर से लेकर पैर तक निवास करती है इसका भी पूर्ण ज्ञान हमने प्राप्त किया है। राशियों की दिशा के द्वारा हम उसका कैसे उपयोग कर सकते हैं दिशा का निर्णय जान सकते हैं।

राशियों के तत्त्वों के आधार पर व्यक्तिके स्वभाव गुण धर्म का निर्णय भी लिया जा सकता है। इनके निवास स्थान के अनुसार वस्तु के स्थान आदि का ज्ञान भी हम प्राप्त कर सकते हैं। इनके दिवा रात्रि बल के अनुसार व्यक्ति के अंदर रात या दिन में कार्य क्षमता का ज्ञान या घटना काल का अधिगम हमने इस पाठ के माध्यम से किया।

यह पाठ फलित ज्ञान के लिए अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। इसका बारम्बार अभ्यास व स्मरण करने पर ही हम फलित के सिद्धान्तों को समझ सकते हैं। आशा है यह पाठ आपके लिए लाभदायी व उपयोगी सिद्ध होगा यही इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

## 2.5 शब्दावली

कुछ शब्दों का अर्थ उसी क्रम में स्पष्ट किया गया है। कुछ कठिन शब्दों का अर्थ वहाँ स्थानाभाव में नहीं दिया गया है उसका अवलोकन यहाँ करें।

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| शीर्षोदय | शिर से उदय होने वाले |
| पृष्ठोदय | पीठ से उदय होने वाले |
| उभयोदय | दोनो तरफ से उदय होने वाले |
| नृयुग्म | स्त्री पुरुष का जोडा |
| पिशंग | लालिमा लिए हुए भूरे रंग का |
| पिंगल | पीतिमा मिला हुआ रंग का |
| पाण्डुवर्ण | पीला रंग से मिलता हुआ |
| चित्रवर्ण | कई रंगो से बना |
| चतुष्पात् | चार पैरों वाला |
| जलचर | जल में चलने वाला |
| भूमिचर | भूमि में चलने वाला |
| दिवाबल | दिन में कार्य क्षमता अधिक होना |
| ऊरु | घुटने के ऊपर (हिन्दी में इसे जंघा कहा जाता है) |
| जानु | घुटना |

| जंघा | घुटने से नीचे |
|---|---|
| वस्ति | कटि से लिंग तक के मध्य भाग का नाम |
| द्वार | दरवाजे पर |
| बहि | बाहर |
| गर्भ | अन्दर |
| चर | चलायमान |
| स्थिर | स्थगित |
| द्विस्वभाव | दोनो स्वभाव, चरत्व और स्थिरत्व |

## 2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

| प्रश्न | उत्तर |
|---|---|
| 1- कौर्पि किसे कहते हैं ? | - वृश्चिक |
| 2- घट किस राशि का पर्याय है ? | - कुम्भ |
| 3- झष किस राशि की संज्ञा है ? | - मीन |
| 4- कृत्तिका के 3 चरण में कौन सी राशि होगी ? | -वृष |
| 5- आद्य किस राशि का नाम है ? | - मेष |
| 6- एक राशि में कितने अंश होते हैं ? | - 30 अंश |
| 7- एक राशि में नक्षत्र के कितने चरण होते हैं ? | - 9 चरण |
| 8- एक चरण का अंशात्मक मान कितना है? | - 3 अंश 20 कला |
| 9- कृत्तिका का 3 चरण किस राशि का स्थान है? | - वृष |
| 10- भावेश किसेकहते हैं ? | -भाव का स्वामी |
| 11-पित्त सूचक कौन सी राशियाँ हैं ? | - मेष, सिंह, धनु |
| 12-बुध की मूलत्रिकोण राशि कौन सी हैं ? | - कन्या $15^0$-$20^0$ |
| 13-विषम राशि कौन-कौन सी हैं ? | - 1,3,5,7,9,11राशियाँ |
| 14-अक्रूर राशियाँ कौन सी हैं ? | - 2,4,6,8,10,12 राशियाँ |
| 15-द्विस्वभाव संज्ञक राशियाँ कौन कौन सी हैं? | - 3, 6,9,12 राशियाँ |
| 16-पूर्व दिशा सूचक राशियाँ कौन सी हैं ? | - मेष,सिंह, धनु |
| 17-मीन का स्वामी कौन है ? | - गुरु |
| 18-धनुर्धारण किया हुआ किस राशि का स्वरूप है ? | - धनु राशि |

19- तुला राशि की कौन सी दिशा है ? - पश्चिम

20- कर्कराशि पृष्ठोदय या शीर्षोदय है ? - पृष्ठोदय

## 2.7 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- फलदीपिका- मंत्रेश्वर रचित, गोपेश कुमार ओझा व्याख्याकार, मोतीलालबनारसी दास बनारस

2- बृहत्पाराशर होरा शास्त्र – पराशर रचित-व्याख्या-पं.देवचन्द्र झा, चौखम्भा वाराणसी प्रकाशन, वाराणसी

3- बृहज्जातकम्- वाराह मिहिर –व्याख्या डॉ.नर्वदेश्वर तिवारी, भारतीय विद्या प्रकाशन दिल्ली

4- जातकपारिजातम् – वैद्यनाथ रचित, गोपेश ओझा व्याख्याकार, मोतीलालबनारसी दास बनारस

## 2.8 सहायक/ उपयोगी पाठ्यसामग्री

बृहत्पाराशर होरा शास्त्र

बृहज्जातकम्

भुवनदीपकम्

जातकपारिजातम्

सारावली

फलदीपिका

लघुजातकम्

## 2.9 निबंधात्मक प्रश्न

1- चर राशियों का स्वरूप स्पष्ट करें।

2- जलचर राशियों का स्वरूप रूपष्ट करें।

3- काल पुरुष के अंगों को स्पष्ट करें।

4. सभी राशियों का बल निर्णय कर उनपर अपने विचार स्पष्ट करें।

5. ग्रहों का उच्च नीच व मूलत्रिकोणादि स्थान स्पष्ट करें।

## इकाई - 3 ग्रह, भाव एवं कारकत्व विचार

### इकाई की संरचना

## 3.1 प्रस्तावना

करोति इति कारक:। अर्थात् करने वाले को कारक कहते हैं। प्रिय छात्रो! हमने ग्रह, नक्षत्र आदि की प्रकृति का पूर्व पाठों में अच्छे से अध्ययन कर लिया है। उसके बाद ग्रहों का सूक्ष्म फल निर्णय के लिए या जीवन में होने वाले सभी घटनाचक्रों के ज्ञान के लिए ग्रहों एवं भावों के कारकों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। कोई भी अकेला ग्रह जीवन में होने वाले सभी पक्षों का कारक नहीं होता है। ग्रह अपनी प्रकृति के अनुसार किसी वस्तु विशेष या कार्य विशेष का कारक होता है।

हमारे ऋषियों ने सतत् अनुसन्धान व अनुभव के आधार पर पाया कि अमुक ग्रह या भाव इस वस्तु विशेष या घटनाओं पर अपना पूर्णाधिकार रखता है। ये बारह भाव और 9 ग्रह हमारे जीवन के सभी अंगों में अपने स्वभाव के अनुसार बँटे हुए हैं। हमें जातक के जीवन में विवाह का विचार करना है तो सप्तम भाव एवं शुक्र का विचार करना होगा। जातक की शिक्षा की जानकारी के लिए पंचम भाव व गुरु का विचार करना होगा। इसी प्रकार सभी विचारणीय विषयों की सूक्ष्म व स्पष्टजानकारीके लिए हमें ग्रहों एवं भावों के कारकों का विचार करना अत्यावश्यक है। तदर्थ इस पाठ में हम इन्हीं सभी विषयों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगे तो आईए हम इस पाठ का ध्यान से अध्ययन व अभ्यास करते हैं।

## 3.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों हमारे लिए यह पाठ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। सम्पूर्ण फलादेश का आधार है। इसलिए इस पाठ के द्वारा हमें कई विषयों का स्पष्ट ज्ञान हो जाएगा।

1- हम इस पाठ के द्वारा भावों का सम्पूर्ण परिचय व उनकी संज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

2- इस पाठ के अध्ययन से ग्रहों के कारक विषयों का स्पष्ट ज्ञान होगा।

3- पाठ के द्वारा भावों के द्वारा विचारणीय विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

4- कारक ज्ञान में भावों एवं ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध का अधिगम प्राप्त होगा।

5- ग्रह किस स्थिति में कारक होते हैं किन कारणों से अकारक होते हैं इसका विशद अध्ययन इस पाठ के द्वारा हम प्राप्त करेंगे।

## 3.3 मुख्यभाग

आपने ग्रहों का स्वभाव, स्थान आदि अच्छी तरह से समझ लिया। अब हम इस पाठ के द्वारा ग्रहों के कारकों को समझेंगे। कारक से तात्पर्य यह कि ग्रह क्या कर सकता है। ग्रह के गुण धर्म के अनुसार उससे किन-किन विषयों का विचार करना चाहिए। जैसे किसी को जानना है कि मेरी संतान

होगी कि नहीं और कब होगी ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर कैसे निकलेगा आप जातक की कुण्डली याप्रश्न कुण्डली में किस ग्रह का किस भाव का अध्ययन करने पर इस प्रश्न का उत्तर पाएँगे। इसी जिज्ञासा का समधान हमें इस पाठ के द्वारा प्राप्त होगा। तो आइए हम क्रमश: मनोयोग से इसका पठन आरम्भ करते हैं।

**सूर्य से विचारणीय विषय :-**

व्यालोर्णकशैलसुवर्णशस्त्र विषदहनभेषजनृपाश्च।
म्लेच्छाब्धितारकान्तारकाष्टमन्त्रप्रभु: सूर्य:।। [44]

भावार्थ- सूर्य ग्रह- ऊन, पवर्त, सोना, शस्त्र, विष, अग्नि,औषधि, राजा, म्लेच्छ, समुद्र, वन, लकडी, और मन्त्र आदि का कारक है।

**चंद्र से विचारणीय विषय :-**

कविकुसुमभोज्यमणिरजतशंखलवणोदकेषु वस्त्राणाम्।
भूषणनारीघृततैलकनिद्राप्रभुश्चन्द्र:।। [45]

भावार्थ- कविता, पुष्पादि, भोज्य पदार्थ, मणि, चाँदी, शंख, नमक, जल, वस्त्र, आभूषण, स्त्री, घी, तेल और नींद आदि का कारक चंद्र है।

**मंगल से विचारणीय विषय :-**

रक्तोत्पलताम्रसुवर्णरुधिरपारदमन: शिलाद्यानाम्।
क्षितिनृपतिपतनमूर्च्छापैत्तिकचोरप्रभुर्भौम:।।[46]

भावार्थ- लाल कमल, ताम्र, सोना, रक्त, पारा, मैनसिल, भूमि, राजा , पतन, मूर्च्छा, पित्त, और चौर आदि का कारक मंगल है।

**बुध से विचारणीय विषय :-**

---

[44] सारावली 7 7-

[45] सारावली 7 8-

[46] सारावली 79-

श्रुतिलिखितशिल्पवैद्यकनैपुणमन्त्रित्वदूतहास्यानाम्।
खगयुग्मख्यातिवनस्पतिस्वर्णमयप्रभु: सौम्य:।।[47]

भावार्थ- वेद, लेख, कारीगरी, वैद्य, निपुणता, मन्त्री, दूत, मजाक, पक्षी, जुडवा, प्रसिद्धि, वनस्पति, और सोने का कारक बुध है।

**गुरु से विचारणीय विषय :-**

मांगल्यधर्मपौष्टिकमहत्त्वशिक्षानियोगपुरराष्ट्रम्।
यानासनशयनासुवर्णधान्यवेश्मपुत्रपो जीव:।।[48]

भावार्थ- मंगल/धार्मिक कार्य, पुष्टि, महत्ता, शिक्षा, गर्भाधान, नगर,राष्ट्र, सवारी, आसन/ सिंहासन, शयन, सोना, धान्य, घर और पुत्र का कारक गुरु है।

**शुक्र से विचारणीय विषय :-**

वज्रमणिरत्नभूषणविवाहगन्धेष्टमाल्ययुवतीनाम्।
गोमयनिदानविद्यानिधुवनरजतप्रभु:शुक्र:।।[49]

भावार्थ- हीरा, रत्नाभूषण, विवाह, सुगन्धित द्रव्य, माला, युवती, गोबर, कारण व समाधान, विद्या, और चाँदी का कारक शुक्र है।

**शनि से विचारणीय विषय :-**

त्रपुसीसकलोहककुधान्यमृतबन्धुमन्दभृतकानाम्।
नीचस्त्रीपण्यकदासदीनदीक्षाप्रभु: सौरि:।।[50]

भावार्थ- रांगा, सीसा, लोहा, ककु धान्य (कोदव, सांवा आदि), मृतबन्धु, मूर्खता, नौकर, नीच स्त्री, दीन और दीक्षा का कारक शनि है।

**राहु से विचारणीय विषय-**

राहु आकस्मिक घटनाओं का कारक, अधार्मिक मनुष्य, अचानक कार्य के लिए प्रेरित करने वाला, स्नायु, वायुदोष, वन, भ्रम, कुर्तक आदि का कारक कहा गया है।[51]

---

[47] सारावली 710-

[48] सारावली 711-

[49] सारावली 712-

[50] सारावली 713-

[51] उत्तरकालामृत 52-5

केतु से विचारणीय विषय-

केतु डॉक्टर, कुत्ता, मुर्गा, मोक्ष, क्षयरोग, पीडा, ज्वर, गंगास्नान, वायुविकार, पेट में तीव्र पीडा आदि का कारक कहा गया है।[52]

**अभ्यास प्रश्न**

1- संतान कारक ग्रह कौन है?
2- चौर कारक ग्रह कौन है?
3- हास परिहास आदि गुणों का विचार किस ग्रह से किया जाता है?
4- नौकर का सूचक ग्रह कौन है?

### 3.3.1 उपखण्ड एक

हमने ऊपर ग्रहों के कारक/ विचारणीय विषयों को अच्छी तरह से समझ लिया होगा। प्रिय छात्रों अब यहाँ पर ग्रहों के कुछ अन्य कारकत्व आदि का विवरण दिया जा रहा है जैसे-

सूर्य के कारकत्व –

सूर्यादात्मपितृप्रभावनिरुजाशक्तिश्रियश्चिन्तयेत्।[53]

अर्थात् –आत्मा, पिता, प्रभाव, आरोग्यता, शक्ति, लक्ष्मी आदि का कारक सूर्य है।

चंद्र के कारकत्व –

चेतोबुद्धिनृपप्रसादजननीसम्पत्करश्चन्द्रमा:।[54]

अर्थात्- चित्त, बुद्धि, राजा की कृपा,माता, और सम्पत्ति का कारक चंद्र होता है।

मंगल के कारकत्व –

सत्त्वं रोगगुणानुजावनिसुतज्ञातीर्धरासुनूना।।[55]

---

52 उत्तरकालामृत 53-5
53 जातकपारिजात 49-2
54 जातकपारिजात 49-2
55 जातकपारिजात 49-2

अर्थात् – शरीरिक बल व साहस, रोग, गुण, छोटे भाई/बहन, जमीन, जाति के लोगों का कारक मंगल है।

बुध के कारकत्व –

विद्याबन्धुविवेकमातुलसुहृद् त्वक्कर्मकृद्बोधनः।।[56]

अर्थात् – विद्या, परिवार,विवेक, मामा/मौसी, मित्र, त्वचा,कर्म (कार्य कुशलता) , आदि का कारक बुध कहा गया है।

गुरु के कारकत्व –

प्रज्ञावित्तशरीरपुष्टितनयज्ञानानि वागीश्वरात्।।[57]

अर्थात् – प्रज्ञा (बुद्धि), धन, शरीर की पुष्टि, संतान, और ज्ञान का विचार गुरु से करना चाहिए।

शुक्र के कारकत्व –

पत्नीवाहनभूषणानि मदनव्यापारसौख्यं भृगोः।।[58]

अर्थात् – पत्नी, वाहन,आभूषण, कामुकता, व्यापार और सुखादि का विचार शुक्र से करना चाहिए।

शनि के कारकत्व –

आयुर्जीवनमृत्युकारणविपत्सम्पत्प्रदाता शनिः।।[59]

अर्थात् – आयु, जीवन, मृत्यु का कारण, विपत्ति का कारण, सम्पत्ति आदि का कारक शनि है।

राहु और केतु के कारकत्व :-

सर्पेणैव पितामहं तु शिखना मातामहं चिन्तयेत् । [60]

[56] जातकपारिजात 49-2
[57] जातकपारिजात 50-2
[58] जातकपारिजात 50-2
[59] जातकपारिजात 50-2
[60] जातकपारिजात 50-2

अर्थात- राहु से पितामह और केतु से मातामह (नाना) का विचार करना चाहिए। शनिवत् राहु:और कुतवत् केतु: के अनुसार राहु व केतु का विचार करना चाहिए।

**अभ्यास प्रश्न**

5- मृत्यु कारक ग्रह कौन है?
6- नाना का विचार किस ग्रह से करना चाहिए ?
7- पत्नी कार कग्रह का नाम लिखें
8- भूमि कारक ग्रह कौन है ?

### 3.3.2 उपखण्ड दो

आपने ग्रहों के कारक तत्वों का अच्छे से अध्ययन कर लिया। अब हम यहाँ पर ग्रहों के चर व स्थिर कारकों का विचार करेंगे। वस्तुत: स्थिर से तात्पर्य यह है कि कुण्डली में उस विचारणीय विषय विशेष का विचार करने के लिए स्थिर कारक का भी उतना विचार करना चाहिए जितना कि उस भाव के स्वामी आदि का। जैसे शुक्र स्त्री का कारक है तो कुण्डली में सप्तम भाव और उसके स्वामी के अध्ययन के साथ- साथ शुक्र का विचार करना परमावश्यक होता है। ठीक उसी प्रकार कुण्डली में ग्रहों के अंशकलादि के अनुसार चर कारक निश्चित हो जाते हैं। इन्हीं सभी विषयों का विशद अध्ययन इस खण्ड में किया जाएगा।

**स्थिर कारक**- हमने उपर्युक्त खण्ड में जिन विषयों को समझा है वे सभी कारक विषय ग्रहों के स्थिर कारक हैं। महर्षि जैमिन ने अपने जैमिनि सूत्र ग्रन्थ में कुछ कारक विशेष कहें हैं उनको भी यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा हैं।

**जैमिनि मतानुसार ग्रहों के कारकत्व –**

भगिन्यारत: श्याल: कनीयाञ्जननी चेति[61]

अर्थात्- मंगल से बहन, पत्नी के भाई, अपना भाई व माता का विचार किया जाता है।

विशेष- यहाँ अन्य विषय तो हमने पूर्व में पढें ही हैं माता का विचार मंगल से करने के लिए केवल जैमिनि का मत है पराशर ने चंद्रमा से माता का विचार कहा है।

मातुलादयो बन्धवो मातृसजातीया इत्युत्तरत:।[62]

---

[61] जैमिनि सूत्र 20-1

[62] जैमिनि सूत्र 21-1

अर्थात्- बुध से मामा, मामी, अन्य पारिवारिक जनों का विचार करना चाहिए।

पितामहः पतिपुत्राविति गुरुमुखादेव जानीयात्।[63]

अर्थात्-गुरु से शनि तक तीनों ग्रहों से क्रमशः दादा, दादी, पति/पुत्र का विचार करना चाहिए। जैसे गुरु से पितामह, शुक्र से पितामही और शनि से पुत्रादि का ज्ञान करें।

पराशर जी के अनुसार स्थिर कारक

बलवानर्कसितयोः स वेद्यः पितृकारकः।
ग्रहो बलीन्दुकुजयोः कथ्यते मातृकारकः।
कुजात् स्वसाऽसि च श्यालोऽनुजो माताऽपि चिन्तयते।
बुधतो मातृजातीया विज्ञेया मातुलादयः।
जीवात् पितामहः, स्वामी सितत:, शनितः सुतः।
केतुतः स्त्री पिता माता श्वश्रूः श्वसुर एव च ।
मातामहप्रभृतयो विचार्याः स्थिरकारकैः।। [64]

अर्थात् - चक्र के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

| क्रम | ग्रह | कारक |
|---|---|---|
| 1 | सूर्य और शुक्र में बलवान् ग्रह | पितृकारक |
| 2 | चन्द्र और मंगल में बलवान् ग्रह | मातृकारक |
| 3 | मंगल | बहन, छोटा भाई, पत्नी का भाई और माता |
| 4 | बुध | मामा, मौसी आदि |
| 5 | गुरु | पितामह |
| 6 | शुक्र | स्वामी |
| 7 | शनि | पुत्र |
| 8 | केतु | स्त्री, पिता, |

चर कारक- ये चर कारक ग्रहों के जन्मकालीन अंशकला आदि के अनुसार निश्चित किए जाते हैं।

| क्रम | स्थिति | चर कारक |
|---|---|---|
| 1 | सर्वाधिक अंशों वाला ग्रह | आत्म कारक |

[63] जैमिनि सूत्र 22-1

[64] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्रम् 21-19 कश्लो 33

| | | |
|---|---|---|
| 2 | उससे कम | अमात्य |
| 3 | उससे कम | भ्रातृ |
| 4 | उससे कम | मातृ |
| 5 | उससे कम | पुत्र |
| 6 | उससे कम | ज्ञाति |
| 7 | उससे कम | स्त्री |

विशेष- जब दो ग्रहों के अंश समान हों तब कलाधिक वाले ग्रह को ग्रहण करें जैसे सूर्य स्पष्ट 3-10-22.55 है और शुक्र भी 5 -10-23- 50 विकलादि पर है। यहाँ सूर्य और शुक्र के अंश समान है परन्तु शुक्र की कला अधिक है इसलिए कारक क्रम में पहले शुक्र की गणना होगी उसके बाद सूर्य की गणना की जाएगी।

अभ्यास प्रश्न-

9- पत्नी के भाई का कारक ग्रह कौन है?

10-चंद्र और मंगल में बलवान् ग्रह किसका कारक होते हैं?

11-जैमिनि ने पितामह कारक किसे कहा है?

12- आत्मकारक ग्रह कौन होता है?

3.4 मुख्यभाग खण्ड दो (भाव परिचय)

भावयति चिन्तयति पदार्थान् अर्थात् जिससे विषयों का, पदार्थों का चिन्तन किया जाता है। ज्योतिष में भाव से तात्पर्य 12 भावों से है जिनमें ग्रहों का फल विचार किया जाता है। हमने पूर्व अध्याय में राशियों को 12 भावों में काल पुरुष की कुण्डली के रूप में देखा था। वस्तुत: हर भाव के अन्दर वही कुण्डली निहित है। अब प्रश्न यह है कि इन 12 भावों का ज्ञान कैसे होता है आप यह भी सोच रहे होंगे कि क्या सभी के लिए ये 12 भाव एक जैसे होते हैं तो आइए समझते हैं इस विषय को।

सूर्य ही हमारी गणनाका अधार है। वह सूर्य प्रतिदिन हमें पूर्व में उदय होते हुए और पश्चिम में अस्त होते हुए दिखाई देता है। इसका कारण भी आप जानते हैं कि सूर्य हमेशा क्रान्ति वृत्त में भ्रमण

करता हुआ हमारे क्षितिज के ऊपर आ जाता है तब हमें वह दिखाई देता है। क्षितिज के नीचे जाने के कारण हमे दिखाई नहीं पडता जिसके कारण वह हम उसे अस्त कहने लगते इसी प्रकार क्रान्ति वृत्त का जो भाग क्षितिज के पूर्व में लगता है उसे ही लग्न कहते है। जो भाग पश्चिम में लगता है उसे अस्त अर्थात् सप्तम भाव कहते हैं। जैसे-

क्रान्तिवृत्तस्य यो भागो लग्न: प्राक् क्षितिजे भवेत्।
तत्प्रथमं लग्नं ज्ञेयं,सप्तमञ्चापरे कुजे।
अधोयाम्योत्तरे लग्नो भागो यस्तच्चतुर्थकम्।
दशमञ्चात्र विज्ञेयमूर्ध्वभागे सदा बुधै:।।[65]

इसी प्रकार क्रान्तिवृत्त का जो भाग याम्योत्तरवृत्त में नीचे वाले भाग में लगता है उसे चतुर्थ भाव और ऊपर वाले भाग को दशम भाव कहते हैं। इसे हम चित्र के रूप में स्पष्ट करते हैं।
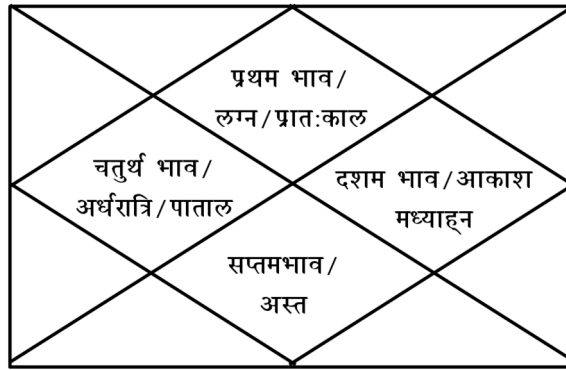
प्रिय छात्रों जातक का जब जन्म होता है।उस समय सूर्य उदय काल से जितना दूर होता है उसी का ज्ञान करना ही लग्न है। इसी तरह राशियों का उदय काल भी कहा जाता है। उस जन्म/इष्टकाल से 360 अंशों तक 12 भाव रहते हैं। इन्हीं 12 भावों से अलग-अलग विषयों का विचार किया जाता है। इन 12 भावों से जिन विषयों का विचार किया जाता है उसी के अनुसार इनका नाम भी निश्चित किया गया है। जैसे लग्न से शरीर/तन का विचार किया जाता है इसलिए इसका नाम तनु कर दिया ऐसे ही सभी भावों को समझना चाहिए।

**द्वादश भावों के नाम-**

तन्वर्थ सहजबान्धवपुत्रारि-स्त्री विनाशपुण्यानि।

[65] गोल परिभाषा, डॉहंसधर झा.,87-86

कर्मायव्ययभावा लग्नाद्या भावतश्चिन्त्या ।। [66]

अर्थात्- तनु, अर्थ, सहज, बन्धु, पुत्र, अरि, स्त्री, विनाश, पुण्य, कर्म, आय, व्यय ये 12 भावों के नाम है।

विशेष- इन भावों के नाम के अनुसार ही इन भावों से तद्त् विषयों का विचार किया जाता है। जैसे लग्न का नाम शरीर है जो शरीर का विचार लग्न से, द्वितीय का नाम धन है तो धन सम्बन्धी विचार इसी भाव से किया जाएगा।

भावों के अन्य नाम-

शक्तिधनपौरुषगृहप्रतिभाव्रण कामदेहविवराणि।
गुरुमानभव्ययमिति कथितान्यपराणि नामानि। । [67]

अर्थात्- शक्ति, धन, पौरुष/ विक्रम, घर, प्रतिभा, व्रण/घाव, काम/इच्छा, छिद्र, गुरु, मान, भव, व्यय ये अन्य 12 नाम कहे गए हैं। इनको भी उपर्युक्तानुसार समझना चाहिए।

अन्य संज्ञाएँ-

लग्नात् चतुर्थनिधने चतुरस्रसंज्ञे।
द्यूनं च सप्तमगृहं दशमर्क्षमाज्ञा। । [68]

अर्थात्- लग्न से चतुर्थ और निधन (अष्टम) को चतुरस्र , सप्तम को द्यून और दशम भाव को आज्ञा कहते हैं।

केन्द्रादि संज्ञाएँ-

कण्टककेन्द्र चतुष्टयसंज्ञा: सप्तमलग्नचतुर्थखभानाम् ।
तेषु यथाभिहितेषु बलाढ्या: कीटनराम्बुचरा: पशवश्च।। [69]

---

[66] सारावली 26-3
[67] सारावली 27-3
[68] बृहज्जातकम् 16 -1
[69] बृहज्जातकम् 17 -1

अर्थात्- 1,4,7,10 भावों को केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय आदि नाम कहे गए हैं। इन केन्द्रों में क्रमश: (श्लोकानुसार) सप्तम में कीट, लग्न में नर, चतुर्थ में जलचर और दशम में पशु संज्ञक राशियाँ बलवान् होती हैं।

केन्द्रात्परं पणफरं परतश्च सर्वम्
आपोक्लिमं हिबुकमम्बुसुखं च वेश्म।
जामित्रमस्तभवनं सुतभं त्रिकोणम्।
मेषूरणं दशमत्र च कर्म विद्यात्।।[70]

अर्थात् - केन्द्र के बाद वाले भाव पणफर (2,5,8,11) और उसके बाद के भाव आपोक्लिम (3,6,9,12) कहलाते हैं।

॥ भाव संज्ञा बोधक चक्र॥
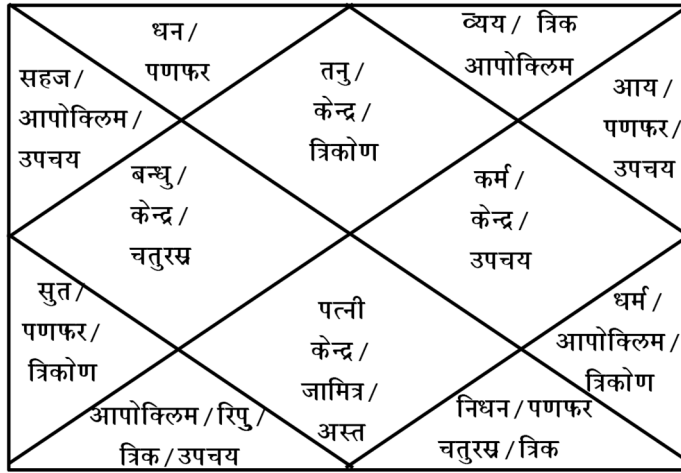
मारक भाव –

अष्टमं ह्यायुषस्थानं अष्टमादष्टमं च यत्।
तयोरपि व्ययस्थानं मारकस्थानमुच्यते।[71]

भावार्थ- अष्टम भाव को आयु का स्थान कहा गया है, और उसका आठवां (तीसरा भाव) उस आयु का नष्ट होना है। और इन दोनों का 12 वाँ (2 भाव, 7 भाव)मारक स्थान कहे गए हैं।

---

[70] बृहज्जातकम् 18 -1

[71] लघुपराशरी 1-4

**अभ्यास प्रश्न -**

13- कण्टक किसे कहते हैं ?

14- आज्ञा किस भाव की संज्ञा है?

15- आपोक्लिम किन भावों की संज्ञा है ?

16- किन भावों को त्रिक कहते हैं ?

### 3.4.1 **उपखण्ड एक**

प्रिय सुधी जनों अब हमने भावों की संज्ञा का ज्ञान प्राप्त कर लिया है तब भी ग्रहों के फलों का हम अध्ययन करेंगे, तब-तब हमें इन भावसंज्ञाओं की आवश्यकता रहेगी। अब इस खण्ड में हम भावों से विचारणीय विषय या कारकों का अध्ययन करेंगे।

## **द्वादशभाव से विचारणीय विषय**

प्रथम भाव

तुनं रूपं च ज्ञानं वर्णं चैव बलाऽबलम्।
प्रकृतिं सुख-दु:खं च तनुभावाद् विचिन्तयेत्।। [72]

भावार्थ- शरीर,स्वरूप, ज्ञान, सिर,रंग, बलवत्ता, निर्बलता, स्वभाव, सुख-दु:ख आदि विषयों की जानकारी प्रथम भाव से करना चाहिए।

द्वितीय भाव

कुटुम्बं च धनं-धान्यं मृत्युजालममित्रकम् ।
धातुरत्नादिकं सर्वं धनस्थानात् निरीक्षयेत्।।

भावार्थ- परिवार,पैसा, अनाज, मृत्यु, शत्रु, धातु,रत्नाभूषण आदि का विचार द्वितीय भाव से करना चाहिए।

विशेष – नेत्र, मुख,गला, वाणी,ज्ञान, विद्या, भोजनादि भी इसी भाव के कारक हैं।

तृतीय भाव

विक्रमं भृत्य- भ्रात्रादि चोपदेश-प्रयाणकम्।

[72] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्रम् 2-12

पित्रोर्वै मरणं विद्वान् दुश्चिक्यात् च निरीक्षयेत्।।

भावार्थ- साहस, नौकर, भाई-बहन, उपदेश, यात्रा, माता पिता की मृत्यु ये तृतीय भाव के कारकत्व हैं।

विशेष – कान, कण्ठनली, श्रवणशक्ति, पराक्रम, हिम्मत, हाथ आदि का भी विचार तृतीय भाव से होता है।

चतुर्थ भाव

बान्धवानथ यानानि मातृसौख्यादिकान्यपि।
निधिक्षेत्र- गृहारामादिकं तुर्याद् विचारयेत्।। [73]

भावार्थ- परिवार, मित्र, वाहन, माता, सुख, सम्पत्ति,खेत/जमीन, घर, वाटिका आदि चतुर्थ भाव के कारक हैं।

विशेष – हृदय, जलाशय,जल स्थान, घर/बँगला, माता का सुख-दु:ख, वाहनादि का विचार यहीं से होता है।

पंचम भाव

यन्त्रं मन्त्रं तथा विद्यां बुद्धेश्चैव प्रबन्धकम्।
पुत्रराज्यापभ्रशादीन् पश्येत् पुत्रालयाद् बुध:।।

भावार्थ- यन्त्र, मन्त्र, विद्या, बुद्धि, प्रबन्धन/ व्यवस्थापन, संतान, राज्यपतन आदि पंचम भाव के कारक हैं।

विशेष – पेट, साधना, कला-कौशल, गर्भ की स्थिति, दूर देश की चिन्ता, वार्तालेखन का भी विचार इसी भाव से किया जाता है।

षष्ठ भाव

वैरी रुजेर्म्मधुरादिषडौपदंशा: चिन्ता व्यथा भयकटी पशुमातुलौ च।
नाभि: क्षतं व्यसनतस्कर विघ्नशंका साप्त्नमातृसमराक्षि रुजोऽरिभावात्।।

[73] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्रम् 5-12

भावार्थ- शत्रु, कर्ज, रोग, घाव, मधुरादि 6रस, चिन्ता, व्यथा, भय, कमर, पशु, मामा, नाभि, अंग-भंग, विपत्ति, चोर, विघ्न,शंका, सौतेली माता, युद्ध, और आँखों की बीमारी आदि का कारक षष्ठ भाव है।

सप्तम भाव

जायामध्वप्रयाणं च पदाप्तिं च वणिक् क्रियाम्।
मरणं च स्वदेहस्य जायाभावात् निरीक्षयेत्।।

भावार्थ- पत्नी, यात्रा, पद, व्यापार, मृत्यु, आदि का विचार सप्तम भाव से किया जाता है।

विशेष – कामशक्ति, विवाह, वाद-विवाद, दादा, पति/पत्नी आदि का भी विचार इसी भाव से किया जाता है।

अष्टम भाव

आयुर्मत्युपरं चापि गुदे चैवांकुरादिकम्।
पूर्वापरं जनुर्वृत्तं सर्वं रन्ध्रात् विचिन्तयेत्।।

भावार्थ- आयु,मृत्यु, गुदा, बवासीर, पूर्वजन्म आदि का अष्टम भाव कारक होता है।

विशेष – गुप्तवार्ता,गुप्तधन, गुप्तांग, दुर्घटना, कठिनाईयाँ, समुद्रयात्रा आदि का विचार इसी भाव से किया जाता है।

नवम भाव

धर्मं भाग्यमथे श्यालं भ्रातृ-पत्न्यादिकांस्तथा।
तीर्थयात्रादिकं सर्वं धर्मस्थानात् निरीक्ष्येत्।।

भावार्थ- नवम भाव से धर्म, भाग्य, साला, भाई की पत्नी,तीर्थ, यात्रा, आदि का विचार किया जाता है।

विशेष – साधना, गुरु, दीक्षा, पिता, यज्ञ, भाग्य, भाग्योदय मन्दिर, ऊरु, परोपकार आदि का विचार इसी भाव से किया जाता है।

दशम भाव

राज्यं चाकाशवृत्तिं च गानं च पितरं तथा।
ऋणं चापि प्रवासं च व्योमस्थानात् निरीक्षयेत्।।

भावार्थ- राज्य, आकाश, कर्म,गानकौशल,पिता, कर्ज, प्रवास, बाहर की यात्रा, ऊँचे स्थान का विचार दशम स्थान से करते हैं।

विशेष – मान-सम्मान, अभिमान, कृषि, आजीविका, राजा का आसन, खानदान, शिल्पविद्या, व्यापार आदि का विचार इसी भाव से किया जाता है।

एकादश भाव

नानावस्तुभवस्यापि पुत्रजायादिकस्य च ।
आयं सुसमृद्धिं च भवस्थानात् निरीक्षयेत्।।

भावार्थ- विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ, पुत्र की पत्नी, आय, समृद्धि आदि का कारक एकादश भाव है। विशेष – कान, हाथ, आमदनी का जरिया, अपनी दोनो पिंडली, पैर, सन्तानहीनता, बडे वाहन, बाँया कान आदि का विचार इसी भाव से किया जाता है।

द्वादश भाव

व्ययं च वैरि वृत्तान्तं रिष्कमन्त्यादिकं तथा।
व्ययाच्चैव हि जानीयात् इति सर्वत्र बुद्धिमान्।। [74]

भावार्थ- व्यय, शत्रु का वृत्तान्त, हानि, मृत्यु , सम्पत्ति का नाश, शुभाशुभ, धन का विनियोग, कर्ज, पैदल यात्राएँ, विकलांगता,दण्ड, शरीर का विकार, ऊँचे स्थान से गिरना, स्त्री सुख,शय्या सुख आदि का विचार बारहवें भाव से करते हैं।

**अभ्यास प्रश्न -**

17-विवाह के लिए किस भाव का अध्ययन करना चाहिए?

18-रोगकारक भाव कौन सा है?

19-आय साधन का भाव कौन हैं ?

20- हृदयसूचक भाव है ?

### 3.4.2 उपखण्ड दो

प्रिय छात्रों आपने ग्रहों और भावों के कारकों का अध्ययन कर लिया है। अब इस क्रम में हम कुछ विशेष कारकों का अध्ययन करेंगे।

द्वादश भावों के कारक ग्रह

सूर्यो गुरु: कुज: सोमो गुरुर्भौम: सित: शनि:।
गुरुश्चन्द्रसुतो जीवो मन्दश्च भावकारका:।। [75]

[74] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्रम् 13-12

भावार्थ- परशर मतानुसार सूर्य, गुरु, मंगल, चंद्र, गुरु, मंगल, शुक्र, शनि, गुरु, बुध, गुरु और शनि ये 12 भावों के कारक कहे गए हैं।

वैद्यनाथ मत से –

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुत: सोमसौम्यौ गुरुरिनतनयारौ भार्गवौ भानुपुत्र:।
दिनकरदिविजेज्यौ जीवभानुज्ञमन्दा: सुरगुरुरिनसूनु: कारका: स्युर्विलग्नात्॥[76]

भावार्थ-

| क्रम | भाव | कारक |
|---|---|---|
| 1. | प्रथम | सूर्य |
| 2. | द्वितीय | गुरु |
| 3. | तृतीय | मंगल |
| 4. | चतुर्थ | चंद्र, बुध |
| 5. | पंचम | गुरु |
| 6. | षष्ठ | मंगल, शनि |
| 7. | सप्तम | शुक्र |
| 8. | अष्टम | शनि |
| 9. | नवम | सूर्य, गुरु |
| 10. | दशम | सूर्य, बुध, गुरु,शनि |
| 11. | एकादश | गुरु |
| 12. | द्वादश | शनि |

**विशेष कारक ग्रह**

स्वर्क्षत्रिकोणतुंगस्था यदि केन्द्रेषु संस्थिता:।
अन्योन्यं कारकास्ते स्यु: केन्द्रेष्वेव हरेर्मतम् ॥ [77]
रवितनयो जूकस्थ: कुलीरलग्ने बृहस्पतिहिमांशु।
मेषे कुजा रवियुत: परस्परं कारका एते॥ [78]

---

[75] बृहत्पाराशरहोरा शास्त्रम् 34-33

[76] जातकपारिजात 51-2

[77] सारावली 1-6

[78] सारावली 2-6

अर्थात् - जन्मकाल में यदि ग्रह अपनी राशि व मूलत्रिकोण राशि में या अपनी उच्च राशि में स्थित होकर केन्द्र में हों तो वे परस्पर कारक होते हैं। कर्क लग्न में गुरु व चंद्रमा, शनि तुला में, मेष में भौम व सूर्य होने से ये परस्पर कारक होते हैं।

तुंगसुहृत्स्वगृहांशे स्थिता ग्रहा: कारका: समाख्याता:।
मेषूरणे च रविरिति विशेषतो वक्ति चाणक्य:।। [79]

अर्थात् - ग्रह किसी भाव में उच्चस्थ हो, मित्रराशि में हो, अपने नवांश हो तो वह कारक होता है। दशम भाव में सूर्य मेष राशि में होने पर विशेष कारक होता है।।

लग्नस्था: सुखसंस्था दशमस्थाश्चापि कारका: सर्वे।
एकादशेऽपि केचिद्वांच्छन्ति न तन्मतं मुनीन्द्राणाम् ।। [80]

अर्थात् – उच्चादि के बिना भी लग्न में , चतुर्थ में, दशम में स्थित ग्रह भी कारक होते हैं। कुछ विद्वान् 11 वें भाव में स्थित ग्रह को भी कारक कहते हैं।

**भावों के शुभाशुभ फल ज्ञान विधि-**

यो यो भाव: स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात् तस्य तस्यास्ति वृद्धि:।
पापैरेवं तस्य भावस्य हानि: निर्देष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा।।[81]

अर्थात् – जो भाव अपनेस्वामी से युत हो या दृष्ट हो, अथवा किसी शुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो उस भाव की वृद्धि होती है। यदि ऐसे ही किसी पापग्रह का प्रभाव किसी भाव को प्रभावित करे तो उस भाव के फल की हानि होती है।

**अभ्यास प्रश्न**

21-शनि किस लग्न में कारक होता है?

22-अष्टम भाव का कारक ग्रह कौन है?

23-मेष लग्न के कारक ग्रह कौन हैं ?

24- उच्चराशिस्थ ग्रह कहाँ पर कारक होते है ?

---

[79] सारावली 3-6

[80] सारावली 4-6

[81] षट्पंचाशिका 5

## 3.5 सारांश

आपने इस पाठ के माध्यम से ग्रहों के कारकत्व एवं भावों के कारकत्व का समग्ररूप से अध्ययन किया है। ज्योतिष के फल निर्णय करने के लिए कारकों का ज्ञान होना अत्यावश्यक है। जब हम किसी भी विषय विशेष को जानने के लिए हमें ग्रहों के कारक के साथ भावों के कारकों का अध्ययन करना चाहिए। सूर्य पिता का कारक, चंद्र माता का,मंगल भाई व बहनका, बुध मामा,मौसी आदि का, गुरु संतान का, शुक्र स्त्री का और शनि नौकर आदि का कारक होते हैं। इसी क्रम में लग्न से शारीरिक वर्णाकृति का ज्ञान, द्वितीय भाव धन संचय का भाव है। तृतीय भाव भाई बहन के साथ पराक्रम आदि का सूचक, चतुर्थ भाव वाहन,घर, जल आदि का सूचक एवं पचंमभाव शिक्षा, बुद्धि व संतान का सूचक है। षष्ठभाव से हमें जीवन में होने वाले रोगों का ज्ञान होता है। सप्तम भाव विवाह का कारक पति व पत्नी का सूचक होता है। इसके साथ ही द्वितीय व सप्तम मारक भाव भी कहे गए हैं। अष्टम भाव से हमें मृत्यु की जानकारी के साथ गुप्त धन आदि का भी ज्ञान प्राप्त होता है। नमव भाव हमें यज्ञ, धर्म,पिता का सूचक है। दशम कर्म एवं राज्य का कारक, एकादश भाव आय एवं 12 वाँ भाव व्यय का कारक है। इसी क्रम में हमने केन्द्र त्रिकोण आदि का ज्ञान प्राप्त किया है। 12 भावों के कारक ग्रह भी ग्रहों का फल जानने में आवश्यक हैं। जैसे किसी के संतान का ज्ञान प्राप्त करना है तो कुण्डली में पंचम भाव, पंचमेश एवं गुरु का विचार करना चाहिए। इसकेसाथ ही जिस भाव को उसका स्वामी या शुभ ग्रह देखता हो या वहाँ पर बैठे हों उस भाव के फल में वृद्धि होतीहै। पापग्रहों के होनेपर हानि होती है। वस्तुत: यह पाठ ग्रहों का फल ज्ञान करने के लिए महत्त्वपूर्ण है अत: इस पाठ का बारम्बार अभ्यास करना चाहिए।

## 3.6 शब्दावली

क्रान्ति वृत्त- सूर्य के भ्रमण मार्ग को क्रान्ति वृत्त कहते हैं। कदम्ब वृत्त से 90 अंश से बना हुआ वृत्त।

क्षितिज वृत्त- खमध्य से 90 अंशों पर बना हुआ वृत्त।

केन्द्र– 1,4,7,10 भावों को केन्द्र कहते हैं।

त्रिकोण- 1,5,9 भावों का नाम त्रिकोण है।

त्रिक-6,8,12 भावों को त्रिक कहते हैं।

मारक भाव- 2,7 भाव

पणफर- 2,5,8,11 भाव

आपोक्लिम- 3,6,9,12 भाव

जूकस्थान-तुला

कुलीर- कर्क राशि

मेषूरण-दशम भाव

तुंग-उच्च

सुहृत् –मित्र

रुज् – रोग

प्रयाण-यात्रा

द्यून-सप्तम भाव

स्वर्क्ष- स्वगृही

द्युमणि:- सूर्य

## 3.7अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

| क्रम | प्रश्न | उत्तर |
|---|---|---|
| 1. | संतान कारक ग्रह कौन है? | गुरु |
| 2. | चौर कारक ग्रह कौन है? | मंगल |
| 3. | हास परिहास आदि गुणों का विचार किस ग्रह से किया जाता है? | बुध |
| 4. | नौकर का सूचक ग्रह कौन है? | शनि |
| 5. | मृत्यु कारक ग्रह कौन है? | शनि |
| 6. | नाना का विचार किस ग्रह से करना चाहिए ? | केतु |
| 7. | पत्नी  कारकग्रह का नाम लिखें | शुक्र |
| 8. | भूमि कारक ग्रह कौन है | मंगल |
| 9. | पत्नी के भाई का कारक ग्रह कौन है? | मंगल |
| 10 | चंद्र और मंगल में बलवान् ग्रह किसका कारक होते हैं? | मातृ कारक |
| 11 | जैमिनि ने पितामह कारक किसे कहा है? | गुरु को |
| 12 | आत्मकारक ग्रह कौन होता है? | सबसे अधिक अंशो वाला ग्रह |

| | | |
|---|---|---|
| 13 | कण्टक किसे कहते हैं ? | केन्द्र को 1,4,7,10 |
| 14 | आज्ञा किस भाव की संज्ञा है? | 10 भाव |
| 15 | आपोक्लिम किन भावों की संज्ञा है ? | 3,6,9,12 |
| 16 | किन भावों को त्रिक कहते हैं ? | 6,8,12 |
| 17 | विवाह के लिए किस भाव का अध्ययन करना चाहिए? | सप्तम भाव |
| 18 | रोगकारक भाव कौन सा है? | षष्ठ भाव |
| 19 | आय साधन का भाव कौन हैं ? | एकादश |
| 20 | हृदयसूचक भाव है ? | चतुर्थ |
| 21 | शनि किस लग्न में कारक होता है? | तुला |
| 22 | अष्टम भाव का कारक ग्रह कौन है? | शनि |
| 23 | मेष लग्न के कारक ग्रह कौन हैं ? | मंगल व सूर्य |
| 24 | उच्चराशिस्थ ग्रह कहाँ पर कारक होते है ? | केन्द्र में |

## 3.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सारावली –कल्याणवर्मा – व्याख्याकार-डॉ.मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
2. जातकपारिजात- वैद्यनाथ - व्याख्याकार-गोपेश ओझा, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
3. भावमंजरी- पं. मुकुन्द दैवज्ञ- व्याख्याकार-डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
4. जैमिनि सूत्र-जैमिन- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी
6. लघुपाराशरी- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
7. बृहज्जातकम् –बाराहमिहिर- व्याख्याकार- केदार दत्त, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
8. उत्तरकालामृत- कालिदास- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
9. गोल परिभाषा, डॉ.हंसधर झा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय

## 3.9 सहायक/ उपयोगी पाठ्यसामग्री


1. सारावली –कल्याणवर्मा – व्याख्याकार-डॉ.मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
2. जातकपारिजात- वैद्यनाथ - व्याख्याकार-गोपेश ओझा, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
3. भावमंजरी- पं. मुकुन्द दैवज्ञ- व्याख्याकार-डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
4. जैमिनि सूत्र-जैमिन- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी
6. लघुपाराशरी- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
7. बृहज्जातकम् –बाराहमिहिर- व्याख्याकार- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
8. उत्तरकालामृत- कालिदास- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।


## 3.10 निबंधात्मक प्रश्न

1- सप्तम भाव के कारकों की सूची बनाएँ।

2- गुरु के कारको विषयों का विवरण लिखें।

3- द्वादश भावों के कारकों के नाम लिखें।

4- आत्मादिकारकों का विवरण प्रस्तुत करें।

5- भावों की संज्ञा चक्र प्रस्तुत करें।

# इकाई - 4 ग्रहदृष्टि एवं ग्रहमैत्री विचार

## इकाई की संरचना

## 4.1 प्रस्तावना

आपका इस पाठ में स्वागत है। आपने बडे मनोयोग से पूर्व पाठों का अभ्यास किया है। उसी क्रम में हम इस पाठ में ग्रहों की दृष्टि और ग्रहों के मित्र शत्रु आदि का अध्ययन करने जा रहे हैं। आप सोच रहे होंगे कि इनका क्या प्रयोजन है ? वस्तुत: ग्रहों के फल निर्णय के लिए कई चरणों को ध्यान में रखा जाता है। पूर्व इकाई में पठित ग्रहों व भावों के कारक ग्रहों की स्थिति के अनुसार फली भूत होते हैं। ग्रह का प्रभाव उसक स्थान के साथ-साथ उसकी दृष्टि वाले स्थान पर भी रहता है।
सभी ग्रहों की प्रकृति अलग है कारकत्व अलग है अत: उनका प्रभाव भी अलग होगा। उनके स्वभाव व गुण धर्म के अनुसार उनकी अन्य ग्रहों के साथ मित्रता व शत्रुता निश्चितहोती है। इसके लिए महर्षियों ने अपने दिव्यज्ञानानुभव के द्वारा ग्रहों की दृष्टि एवं मित्रता शत्रुता का जो स्वरूप प्रदान किया है उसी का सोदाहरण हम यहाँ अभ्यास करते हुए ज्ञान प्राप्त करेंगे।

## 4.2 उद्देश्य

ग्रहों की दृष्टि व उनकी मित्रता शत्रुता का ज्ञान फलादेश का एक स्तम्भ सदृश है अत: उसके ज्ञान के बिना फल सोचना भी असम्भव है अत: इस पाठ के द्वारा हम निम्न उद्देश्यों को पूर्ण करेंगे।

- इस पाठ के माध्यम से हमें ग्रहों की दृष्टि स्थान का ज्ञान होगा।
- ग्रहों की दृष्टि भेद का ज्ञान होगा।
- राशियों दृष्टि स्थान का अधिगम होगा।
- ग्रहों के नैसर्गिक मित्र व शत्रुओं का ज्ञान होगा।
- ग्रहों के तात्कालिक मित्र व शत्रुओं का ज्ञान होगा।
- पंचधा मैत्री के भेद का ज्ञान होगा।

## 4.3 मुख्यभाग

ग्रहों की अपनी अपनी स्वतंत्र दृष्टि है। ग्रह कुण्डली में जिस स्थिति पर होगा उस शुभाशुभ आदि प्रभाव को अपने द्वारा देखे जाने वाले स्थान को भी देगा, उस भाव या उस भाव में बैठे हुए ग्रह को भी प्रभावित करेगा। महर्षियों ने ग्रहों की दृष्टि को मुख्यत: 4 भागों में बाँटा है। जिसे हम एकपाद,द्विपाद, त्रिपादव पूर्ण दृष्टि के नाम से जानते हैं। तो आईए इस दृष्टि स्वरूप को हम समझते हैं।

पादेक्षणं भवति सोदरमानराशयो: अर्धं त्रिकोणयुगलेऽखिलखेचराणाम्।

पादोन दृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे सम्पूर्णदृग्बलमनङ्गगृहे वदन्ति।।। [82]

अर्थात् – तीसरे और दसवें स्थान पर ग्रह की एकपाद दृष्टि होती है।

त्रिकोण (5,9) स्थान में ग्रह की आधी दृष्टि होती है।

चतुर्थ और अष्टम में ग्रह की त्रिपाद दृष्टि होती है।

ग्रह से सातवें स्थान में उसकी पूर्ण दृष्टि होती है।

विशेष-ग्रहों की दृष्टि के लिए प्रत्येक ग्रह के स्थान से निर्णय लिया जाताहै। जो ग्रह जिस स्थान पर बैठेगा उस स्थान से 3,10 को एकपाद, 5,9 को अर्ध दृष्टि से, 4,8 को त्रिपाद दृष्टि से और सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

दृष्टिविशेष-

शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे, सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभ:स्यात्।
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमार: समर्थ:, सकलगगनवासा: सप्तमे दृग्बलाढ्या:।।[83]

अर्थात् – शनि बहुत बलवान होने के कारण केवल एकपाद से ही अपना पूर्ण प्रभाव देता है। अत: उसकी सप्तम के अलावा 3,10 वीं दृष्टि भी पूर्ण दृष्टि होती है। गुरु त्रिकोण में बलवान होने के कारण उसकी सप्तम के अलावा पंचम और नवम में भी पूर्ण दृष्टि होती है। इसी प्रकार मंगल की सप्तम के अलावा 4,8वीं दृष्टि भी पूर्ण दृष्टि होती है। अब इसको हम चक्र के अनुसार समझते हैं।

दृष्टि बोधक चक्र

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एकपाद | 3,10 | 3,10 | 3,10 | 3,10 | 3,10 | 3,10 | ---- |
| अर्ध | 5,9 | 5,9 | 5,9 | 5,9 | ---- | 5,9 | 5,9 |
| त्रिपाद | 4,8 | 4,8 | ---- | 4,8 | 4,8 | 4,8 | 4,8 |
| पूर्ण दृष्टि | सप्तम | सप्तम | 4,7, 8 | सप्तम | 5,7, 9 | सप्तम | 3,7, 10, |

उदाहरण- अब हम एक कुण्डली में उदाहरण के द्वारा ग्रह दृष्टि को समझते हैं।

[82] जातकपारिजात 30-2

[83] जातकपारिजात 31-2
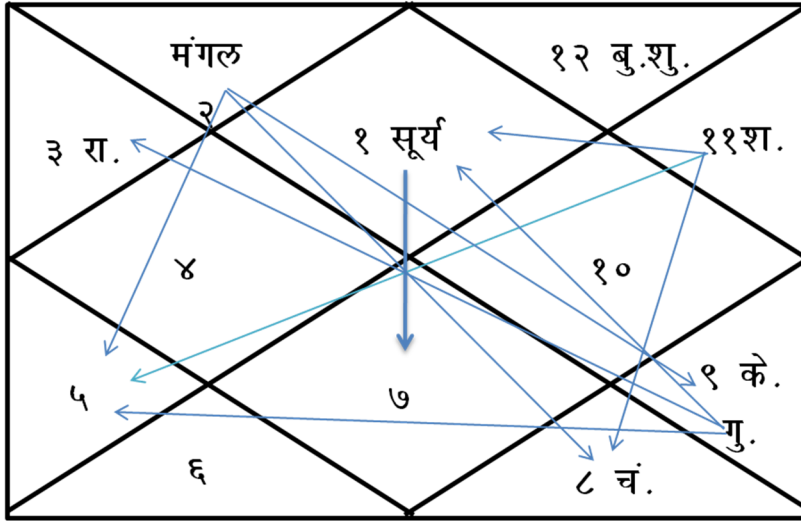
इस कुण्डली में आप देखें कि सूर्य की अपने से सातवें स्थान पर दृष्टि है। सूर्य उच्च होकर लग्नस्थ है अत: उच्चस्थ सूर्य सप्तम को देख रहा है ऐसा कहा जाएगा। गुरु नवम स्थान पर है उसकी अपने स्थान से 5 वीं लग्न पर, 7 वीं तृतीय भाव पर और 9वीं पंचम भावपर दृष्टि पड रही है। शनि एकादशभाव में है उसकी 3री लग्न पर, सातवीं पंचम भाव पर और दसवीं अष्टम भाव पर पड रही है। यहाँ शनि की दशम दृष्टि के स्थान पर चंद्रमा है अत: शनि चंद्र को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है ऐसा कहा जाएगा।

**विशेष-** आप यहाँ ध्यान से देखें तो पाएँगे कि ग्रहों का प्रभाव न केवल उनके अपने बैठे हुए स्थान पर है अपितु कुण्डली में कई स्थानों पर है। जैसे सूर्यलग्न पर तो उसको फलादेश हेतु हम पढेंगे कि पंचमेश सूर्य लग्नस्थ होकर सप्तम को प्रभावित कर रहा है। अब आप यह देखें कि पंचमेश सूर्य उच्चस्थ होने पर अपने गुण धर्म को सप्तम अर्थात् पत्नी, व्यापार, यात्रा आदि स्थान में बाँटेगा। इसी प्रकार ध्यान से देखें कि पंचम स्थान पर शनि, गुरु और मंगल तीनों की पूर्ण दृष्टि है अब इनका प्रभाव भी इस भाव पर पडेगा। जो कि स्वाभाविक रूप से अलग-अलग होगा। अत: दृष्टि का विचार फल ज्ञान के लिए अत्यावश्यक है इसे आप स्मरण करके रखें।

अब आपके मन में एक प्रश्न उठ रहा होगा कि सभी ग्रहों की दृष्टि की बात की गई परन्तु राहु व केतु की दृष्टि की बात नहीं हुई। उसका कारण यह है कि ये दोनों ग्रह छाया ग्रह हैं इनकी दृष्टि नहीं हो सकती ऐसा कुछ विद्वानों का मत है। ये दोनो जिस स्थान पर बैठते हैं या जिस ग्रहके साथ होते हैं वैसा फल प्रदान करते हैं।

यस्मिन् भावे स्थितौ राहुकेतू तत्फलदायकौ।[84]

जैसे इस कुण्डली में राहुबुध के घर पर है और गुरु से दृष्ट है अत: उसके फल में बुध व गुरु दोनों का प्रभाव भी शामिल होगा।

इसके साथ ही एक श्लोक बहुधा पुस्तकों में राहु केतु की दृष्टि को स्पष्टकरता हुआ प्राप्त होता है यथा-

सुतमदननवात्ये पूर्ण दृष्टि: तमस्य,
युगलदशमगेहे चार्द्ध दृष्टिं वदन्ति।
सहजरिपुविपश्यन् पाददृष्टिं मुनीन्द्रा:
निजभवनमुपेतो लोचनान्ध: प्रविष्ट:।।

अर्थात् – 5,7,9,12 वे स्थान पर राहु की पूर्ण दृष्टि होती है। 2,10 में अर्द्ध दृष्टि होती है। 3,6 स्थान पर द्विपाद दृष्टि होती है। उपर्युक्त कुण्डली का उदाहरण देखें तो तृतीयस्थ राहु की सप्तम, नवम, एकादश और द्वितीय भाव पर पूर्ण दृष्टि है।

दृष्टा ग्रह- देखने वाले ग्रह को दृष्टा कहते हैं।
दृश्य- जिस ग्रह को देखा जा रहा है उसे दृश्य कहते हैं।
जैसे नवमस्थ गुरु तृतीयस्थ राहु को देख रहा है तो गुरु दृष्टा व राहु द्श्य होगा।

**अभ्यास प्रश्न-**

1- सूर्य की एकपाद दृष्टि कहाँ होती है?
2- शनि के दृष्टि स्थान लिखें।
3- मंगल की पूर्ण दृष्टि स्थान लिखें।
4- गुरु की पूर्ण दृष्टि किस स्थान पर होती है?
5- सभी ग्रह किस स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं?

### 4.3.1 उपखण्ड एक

प्रिय छात्रों! हमने ग्रहों के दृष्टि स्थान का ज्ञान प्राप्त कर लिया। अब हम इस खण्ड में दृष्टि

[84] त्रिफला ज्योतिष सुश्लोक शतक 18

का कलात्मक मान समझेंगे। यहाँ पर ग्रहों की दृष्टि को कला विकला के माध्यम से समझाया गया है।

कलात्मक दृष्टि :-

ग्रहों की दृष्टि जानने के बाद हमें यह भी जानना चाहिए कि देखने वाला कितनी दृष्टि से देख रहा है। महर्षियों ने पूर्ण को 60’ कला, त्रिपाद को 0-45’’, द्विपाद को 0.30’’ और एकपाद को 0.15’’ दृष्टि समझनी चाहिए।

जैसे- उपर्युक्त कुण्डली में सूर्य का उदाहरण लेते हैं। सूर्य सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। अर्थात् 60’ कला से देख रहा है। 4,8 भाव को त्रिपाद दृष्टि से देख रहा है तो 0.45’’ कलात्मक दृष्टि से देख रहा है। इसी प्रकार सबको समझना चाहिए।

**दृष्टि भेद -**

**अर्थोर्ध्वदृष्टी दिननाथभौमौ दृष्टिः कटाक्षेण कवीन्दुसून्वोः।**
**शशांकगुर्वोः समभागदृष्टिरधोऽक्षिपातस्त्वहिनाथशन्योः।।**[85]

अर्थात्- सूर्य मंगल की ऊर्ध्व दृष्टि,बुध शुक्र की कटाक्ष दृष्टि, चंद्रमा और गुरु की सम दृष्टि एवं शनि की अधो दृष्टि होती है। जैसे ऊपर की कुण्डली का ही उदाहरण देखें तो स्पष्ट होगा कि इस कुण्डली में किस ग्रह की किस स्थान पर कैसी दृष्टि पड रही है।

### 4.3.2 उपखण्ड दो

हमने पूर्व खण्ड में ग्रहों की दृष्टि विविधता को समझा। दृष्टि ज्ञान क्रम में जैमिनि ने ग्रहों की दृष्टि के अलावा राशियों की दृष्टि भी बताई है। जिसका उपयोग भी फलादेश में विद्वान् लोग करते हैं। वस्तुत: पराशर और जैमिनि के मूल सिद्धान्त फलित में प्रचलित हैं दोनों विद्वानों ने एक दूसरे के मत का अनुसरण भी किया है। महर्षि पराशर ने अपने ग्रन्थ में जैमिनि मत की दृष्टि, कारकांश आदि बहुत सारे मतों को समादृत किया है। अत: दोनों मत एक साथ उपयुज्य हैं। प्राचीन काल से ही दोनों सिद्धान्तो का प्रयोग किया जा रहा है। तदर्थ आपके अध्ययन हेतु इस खण्ड में राशियों की दृष्टि दी जा रही है।

जैमिनि कहते हैं कि अभिपश्यन्ति ऋक्षाणि अर्थात् राशियाँ अपने सामने वाले राशियों को देखती हैं कैसे इसका सरल क्रम हम पराशरजी के द्वारा प्राप्त करते हैं।

[85] जातकपारिजात 32-2

राशयोऽभिमुखं विप्र! प्रपश्यन्ति।
चर: स्थिरान् यथा पश्येत् स्थिरोऽपि तथा चरान्।
अनन्तिकगतानेवं ग्रहास्तत्र गता अपि।
द्विस्वभावो द्विभान् किन्तु नात्मानमवलोकते।।
निरीक्षन्ते चरस्थास्तु स्थिरस्थान् द्युचरांस्तथा।
एवं स्थिरगताश्चापि चरस्थान् नान्तिकस्थिताम्।।
द्विस्वभावगता: खेटा: प्रपश्यन्ति द्विभस्थितान्।
ग्रहान् समस्तानपि तु नात्मना सह संस्थितान्।।[86]

अर्थात्-

- चर राशि में बैठा हुआ ग्रह निकटस्थ स्थिरराशि में बैठे हुए ग्रह को छोडकर अन्य स्थिरराशिस्थ ग्रह को देखता है।
- स्थिरराशिस्थ ग्रह निकटस्थ चरराशि के ग्रह को छोडकर अन्य चर राशि ग्रहों को देखता है।
- द्विस्वभाव राशिस्थ ग्रह अपने निकटस्थ को छोडकर अन्य द्विस्वभावस्थ ग्रहों को देखता है।

छात्रों! अब यहाँ एक संदेह होता है कि निकटस्थ से क्या तात्पर्य है आगे वाली राशियाँ या पीछे वाली राशियाँ को निकटस्थ राशियाँ हैं। इसके लिए हम महर्षि जैमिनि का अनुसरण करें तो वृद्ध तो कारिका के वचन से स्पष्ट होता है कि-

चरं धनं विना स्थानं स्थिरमन्त्यं बिना चरम्।
युग्मं स्वेन बिना युग्मं पश्यन्तीत्ययमागम:।।[87]

- ✓ चर राशियाँ अपने से द्वितीय स्थान की स्थिर राशि को छोडकर अन्य स्थिर राशियों को देखती हैं।
- ✓ स्थिर राशियाँ अपने से द्वादश स्थान में विद्यमान चर राशि को छोडकरअन्य राशियों को देखती हैं।

चलिए यह तो निर्णय हो गया कि निकटस्थ से तात्पर्य क्या है। अब आप सोच रहे होंगे कि यह दृष्टि केवल राशियों की होती है या ग्रहों की होती है या दोनों की। इसके लिए पुन: हम जैमिनि जी का

[86] बृहत्पाराशर होरा शास्त्रम् 5-2
[87] जैमिनि सूत्र 2 यअध्या (वृद्ध कारिका), की सुरेशचंद्र की टीका 3

अनुसरण करते हैं।

जैमिनि राशियों की दृष्टि को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि –

तन्निष्ठाश्च तद्वत्।।[88]

अर्थात्- इन राशियों में बैठे हुए ग्रह भी पूर्वोक्त राशियों को देखेंगे जैसा कि उपर्युक्त पराशर जी के वचन से स्पष्ट है। जैसे मेष चर राशि है इसकी वृश्चिक में दृष्टि होगी, तो मेष में यदि कोई ग्रह बैठा है तो उसकी भी वृश्चिक में दृष्टि होगी।। निर्ष्कष यह हुआ कि मुख्यत: राशियों की ही दिशा होती है उसमें बैठा हुआ ग्रह राशियों का ही अनुसरण करता है। जैसे हम इस कुण्डली के उदाहरण से समझ सकते हैं।

**।। राशि दृष्टि बोधक चक्र।।**
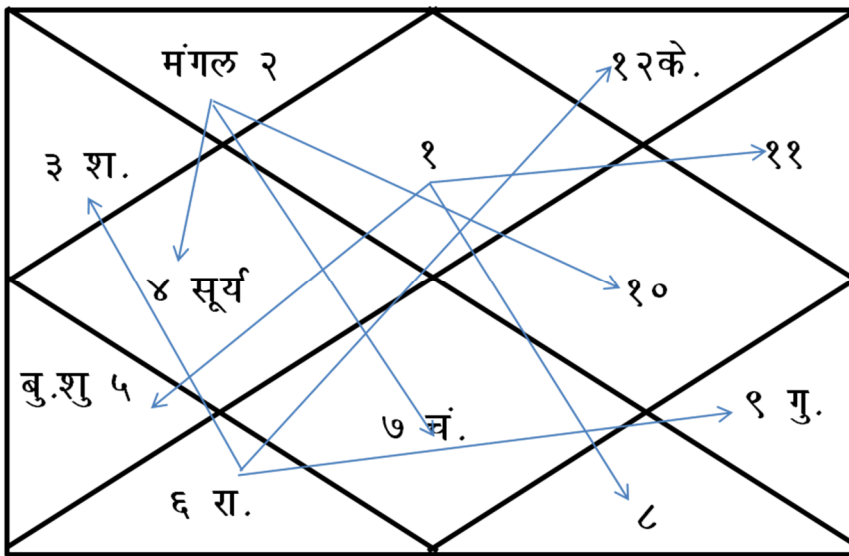
मित्रों हम सबसे पहले चर राशि की दृष्टि को समझते हैं। हमें यह ज्ञात ही है कि चर- 1,4,7,10, स्थिर- 2,5,,8,11 और द्विस्वभाव- 3,6,9,12 राशियाँ कहलाती हैं।

अब इस कुण्डली में प्रथम चर राशि लग्न पर मेष ही है नियमानुसार इसकी निकटस्थ वृष को छोडकर अन्य स्थिर राशि सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशि पर दृष्टि पडेगी। मेष में अन्य कोई भी ग्रह नहीं है अत: यह दृष्टि केवल मेष की मानी जाएगी। फलादेश हेतु इसे हम ऐसे भी समझ सकते हैं

[88] जैमिनि सूत्र 4-1

कि लग्न अपने गुण धर्म से पंचम ,अष्टम व एकादश भाव को भी प्रभावित करेगा। अब आपको फल निर्णय में सहायता मिलेगी।

इसी प्रकार द्वितीय भाव में वृष स्थिर राशि है इसकी द्वादश भाव की चर राशि को छोडकर अन्य चर राशियों पर इसकी दृष्टि रहेगी। अत: इसकी क्रमश: कर्क, तुला और मकर पर दृष्टि रहेगी। अब यहाँ पर आप देखेंगे कि मंगल भी द्वितीय भाव में बैठा है अत: इसकी उन उन स्थानों पर दृष्टि रहेगी जिन पर वृष राशि की दृष्टि होगी। इसी क्रम में मिथुन द्विस्वभाव राशि खुद को छोडकर अन्य द्विस्वभाव राशियों को देखेगी अत: उसकी कन्या धनु एवं मीन पर दृष्टि रहेगी। यहाँ तृतीय स्थान पर शनि भी है इसलिए शनि की दृष्टि भी उन्हीं भावों में रहेगी। अर्थात् शनि अपने प्रभाव से 6,9, एवं 12 भाव को प्रभावित करेगा। इस प्रकार हम सभी ग्रहों की दृष्टि रहेगी। अभ्यासार्थ एक सूची दी जा रही है जिसमें आप राशियों की दृष्टि का अभ्यास कर सकते हैं।

| | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दृष्टि स्थान | 5,8, 11 | 4,7, 10 | 6,9, 12 | 8,11, 2 | 7,10 1 | 9,12 3 | 11,2 5 | 10,1, 4 | 12,3 6 | 2,5, 8 | 1,4, 7 | 3,6, 9 |

आप उपर्युक्त चक्र में अपना दृष्टि का अभ्यास कर लें जिससे विषय को समझने में आसानी होगी। फलादेश करते समय हमें ग्रह दृष्टि एवं राशि दृष्टि दोनों को साथ में रखकर निर्णय लेना चाहिए। ग्रहों की या राशि की जिस स्थान पर दृष्टि होगी उस स्थान पर ग्रह राशि अपना फल जरूर देंगे। फल निर्णय के लिए कुछ सूत्र यहाँ दिए जा रहें हैं जिससे आप दृष्टियों का महत्त्व समझ सकते हैं।

- जिस राशि में पाप ग्रहों का प्रभाव होगा वह राशि पाप पीडित होगी अत: उसकी जिस दृष्टि जिस भाव/ राशि पर रहेगी वह स्थान भी पाप पीडित होगा।
- जिस राशि पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो उस राशि का दृष्ट भाव भी शुभ प्रभावित रहेगा।
- राशि स्वामी नीच हो कमजोर हो तो राशि की दृष्टि भी तदनुगुण प्रभावित करेगी।
- राशि स्वामी स्वगृही हो/ उच्च हो/ अपने मूलत्रिकोण में हो तो वह राशि से दृष्ट भाव/ राशि भी शुभ फल सूचक होगी।

**अभ्यास प्रश्न**

अधोदत्त कुण्डली को देखकर प्रश्नों का अभ्यास करें।
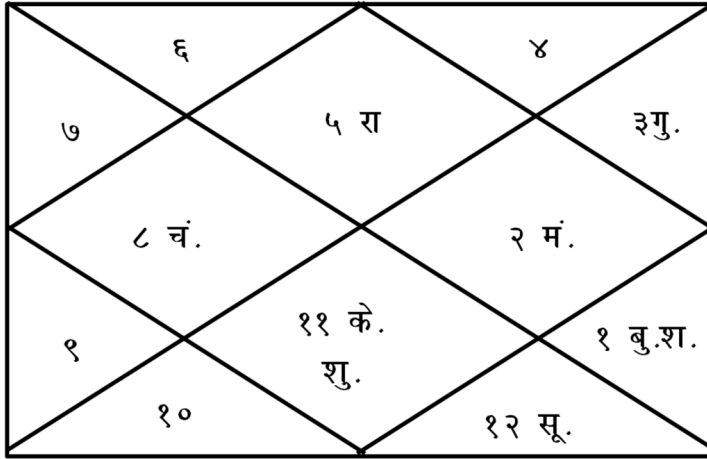
1- शनि की दृष्टि किस किस भाव पर है लिखें ?
2- लग्न की दृष्टि जैमिनि मत से लिखें ?
3- भाग्य भाव की दृष्टि जैमिनि मत से लिखें ?
4- अष्टम भाव पर किसकी दृष्टि है लिखें ?

**4.4 मुख्यभाग खण्ड दो**

मित्रों! हमने पूर्व भाग में ग्रहों की दृष्टि को अच्छे से समझ लिया है अब हम ग्रहों के मित्र, शत्रु आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे। जब हम ग्रहों के प्रभाव को बारीकी से समझें तो मालूम चलेगा कि चाहे दृष्टि के माध्यम से या अपने संचरण के माध्ययम से हो वस्तुत: ग्रह हमें तीन प्रकार से प्रभावित करते हैं।
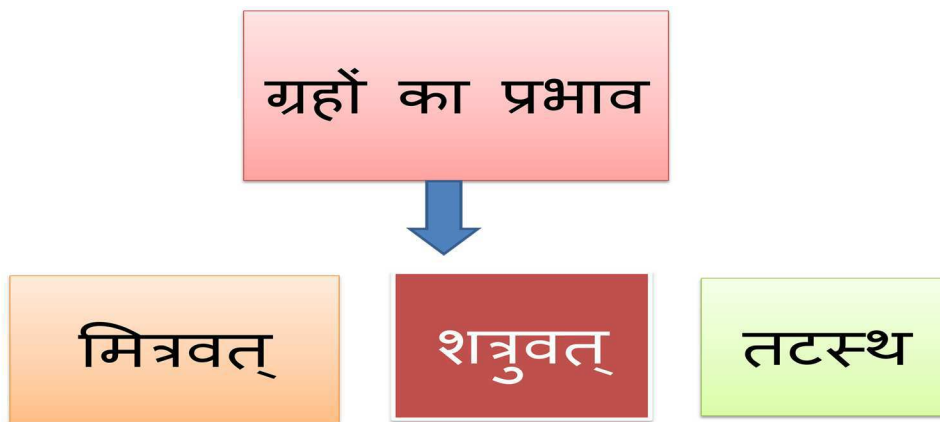
तात्पर्य यह है कि ग्रह या तो मित्रवत् हमारा सहयोग करेगा या शत्रुवत् पीडा देगा। तटस्थ ग्रह जिन ग्रहों के प्रभाव में होगा तदनुगुण अपना प्रभाव करेगा। अनूकूल ग्रह, प्रतिकूल ग्रह, शुभ फल देने वाला , अशुभ फल देने वाला आदि सभी बातें इन्हीं उपर्युक्त कारणों से निर्णीत होती हैं। अत: इस भाग में हम कुण्डली में मित्र आदि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।

**ग्रहों के शत्रु मित्रादि**

ऋषियों ने ग्रहों के नैसर्गिक मित्र, शत्रु व सम ग्रहों का निर्णय किया है। नैसर्गिक का भाव यह है कि प्राकृतिक रूप से ग्रह किसका मित्र है किसका शत्रु है।

रवे: समो ज्ञ: सितसूर्यपुत्रावरी परे ते सुहृदो भवेयु:।
चन्द्रस्य नारी रविचन्द्र पुत्रौ मित्रे सम: शेषनभश्चरा: स्यु:।।
समौ सितार्की शशिजश्च शत्रुमिंत्राणि शेषा: पृथिवीसुतस्य।
शत्रु: शशी सूर्यसितौ च मित्रे समा: परे स्यु: शशिनन्दनस्य। ।
गुरोर्ज्ञशुक्रौ रिपुसंज्ञकौ तु शनि: समोऽन्ये सुहृदो भवन्ति ।।
शुक्रस्य मित्रे बुधसूर्यपुत्रौ समौ कुजार्यावितरावरी तौ।।
शने: समो वाक्पतिरन्दु सूनुशुक्रौ च मित्रे रिपव: परेऽपि ।
ध्रुवग्रहाणां चतुराननेन शत्रुत्वमित्रत्वसमत्वमुक्तमम् ।। [89]

अर्थात् -

- ❖ सूर्य का बुध सम, शुक्र और शनि शत्रु शेष ग्रह मित्र हैं।
- ❖ चंद्र के सूर्य व बुध मित्र, अन्य सभी सम हैं।
- ❖ मंगल के शुक्र और शनि सम, बुध शत्रु, अन्य सभी मित्र हैं।
- ❖ बुध के चंद्र शत्रु, सूर्य और शुक्र मित्र, अन्य सभी सम हैं।
- ❖ गुरु के बुध और शुक्र शत्रु, शनि सम, अन्य मित्र हैं।
- ❖ शुक्र के बुध शनि मित्र,मंगल गुरुसम, अन्य शत्रु हैं।
- ❖ शनि के गुरु सम, बुध शुक्र मित्र, अन्य सभी शत्रु हैं।

अर्थ बोध के लिए सारिणी दी जा रही है इससे आप अभ्यास कर सकते हैं-

[89] बृहत्पाराशर होरा शास्त्रम् 56 से 59

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | चं. मं. गु. | सू. बु. | सू.चं. गु. | सू.शु. | सू. चं. मं. | बु. श. | बु. शु. | |
| सम | बु. | मं. गु. शु. श. | शु. श. | मं. गु. श. | श. | मं. गु. | गु. | |
| शत्रु | शु. श. | | बु. | चं. | बु.शु. | चं. सू. | सू. चं. मं. | |

राहु केतु के लिए विशेष-

वस्तुत: राहु और केतु के मित्र व शत्रु का उल्लेख ग्रन्थों में नहीं मिलता है । सामान्यत: शनिवत् राहु:, कुजवत् केतु: का वचन प्रचलन में है। दक्षिण का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है फलदीपिका। फलादेश का बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके लेखक मन्त्रेश्वर ने राहु व केतु के लिए उनके मित्र व शत्रु का वर्णन किया है जो आपके ज्ञानार्थ यहाँ उद्धृत किया जा रहा है-

मित्राणि विच्छनिसितास्तमसोर्द्वयोस्तु,
भौम: समो  निगदितो रिपवश्च शेषा:।।[90]

अर्थात्- राहु केतु के मित्र बुध, शुक्र व शनि हैं। मंगल सम है।  सूर्य, चंद्र व गुरु इनके शत्रु हैं।

अभ्यास प्रश्न

1- सूर्य के मित्रग्रहों के नाम बताएँ।
2- किस ग्रह का कोई भी शत्रु नहीं है।
3- मंगल का शत्रु कौन है?
4- शनि का समग्रह कौन है?

4.4.1 उपखण्ड एक

इस खण्ड में हम ग्रहों के तात्कालिक मित्र व शत्रु का ज्ञान प्राप्त करेंगे। तात्कालिक मित्र शत्रु का भाव यह है कि जातक की कुण्डली में ग्रहों की स्थित के अनुसार कौन उसका मित्र या शत्रु होता है।  कोई ग्रह नैसिर्गक में   भले मित्र या शत्रु है परन्तु तत्काल में उसकी मित्रता या शत्रुता उसके नैसर्गिक गुण धर्म में परिवर्तन लाएगी।

[90] फलदीपिका  35 -2

तात्कालिक मित्र/शत्रु ज्ञान :-

व्ययाम्बुधनखायेषु तृतीये सुहृद: स्थिता:।
तत्कालरिपव: षष्ठसप्ताष्टैकत्रिकोणगा:।।[91]

अर्थात् - 10,11,12 वें भाव में एवं 2,3,4 भाव में बैठे हुए ग्रह तत्काल मित्र होते हैं। इसको स्पष्ट रूप में समझते हैं किसी ग्रह से 10,11,12 भाव एवं 2,3,4 में स्थितग्रह उस ग्रह के मित्र कहलाते हैं अन्य ग्रह उस ग्रह के तात्कालिक शत्रु होते हैं। उस ग्रह के साथ बैठे हुए ग्रह शत्रु कहलाते हैं। जैसे हम यहाँ एक कुण्डली के उदाहरण के द्वारा इसको समझते हैं।

उदाहरण कुण्डली

मंगल २
१२ बु.शु.
३ रा.
१ सूर्य
११श.
४
१०
५
७
९ के. गु.
६
८ चं.
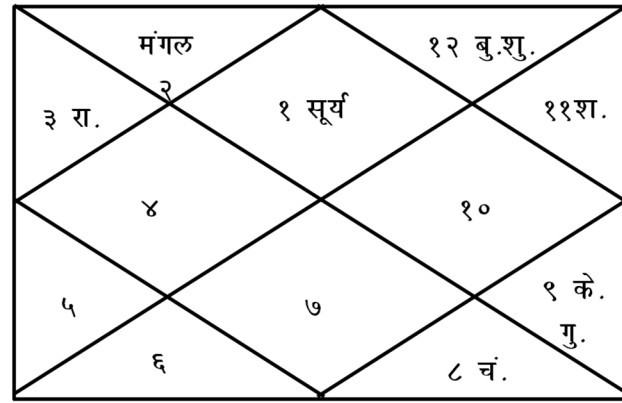
इस कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार हम उनका तात्कालिक मित्रादि का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यहाँ सबसे पहले हम सूर्य के मित्र शत्रु ग्रहों का ज्ञान करेंगे। सूर्य से 10 वें कोई नहीं, 11वें शनि व 12 वें बुध व शुक्र हैं।अर्थात् शनि, बुध व शुक्र सूर्य के तात्का.मित्र हुए। इनकोहमसूर्य के मित्र वाले कॉलममेंरख देंगे। अब हमने देखा कि सूर्य से 2रे मंगल व तीसरे राहु और 4 थे कोइ भी नहीं अत: ये दोनों भी सूर्य के मित्र हुए। अन्य सभी ग्रह मित्र स्थान से दूर हैं अत: ये सभी सूर्य के शत्रु होंगे। इसी प्रकार हम चंद्रादि ग्रहों के भी मित्रादि का ज्ञान प्राप्त करेंगे। चंद्र स्थान से 2 रे गु.के., 3रा रिक्त और 4 थे शनि है। इसी प्रकार चंद्र से 10,11,12 स्थानपर कोई नहीं है अत: यही केवल 3 ग्रह मित्र होंगे अन्य शत्रु होंगे। मंगल के 2,3,4 केवल राहु है और10,11,12 में क्रमश: श.,बु.,शु. व सूर्य हैं अत: ये सभी मंगल के मित्र होंगे अन्य सभी शत्रु होंगे।

उदाहरण कुण्डली के तात्कालिक मित्र व शत्रु

[91] सारावली 30-4

| क्रम | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | श.बु.शु. मं.रा. | गु.के. श. | श.,बु., शु.सू. रा. | सू.मं.रा. श.के.गु. | चं.श.बु. शु.श. | सू.मं.रा. श.के.गु. | के.गु. बु. शु. चं.सू. | मं.सू. बु.शु. | चं. शु. बु. शु. |
| शत्रु | चं.के.गु. | बु. शु.मं. रा.सू. | के.गु.चं. | चं. शु. | के.सू.मं. | चं. बु. | मं.रा. | श.के. गु.चं. | सू.मं .रा. गु. |

**अभ्यास प्रश्न-**

1- ग्रह से द्वितीय भावस्थ ग्रह क्या होता है?
2- ग्रह से छठे स्थान में बैठने वाला ग्रह क्या होता है?
3- ग्रहों के तात्कालिक मित्र स्थान लिखें
4- ख किस भाव की संज्ञा है?

### 4.4.2 उपखण्ड दो

प्रिय मित्रों इस खण्ड में हम अब ग्रहों के नैसर्गिक व तात्कालिक मित्रता शत्रुता के निर्णयात्मक स्परूप को समझेंगे। जिसे पञ्चधामैत्री के नाम से जाना जाता है। पञ्चधा अर्थात् पाँच प्रकार की मित्रता का स्वरूप।

हितसमरिपुसंज्ञा ये निसर्गान्निरुक्ता
हिततमहितमध्यास्ते ऽपि तत्कालमित्रै:।
रिपुसमसुहृदाख्या: सूतिकाले ग्रहेन्द्रा
अधिरिपुमध्या शत्रुभिश्चिन्तनीया।। [92]

अर्थ को अधोदत्त सारिणी में समझाया गया है-

| तात्कालिक | + | नैसर्गिक | = | पंचधा |
|---|---|---|---|---|
| मित्र | + | मित्र | = | अधिमित्र |
| मित्र | + | सम | = | मित्र |
| मित्र | + | शत्रु | = | सम |

[92] सारावली 4- 31

| शत्रु | + | शत्रु | = | अधिशत्रु |
|---|---|---|---|---|
| शत्रु | + | सम | = | शत्रु |

तात्पर्य यह है कि यदि नैसर्गिक कुण्डली में मित्र है और तात्कालिक भी मित्र है तो कुण्डली में अधिमित्र कहलाएगा। जब कुण्डली में कोई ग्रह अधिमित्र होगा तो वह अनुकूल होकर अपने फल से प्रभावित करेगा। अपनी दशा काल में वह ग्रह जातक का भाग्यवृद्धि कारक, शुभफलकारक होगा। इस पंचधा मैत्री का उदाहरण के द्वारा अभ्यास करते हैं।
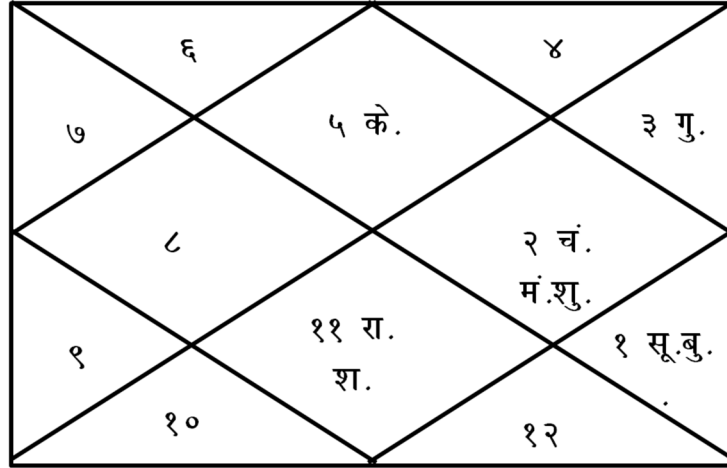
यहाँ सूर्य की मित्रता का ज्ञान करते हैं। इसमें कुण्डली में सूर्य नवम भाव में है उसका मंगल स्वामी मंगल सूर्य का नैसर्गिक मित्र है और कुण्डली में सूर्य सेदूसरे होने के कारण मित्र जगह मित्र होने के कारण मंगल सूर्य का अधिमित्र हुआ। हम कुण्डली में ऐसे समझेंगे कि लग्नेश सूर्य अपने उच्च स्थान में अपने अधिमित्र की राशि में बैठा हुआ है। अत: सूर्य की दशान्तर्दशा का फल कुण्डली में बहुत अच्छा होगा। इसी प्रकार चंद्रमा को देखते हैं। द्वादशेश चंद्रमा उच्च होकर शुक्र के घर परहै और शुक्र चंद्रमा का नैसर्गिक सम है और तत्काल में शत्रु है इसलिए सम और शत्रु मिलकर शत्रु सिद्ध हुआ। इसलिए चंद्रमा का फल उत्तम नहीं होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों को भी समझना चाहिए।

**अभ्यास प्रश्न -**

1- पंचधा मैत्री कितने प्रकार की होती है?
2- मित्र और सम क्या होगा?
3- शत्रु और मित्र क्या होगा?
4- उदाहरण की कुण्डली में चंद्र मंगल का सम्बन्ध कैसा है?

## 4.5 सारांश

ग्रहों की दृष्टि फल निर्णय के लिए महत्त्वपूर्ण है। सभी ग्रहों की सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि होती है। जिसका प्रभाव 60' कला का होता है। 3,10 स्थान मे एकपाद दृष्टि होती है। 5,9 स्थान पर अर्द्ध दृष्टि होती है। जिसमें उसका प्रभाव 0.30'' कला का होता है। इसी क्रम में 4,8 स्थान पर ग्रह की त्रिपाद दृष्टि होती है । ग्रह जिस भाव का स्वामी होता है और जिस स्थान पर बैठा होता है उन भावों का प्रभाव अपनी दृष्टि के माध्यम से देता है। इसके बाद हमने सूर्यादि ग्रहों की दृष्टि के भेद को समझा। इसी क्रम में हमने राशियों की दृष्टि प्रकारों का भी सोदाहरण अभ्यास में समझा कि चर अपने निकटस्थ स्थिर को छोडकर अन्य स्थिर राशि को, स्थिर अपने पूर्व चर को छोडकर अन्य चर राशियों को और द्विस्वभाव खुद को छोडकर अन्य द्विस्वभाव राशियों को देखती हैं। इन राशियों पर बैठे हुए ग्रह भी राशियों का अनुसरण करती हैं। जिन स्थानों पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होता है उनकी दृष्टि भी अपने शुभ फलों से दृष्ट भावों को प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार अशुभ ग्रहों को भी समझना चाहिए।

## 4.6 शब्दावली

| | |
|---|---|
| ज्ञ- | बुध |
| सित- | शुक्र |
| दृष्टा– | देखने वाला |
| दृश्य– | जो देखा जा रहा है |
| अर्की- | शनि |
| शशिनन्दन- | बुध |
| पृथिवीसुत- | मंगल |
| अम्बु – | चतुर्थ भाव |
| ख- | दशम भाव |
| आय- | 11 वाँ भाव |
| कवि- | शुक्र |
| इन्द्रुसूनु- | बुध |
| ऋक्षाणि- | राशियाँ |
| चर- | 1,4,7,10 राशियाँ |
| स्थिर- | 2,5,8,11 राशियाँ |

द्विस्वभाव – 3,6,9,12 राशियाँ

## 4.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

| क्रम | प्रश्न | उत्तर |
|---|---|---|
| 1. | सूर्य की एकपाद दृष्टि कहाँ होती है? | सप्तम |
| 2. | शनि के दृष्टि स्थान लिखें। | 3,7,10 |
| 3. | मंगल की पूर्ण दृष्टि स्थान लिखें। | 4,7,8 |
| 4. | गुरु की पूर्ण दृष्टि किस स्थान पर होती है? | 5,7,9 |
| 5. | सभी ग्रह किस स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं? | सप्तम |
| 6. | शनि की दृष्टि किस किस भाव पर है लिखें ? | एकादश, तृतीय व षष्ठ भाव पर |
| 7. | लग्न की दृष्टि जैमिनि मत से लिखें ? | तृतीय षष्ठ व नवम |
| 8. | भाग्य भाव की दृष्टि जैमिनि मत से लिखें ? | लग्न चतुर्थ व सप्तम |
| 9. | अष्टम भाव पर किसकी दृष्टि है लिखें ? | द्वितीय भाव की |
| 10 | सूर्य के मित्रग्रहों के नाम बताएँ। | चं. मं. गु. |
| 11 | किस ग्रह का कोई भी शत्रु नहीं है। | चंद्रमा |
| 12 | मंगल का शत्रु कौन है? | बुध |
| 13 | शनि का समग्रह कौन है? | गुरु |
| 14 | ग्रह से द्वितीय भावस्थ ग्रह क्या होता है? | मित्र |
| 15 | ग्रह से छठे स्थान में बैठने वाला ग्रह क्या होता है | शत्रु |
| 16 | ग्रहों के तात्कालिक मित्र स्थान लिखें | 2,3,4/ 10,11,12 |
| 17 | ख किस भाव की संज्ञा है? | दशम |
| 18 | पंचधा मैत्री कितने प्रकार की होती है? | पाँच |
| 19 | मित्र और सम क्या होगा? | मित्र |
| 20 | शत्रु और मित्र क्या होगा? | सम |

| | | |
|---|---|---|
| 21 | उदाहरण की कुण्डली में चंद्र मंगल का सम्बन्ध कैसा है | चंद्रमा मंगल का सम है |

## 4.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची


1 सारावली –कल्याणवर्मा – व्याख्याकार-डॉ.मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

2 जातकपारिजात- वैद्यनाथ - व्याख्याकार-गोपेश ओझा, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

3 भावमंजरी- पं. मुकुन्द दैवज्ञ- व्याख्याकार-डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

4 जैमिनि सूत्र-जैमिन- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

5 बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी

6 लघुपाराशरी- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

7 बृहज्जातकम् –बाराहमिहिर- व्याख्याकार- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

8 उत्तरकालामृत- कालिदास- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।


## 4.9सहायक/ उपयोगी पाठ्यसामग्री


1- सारावली –कल्याणवर्मा – व्याख्याकार-डॉ.मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

2- जातकपारिजात- वैद्यनाथ - व्याख्याकार-गोपेश ओझा, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

3- भावमंजरी- पं. मुकुन्द दैवज्ञ- व्याख्याकार-डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

4- जैमिनि सूत्र-जैमिन- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

5- बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी

6- लघुपाराशरी- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

7- बृहज्जातकम् –बाराहमिहिर- व्याख्याकार- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

8- उत्तरकालामृत- कालिदास- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

## 4.10 निबंधात्मक प्रश्न

I. ग्रह दृष्टि को कुण्डली के उदाहरण के साथ प्रस्तुत करें।
II. राशियों की दृष्टि का सोदाहरण चार्ट प्रस्तुत करें।
III. ग्रहों के नैसर्गिक मित्र व शत्रु ग्रहों का विवरण लिखें।
IV. तात्कालिक मित्र व शत्रु ज्ञान विधि लिखें
V. पंचधा मैत्री पर 100 शब्दों पर निबन्ध लिखें।

# इकाई - 5 ग्रह, भावबल परिचय एवं साधन

## इकाई की संरचना

## 5.1 प्रस्तावना

फलित ज्योतिष के मूलाधार ग्रह और भाव हीं हैं। ग्रहों एवं भावों के अनुसार ही हम जातक के जीवन में होने वाले शुभाशुभ फलों को समझते हैं। सभी ग्रह व भाव अपने बल के अनुसार ही हमें प्रभावित करते हैं। किसी के लिए उसी राशि व भाव में बैठा ग्रह धनवान बना देता है किसी को निर्बल बना देता है । एक ही लग्न में जन्म लेने वाले जातकों में विविधता नजर आती है। किसी भाव विशेष में बैठा हुआ ग्रह किसी के लिए कारक तो किसी के लिए बाधक बन जाता है। इन सभी का मूलत: कारण ग्रहों एवं भावों का बल है। ग्रह अपने बल के अनुसार हमें फल प्रदान करते हैं। इसलिए जातक के जीवन में अमुक घटना कब होगी कितनी मात्रा में होगी यह जानने के लिए ग्रह बल ज्ञान अत्यावश्यक है। वस्तुत: ग्रहों का बल ज्ञान कर लेने से उनके शुभाशुभ का ज्ञान बहुत ही सरल व स्पष्ट हो जाता है। बिना बल ज्ञान के ज्योतिषी के द्वारा किया गया फलादेश केवल व्यर्थ भाषण ही होगा। षड्बल में बली ग्रह की दशा हमें अपने फल की सूचना स्पष्ट रूप से प्रदान करती है। अत: ग्रह व भावों का बल ज्ञान नितान्त आवश्यक है। तो आईए हम इस पाठ में ग्रहों के बल और भावों के बल भेदों को जानते हुए उसका सोदाहरण अभ्यास करते हैं।

## 5.2 उद्देश्य

मित्रों ज्योतिष से ग्रहों के फल निर्णय के लिए यह पाठ बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस पाठ के माध्यम से अधोलिखित अंशों का हमें ज्ञान प्राप्त होगा।

1- हमें ग्रहों के बल भेद का ज्ञान प्राप्त होगा।

2- हम इस पाठ से बल साधन विधि का ज्ञान प्राप्त करेंगे

3- बल साधन हेतु सूक्ष्म विधियों का सटीक अनुभव प्राप्त करेंगें

4- बल साधन का प्रयोग करने का अभ्यास करेंगे।

5- भावों के बल भेद का ज्ञान होगा।

6- भावों के बल साधन विधि के द्वारा अभ्यास करेंगे।

## 5.3 मुख्य भाग

जैसा कि आपने अच्छी तरह से समझ ही लिया है कि ग्रहों का बल ज्ञान क्यों आवश्यक है ग्रह कुण्डली के विविध भावों में रहते हुए अनेक प्रकार से हमें प्रभावितकरते हैं। उनके प्रभाव की मात्रा क्या होगी इसका ज्ञान केवल ग्रह बल से ही सम्भव है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के 6 प्रकार के

बल कहे गए हैं यथा-

वीर्यं षड्-विधमाह कालजबलं चेष्टाबलं स्वोच्चजम्।
दिग्वीर्यं त्वयनोद्भवं दिविषदां स्थानोद्भवं च क्रमात्।[93]

- स्थान बल
- दिक्बल
- कालबल
- नैसर्गिक बल
- दृक्बल
- चेष्टाबल

स्थान बल- ग्रहों के विविध स्थानों में रहने के कारण जो उनका बल निश्चित होता है उसे ही स्थान बल कहते हैं। इसके अन्दर 5 प्रकार के बलों निर्णय लिया जाता है- उच्चादिबल, सप्तवर्गजबल, ओजादिबल, केन्द्रादिबल और द्रेष्काणबल। आईए इनका क्रमश: अध्ययन करते हैं।

**उच्चादि बल-**

नीचोनो भगणाच्च्युत: षडधिकश्चेत् षड् हृदौच्चं बलम्
स्वर्क्षेऽर्द्धं समभेऽष्टमस्त्रिचरणा मूलत्रिकोणे बलम्।
मित्रर्क्षेंघ्रिरधीष्टभे त्रय इभांशा वैरिभेष्ट्यंशको
दन्तांशोऽध्यरिभे गृहादिपवशात् खेटस्य सप्तैक्यजम्।।[94]

अर्थात्- जब कोई ग्रह अपनी परमोच्च अवस्था में रहता है तो उसे 1 रूप बल मिलता है। इसी प्रकार परम नीच में रहने पर 0 रूप बल प्राप्त होता है। उच्च से नीच के मध्य कहीं और रहने पर हमें त्रैराशिक अनुपात करना चाहिए। उसी प्रकार मूलत्रिकोण आदि स्थानों पर ग्रह के बल क्रमश:कम होते चले जाएँगे। भाव यह है कि उच्च ग्रह का आधा बल स्वगृही को, उसका आधा मित्रस्थ को, उसका आधा बल- समराशिस्थ को, उसका आधा शत्रुराशिस्थ को एवं इसका आधा अधिशत्रु राशिस्थ को मिलता है। इनको सरलता से समझने के लिए हम सारिणी का भी प्रयोग कर सकते हैं-

---

[93] फलदीपिका 01-4

[94] केशवीयजातक श्लोक 5

| क्रम | ग्रहों के विविध स्थान | बल | अन्य विशेष |
|---|---|---|---|
| 1 | उच्च होने पर | 1रूप बल | नीच होने पर 0 बल प्राप्त होता है। |
| 2 | मूल त्रिकोण में रहने पर | 45 षष्ठ्यंश | |
| 3 | स्वगृही होने पर | 30 षष्ठ्यंश | उच्च का आधा |
| 4 | अधिमित्र की राशि में | 22’.30’’ षष्ठ्यंश | मूल त्रिकोण का आधा |
| 5 | मित्र राशि में होने पर | 15 षष्ठ्यंश | स्वगृही का अर्ध भाग |
| 6 | सम राशि में | 7’.30’’ षष्ठ्यंश | मित्र का अर्ध भाग |
| 7 | शत्रु राशि में | 3’.45’’ षष्ठ्यंश | सम का अर्ध भाग |
| 8 | अधिशत्रु राशि में | 1’ .52’’ षष्ठ्यंश | शत्रु का अर्ध भाग |

**स्थान बलान्र्गत सप्तवर्गज बल** –

ग्रहों अपने विविध वर्गो में होते हुए अपने बल को निश्चित करते हैं। होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश ये सप्त वर्ग कहलाते हैं।

गृह होरा स्वद्रेष्काण सप्ताङ्कार्कांशसम्भवम्।
बलं तदैक्य त्रिंशांशबलयुक् सप्तवर्गजम्।।

इसके बल को हम सारिणी के द्वारा समझते हैं-

| क्रम | ग्रह भेद | बल | विशेष |
|---|---|---|---|
| 1 | स्ववर्ग में | 30’ षष्ठ्यंश | ग्रह होरादि वर्ग में अपनी ही राशि में हो, जैसे सूर्य सिंह में |
| 2 | अधिमित्र में | 22’.30’’ षष्ठ्यंश | कुण्डली में जो अधिमित्र निश्चित हुआ है उसी के वर्ग में हो। |
| 3 | मित्र वर्ग में | 15’ षष्ठयंश | मित्र की राशि में बैठा हुआ ग्रह। |
| 4 | सम वर्ग में | 7’.30’’ षष्ठ्यंश | सम ग्रह की राशि में स्थित ग्रह। |
| 5 | शत्रु वर्ग में | 3’.45’’ षष्ठ्यंश | शत्रु ग्रह की राशि में स्थित ग्रह। |
| 6 | अधिशत्रु वर्ग में | 1’.52’’ षष्ठ्यंश | अधिशत्रु ग्रह की राशि में स्थित ग्रह। |

**स्थान बलान्र्गत ओजादि बल/युग्मायुग्म बल-**

शुक्रेन्दूसमभांशके हि विषमोऽन्ये दद्युरंघ्रि बलम्।
केन्द्राद्येषु च रूपकार्द्धचरणान्यच्छन्ति खेटा: क्रमात्।[95]

सम और विषमराशि में ग्रह के रहने को ओजादि बल या युग्मायुग्म बल कहते हैं। पुरुष ग्रह पुरुष राशियों में और स्त्री ग्रह स्त्री राशियों में बलवान होते हैं-

- ❖ यदि सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि ये विषम राशि में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
- ❖ सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि ये विषम राशिके नवांश में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
- ❖ विषराशि और विषम नवांश दोनों में हों तो - 30 षष्ठ्यंश
- ❖ चंद्र और शुक्र सम राशि में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
- ❖ चंद्र और शुक्र नवांश में सम राशि में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
- ❖ ये दोनो ग्रह दोनों स्थानों में सम हों तो - 30 षष्ठ्यंश

**स्थान बलान्र्गत केन्द्रादि बल-** केन्द्र आदि स्थानों में ग्रहों को जो बल मिलता है उसे केन्द्रादि बल कहते हैं।

- ✓ केन्द्र स्थ ग्रह - 1रूप बल
- ✓ पणफर राशिस्थ ग्रह - 30 षष्ठ्यंश
- ✓ आपोक्लिमराशिस्थ ग्रह - 15 षष्ठ्यंश

**स्थान बलान्र्गत द्रेष्काण बल-** सप्तवर्ग के अलावा द्रेष्काण का एक विशेष बल होता है। इसमें पुरुष, नपुंसक एवं स्त्री ग्रहों के अनुसार बल निश्चित होता है।

स्त्रीखेटौ चरमे नरा: प्रथमके क्लीबौ चमध्ये तथा।
द्रेष्काणे वितरन्ति पादमुदितं स्थानाख्यवीर्यं त्विदम्।।

पुरुष ग्रह (सू.मं.गुरु) ये प्रथम द्रेष्काण में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
नपुंसक ग्रह (बु.श.) ये द्वितीय द्रेष्काण में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
स्त्री ग्रह (चं.शु.) ये तृतीय द्रेष्काण में हों तो - 15 षष्ठ्यंश
नोट- इन स्थानों में न होने पर 0 षष्ठ्यंश बल होगा।

[95] केशवीयजातक 6

अभ्यास प्रश्न-

1- ग्रहों का बल कितने प्रकार का होता है?
2- मूलत्रिकोणस्थ ग्रह का प्रमाण कितना है?
3- पुरुष ग्रहपुरुष राशि में हों तो ओजादि बल प्रमाण लिखें।
4- आपोक्लिम भावस्थ ग्रह का बलप्रमाण कितना है?
5- मित्रवर्गस्थ ग्रह का बलप्रमाण लिखें

5.3.1 उपखण्ड एक

आपने इस खण्ड में स्थानबल के भेदों को तो समझ लिया अब इसका कैसे अभ्यास करें आप यही सोच रहे होंगे तो चलिए, इस उपखण्ड में हम स्थान बल का उदाहरण के साथ अभ्यास करते हैं। इसकेलिए हमें इष्टकाल, ग्रहस्पष्ट, लग्नादि द्वादश भाव स्पष्ट तक की गणित का साधन कर लेनाचाहिए।

**उच्चादि बल साधन विधि-**

हम ग्रहों का बल साधन करने के लिए ग्रहों के राश्यादि की आवश्यकता रहेगी। अब यहाँ पर उदाहरणार्थ हम कल्पित ग्रह स्पष्ट व द्वादश भाव स्पष्ट ले लेते हैं।

| क्रम | लग्न एवं ग्रह | राश्यादि स्पष्टमान |
|---|---|---|
| 1 | लग्न | 01-10-15-18 |
| 1 | सूर्य | 03-27-23-06 |
| 2 | चंद्र | 08-20-55-35 |
| 3 | मंगल | 01-16-27-58 |
| 4 | बुध | 03-12-00-35 |
| 5 | गुरु | 08-18-44-56 |
| 6 | शुक्र | 02-17-14-59 |
| 7 | शनि | 01-20-30-10 |

द्वादश भाव स्पष्ट

| भाव | प्र. | प्र.सं. | द्वि. | द्वि.सं. | तृ. | तृ.सं. | चतु. | च.सं. | पं. | पं.सं. | षष्ठ | ष. सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 11 | 11 | 00 | 00 | 01 | 01 | 02 | 02 | 03 | 03 | 04 | 04 |
| अंश | 00 | 15 | 01 | 16 | 02 | 17 | 02 | 17 | 02 | 16 | 01 | 15 |
| कला | 28 | 53 | 18 | 44 | 09 | 34 | 59 | 34 | 09 | 44 | 18 | 53 |

| विकला | 11 | 58 | 46 | 03 | 21 | 38 | 56 | 28 | 21 | 03 | 46 | 28 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाव | सं. | स.सं. | अष्ट. | अ.सं. | नवम | न.सं. | दशम | द.सं. | एका. | एका.सं. | द्वाद. | द्वा. सं. |
| राशि | 05 | 05 | 06 | 06 | 07 | 07 | 08 | 08 | 09 | 09 | 10 | 10 |
| अंश | 00 | 15 | 01 | 16 | 02 | 17 | 02 | 17 | 02 | 16 | 01 | 15 |
| कला | 28 | 53 | 18 | 44 | 09 | 34 | 59 | 34 | 09 | 44 | 18 | 53 |
| विकला | 11 | 58 | 46 | 03 | 21 | 38 | 56 | 28 | 21 | 03 | 46 | 28 |

**ग्रहों का उच्च नीचादि बल बोधिका सारिणी**

| | **सूर्य** | **चंद्र** | **मंगल** | **बुध** | **गुरु** | **शुक्र** | **शनि** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च राश्यादि | 0-10$^0$ | 01-03$^0$ | 09-28$^0$ | 05-15$^0$ | 03-05$^0$ | 11-27$^0$ | 06-20$^0$ |
| उच्च बल | 1रूप | 1रूप | 1रूप | 1रूप | 1रूप | 1रूप | 1रूप |
| नीच राश्यादि | 06-10$^0$ | 07-03$^0$ | 03-28$^0$ | 11-15$^0$ | 09-05$^0$ | 05-27$^0$ | 0-20$^0$ |
| नीच बल | 0 रूप | 0 रूप | 0 रूप | 0 रूप | 0 रूप | 0 रूप | 0 रूप |

गणित में कई प्रकार से हम ग्रहों का उच्चादिबल साधन कर सकते हैं यहाँ पर सरल विधि के द्वारा हम बल साधन करेंगे।

सूत्र- $\frac{(\text{ग्रह}-\text{नीच})X1}{6} = \text{इष्ट उच्च बल}$

इसको और सरलता से समझते हैं। ग्रहष्पष्ट को उसके नीच से घटाएँ। शेष 6 से अधिक हो तो षड्भाल्प (12 राशि में घटा देना) करें। प्राप्त राश्यादि को कलात्मक बनाकर 10800 से भाग दें। प्राप्त कलादि ग्रह का उच्चादिबल होगा।

विशेष- ग्रह स्पष्ट को हम नीच से घटाएँ या नीच राश्यादि से ग्रह स्पष्ट को घटाएँ ये अपनी सुविधा है जैसे- हमारा सूर्य स्पष्ट है

6.10.00.00 − 3.27.23.06 = 2.12.36.54 इसे अब कलात्मक बना लेते हैं।

1 राशि = 30 अंश

1 अंश = 60 कला

```
2x 30= 60 +12=72,72 x 60= 4356
कला.मान

10800)4356(0 अंश
      x60
10800 )261360(24 कला
       21600
       45360
       43200
       2160x60 = 12960
10800) 12960 ( 12 विकला
       10800
       21600
       21600
       00
```

अर्थात्- सूर्य का उच्च बल हुआ 0⁰-24′-12′′

इसी प्रकार हम सभी ग्रहों का उच्च बल साधन कर सकते हैं।

**विशेष-** ग्रहों के बल विचार में राहु और केतु का प्रयोग नहीं किया जाता है।

**स्थान बलार्न्गत सप्तवर्ग बल का उदाहरण-**

हमारे पास पूर्व से ही लग्न एवं ग्रहों का स्पष्ट राश्यादि मान दिया हुआ है उसके अनुसार हम सबसे पहले सप्तवर्ग की कुण्डलियाँ बना लें। उसमें ग्रहों को स्थापित करें। सप्त वर्ग में लग्न कुण्डली, होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश द्वादशांश और त्रिंशांश की गणना की जाती है।

॥ लग्न कुण्डली ॥
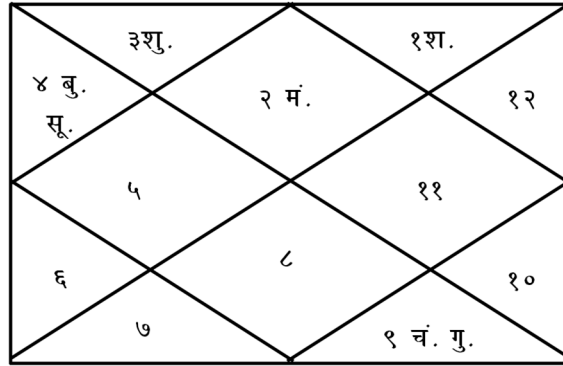
जैसे सूर्य का ही सप्त वर्ग निकालना हो तो सूर्य राश्यादि है- 3-27-23-06 यह कुण्डली में चंद्र की राशि में है चंद्र सूर्य का मित्र है परन्तु तत्काल में शत्रु है मित्र+शत्रु = सम होता है। अत: सूर्य को लग्न कुण्डली में 7'.30'' कलात्मक बल मिलेगा।

**होरा चक्र** में सूर्य का बल- सूर्य सम राशि की दूसरी होरा यानी खुद की होरा में है अत: अत:30' षष्ठ्यंश का बल मिलेगा।

**द्रेष्काण**- सूर्य कर्क के तीसरे द्रेष्काण में है यानी कर्क से नवम मीन राशि में। मीनाधिपति गुरु सूर्य का मित्र है परन्तु लग्न में शत्रु है अत: मित्र+शत्रु = सम होता है। यहाँ सूर्य को पुन: 7'.30'' कलात्मक बल मिलेगा।

**सप्तमांश**- कर्क के अन्तिम सप्तमांश पर है। सम राशि में होने के कारण कर्क से सप्तम जाएँ पुन:वहाँ से सात राशि तक गिने। अर्थात् कर्क में ही सूर्य है। मित्र+शत्रु = सम होने से पुन: 7'.30'' कलात्मक बल मिलेगा।

**नवमांश**- कर्क के नवम नवांश में है पुन:मीन में तो मित्र+शत्रु = सम होने से पुन: 7'.30'' कलात्मक बल मिलेगा।

**द्वादशांश**- कर्क के 11 वें द्वादशांश में है। कर्क से 11 वीं राशि तक गिनें। वृष राशि में सूर्य होगा। मित्र+शत्रु = सम होने से पुन: 7'.30'' कलात्मक बल मिलेगा।

**त्रिंशांश**- सम राशि के अन्तिम त्रिंशांश में है। अर्थात् मंगल के त्रिंशांश में अत: वृश्चिक राशि में सूर्यरहेगा। मित्र+मित्र = अधिमित्र के वर्ग में होने के कारण सूर्य को 22'.30'' षष्ठयंश का बल प्राप्त होगा। अब हम पूरे वर्ग में सूर्य के बल का योग कर लेते हैं।

| क्रम | सूर्य का सप्तवर्ग बल |
|---|---|
| लग्न | 7'.30'' षष्ठ्यंश |

| होरा | 30’’ षष्ठ्यंश |
|---|---|
| द्रेष्काण | 7’.30’’ षष्ठ्यंश |
| सप्तमांश | 7’.30’’ षष्ठ्यंश |
| नवमांश | 7’.30’’ षष्ठ्यंश |
| द्वादशांश | 7’.30’’ षष्ठ्यंश |
| त्रिंशांश | 22’.30’’ षष्ठयंश |
| योग | 1-15’-00’’ सूर्य का पूर्ण बल |

इसी क्रम में हम सभी ग्रहों का सप्तवर्ग बल साधन कर उनका प्रयोग कर सकते हैं।

**स्थान बलान्र्गत युग्मायुग्म बल** का उदाहरण- पूर्व पठित नियम के अनुसार सूर्य को विषम राशि पर 15’ कला और विषमांश में होने पर 15’ का बल प्राप्त होगा। गृहीत उदाहरण में सूर्य कर्क राशि (सम) में है अत: 0 बल मिलेगा। नवमांश में भी मीन (सम) में होने के कारण 0 बल मिलेगा। इसी प्रकार सभी ग्रहों का युग्मायुग्म बल साधन करना चाहिए।

**स्थान बलान्र्गत केन्द्रादि बल का उदाहरण-** सूर्य तृतीय अर्थात् आपोक्लिम में होने के कारण 15’’ षष्ठ्यंश का बल मिला है।

**स्थान बलान्र्गत द्रेष्काण बल का उदाहरण-** सूर्य पुरुष ग्रह है और तृतीय द्रेष्काण में है अत: 0 बल मिलेगा।

मित्रों आपने सूर्य के उदाहरण के माध्यम से स्थान बल का साधन समझ लिया होगा। सभी ग्रहों का इसी विधि से साधन करते हुए अभ्यास करना चाहिए। जिससे फल निर्णय का उत्तम अभ्यास हो जाएगा।

**अभ्यास प्रश्न-**

6- 6 राशियों का कलात्मक मान क्या है?

7- 1 राशि में कितने अंश होते हैं?

8- 10800 से भाग क्यों दिया गया है?

9- चंद्रमा सिंहराशि में हो तो युग्मबल प्रमाण क्या होगा?

10- प्रदत्त कुण्डली में गुरु का केन्द्रादि बल क्या होगा?

## 5.4 मुख्य भाग खण्ड दो

आपने अभी तक पूर्व खण्ड में स्थान बल का सोदाहरण अभ्यासकर लिया। अब हम आगे बढते हैं। इस खण्ड में हम अन्य बल विभागों का अभ्यास करेंगे। ग्रहों के षड्बल क्रम में दूसरा बल है दिक्बल। ग्रहों की कुण्डली में दिक् स्थिति के अनुसार ग्रह बल साधन किया जाता है। इसका केवल एक ही भेद है। तो आईए इसका अभ्यास करते हैं-

**दिक्बल** – ग्रह दिशाविशेष में बली होते हैं। कुण्डली में प्रथम भाव को पूर्व, चतुर्थ को उत्तर, सप्तम को पश्चिम और दशम को दक्षिण दिशा कहते हैं। तदनुगुण सभी ग्रह स्वस्व दिशा में बलवान होते हैं। उसके विपरीत भाव में होने पर 0 बल मिलते हैं। मध्य में कहीं होने पर ग्रह का बल गणित से साधन करना चाहिए। स्पष्टी करण के लिए चक्र को देखते हैं।

| क्रम | ग्रह | दिशा | भाव और बल | भाव और बल |
|---|---|---|---|---|
| 1 | सूर्य/ मंगल | दक्षिण | दशम – 1 रूप | चतुर्थ – 0 बल |
| 2 | चंद्र/ शुक्र | उत्तर | चतुर्थ- 1 रूप | दशम- 0 बल |
| 3 | बुध/गुरु | पूर्व | प्रथम-1 रूप | सप्तम- 0 बल |
| 4 | शनि | पश्चिम | सप्तम- 1रूप | लग्न- 0 बल |

उदाहरण- हम पूर्व की भांति सूर्य का उदाहरण लेते हैं। आप कुण्डली में देखें सूर्य 3 भाव में है। नियमानुसार सूर्य को दशम में होने पर 1 रूप बल और चतुर्थ में 0 बल मिलता है। यहाँ उदाहृत सूर्य तृतीय में है चतुर्थ की ओर अग्रसर है अत: उसका बल भी अत्यन्त कम होगा। उसके लिए हम साधन विधि का अभ्यास करते हैं। सूर्य और मंगल को चतुर्थ भाव से, चंद्र और शुक्र को दशमभाव से, बुध और गुरु को सप्तम भाव से, शनि को लग्न से घटा दें। जैसा कि केशव ने कहा है कि-

**मन्दात् लग्न मिनात् कुजात् च हिबुकं शोध्यं विधोर्भार्गवात्।**
**माध्यं ज्ञात् गुरुतोऽस्तमत्र रसभात् पुष्टं त्यजेत् चक्रत:।**
**दिग्वीर्यं रसहृत्वथो समयजं रूपं सदा स्याद् विद:**
**त्रिंशद् भक्तनतोन्नते शशिकुजीर्कीणां परेषां बले।।**[96]

[96] केशवीय जातक पद्धति 7

नियम- दिक् बल साधन के लिए सूर्य का उदाहरण स्वरूप अभ्यास करते हैं- सूर्य को चतुर्थ भाव से घटा दें। उच्चबल साधन की तरह षड्भाल्प कर लें। इसके बाद उसको अंशात्मक बनाकर 3 का भाग दें।[97] प्राप्त कलादि बल सूर्य का दिग्बल होगा।

$3.27.26.06 - 02.02.59.56 = 01.24.26.10,$ इसको अंशात्मक बना लें तो राशि बनेगी $\frac{54.26.10}{3}$ करने पर $18'08''43$ ये सूर्य का दिग्बल हुआ। इसी प्रकार हम अन्य ग्रहों का दिग्बल साधन किया जा सकता है।

ग्रहों के बल साधन क्रम में अब हम तीसरे बल की तरफ चलते हैं। जिसे काल बल के नाम से जाना जाता है। समयानुसार ग्रहों का बल काल बल कहलाता है। इसके 4 भेद हैं।

**कालबल-** समयाधारित बल को काल बल कहते हैं। सभी ग्रह अपने अपने समय में बली होते हैं। इसके 4 भेदों में नतोन्नतबल, पक्षबल, दिवारात्रि त्र्यंशबल, वर्षेशादिबल ये कहे गए हैं। इन चारों का योग ही काल बल कहलाता है।

तो सबसे पहले नतोन्नत बल को समझते हैं। नत+उन्नत = नतोन्नत। हम दशम लग्न साधन के संदर्भ में नत साधन सीख चुके हैं। यहाँ बल साधन में निम्न नियमों का ध्यान रखना चाहिए।

पराशरी मत से नतोन्नत बल साधन –

भौमचन्द्रशनीनां तु नता घट्यो द्विसंगुणा:।
शुद्धास्ता: षष्टितोऽन्येषां कलाद्यं तद्बलं भवेत्।
बौधं नतोन्नतबलं रूपं ज्ञेयं सदा बुधै:।।[98]

- नत घटी को दूना कर देने से चंद्र, मंगल और शनि का नतोन्नत बल आ जाता है।
- उन्नत घटिकाओं को दुगना कर देने से सूर्य, गुरु एवं शुक्र का नतोन्नत बल होता है।
- बुध का सर्वदा 1 अंश बल होता है।

अन्य नियम-

| क्रम | ग्रह | काल | बल | विपरीतकाल बल | बल का नियम |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सूर्य, बृहस्पति, शुक्र | मध्याह्न बली | 1 रूप | मध्यरात्रि- 0 बल | उन्नत/30 |

[97] भाग देने की कई विधियाँ हैं परन्तु यह विधि बहुत ही सरल है। जहाँ कहीं भी षड्भाल्प करके भाग देना हो वहाँ का भाग दिया जा सकता है। 3

[98] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 8-28, 09

| 2 | च.मं.श. | मध्यरात्रि बली | 1 रूप | मध्याह्न- 0 बल | नत/30 |
|---|---|---|---|---|---|
| 3 | बुध | दिन/रात बली | 1 रूप | हमेशा 1 रूप | हमेशा 1 रूप |

नत बल साधन उदाहरण- हमारा इष्टकाल 36/34 पलादि है। दिनमान 32/10 पलादि है। दिनमान/2 = दिनार्ध होता है। अत: 16/05 दिनार्द्ध होगा। यहाँ इष्ट दिनार्द्ध से अधिक है। इष्ट में दिनमान घटाने पर रात्रिगत घटी मिलेगी। दिनार्द्ध – रात्रिगतघटी = पश्चिम नत। 30 – पश्चिमनत = उन्नत होगा। उन्नत/30 सूर्य का बल होगा।

**कालबलान्तर्गत पक्षबल-** पक्ष के अनुसार आया हुआ बल पक्ष बल कहलाता है। पराशर ने इसका नियम बताया है कि-

चन्द्रात् शुद्धो रवि: षड्भादून: चक्रत:।
शेषांशा वह्निविहता: शुभानामुदितं द्विज।
पक्षजं बलमिन्दुज्ञशुक्रार्याणां तु षष्टित:।
शोध्यं तदेव विज्ञेयमिनारार्किसमुद्भवम्।।[99]

अर्थात्- सूर्य में चंद्रमा के राश्यादि का अन्तर करें। राश्यादि 6 राशि से अधिक होने पर 12 राशि में घटाएँ। शेष अंशादि में 3 का भाग देने से शुभ ग्रहों का अर्थात् चंद्र, बुध,गुरु और शुक्र का पक्षबल आ जाता है। प्राप्त पक्षबल को 60 कला में घटा देने से पापग्रहों सूर्य, मंगल और शनि का बल आ जता है।

उदाहरण-

सूर्य $3.27.26.06 - 08.20.55.35(\text{चं.}) = 07.07.31.31,$

इसको $12$ राशि में घटाएँ $12.00.00.00 - 07.07.31.31$

$= 04.22.28.29$ इसको अंशात्मक $120 + 22$

$$= \frac{142.28.29}{3}\ 47.29.29$$ यह चंद्रादि शुभग्रहों का बल होगा। इसी को $60$ में घटा देने से सूर्य, मंगल और शनि का बल होगा।

**कालबलान्तर्गत दिवारात्रि त्र्यंश बल-** दिन और रात के विभाजन से निकला हुआ बल दिवारात्रि बल कहलाता है।

ज्ञार्कमन्देन्दुशुक्रारा दिनरात्र्योस्त्रिभागपा:।

[99] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 10-28, 11

तत्रैतेषां बलं पूर्णं देवेज्यस्य तु सर्वदा।।[100]

अर्थात्- दिन का जन्म हो तो दिनमान का विभाजन करना चाहिए रात में जन्म हो तो रात्रिमान का प्रयोग करना चाहिए। बल विभाजन के लिए नीचे सारिणी दी जा रही है।

| क्रम | नियम | बल |
|---|---|---|
| 1 | दिन के प्रथम भाग का जन्म होने पर | बुध का 1 अंशबल |
| 2 | दिन के द्वितीय भाग में जन्म होने पर | सूर्य का 1 अंशबल |
| 3 | दिन के तृतीय भाग में जन्म होने पर | शनि का 1 अंशबल |
| 4 | रात के प्रथम भाग का जन्म होने पर | चंद्र का 1 अंशबल |
| 5 | रात के द्वितीय भाग में जन्म होने पर | शुक्र का 1 अंशबल |
| 6 | रात के तृतीय भाग में जन्म होने पर | मंगल का 1 अंशबल |
| 7 | गुरु को हमेशा | 1 अंशबल प्राप्त होता है। |

उदाहरण-32.10/3 = 10.43 ये दिनमान का प्रथम भाग है। हमारा जन्म रात्रि का है। अत: रात्रिमान/3 करते हैं। रात्रिमान 27.50 है। 27.50/3 = 09.16 ये रात्रिमान का प्रथम भाग है। इष्टकाल 36/34 पलादि है। अत: हमारा जन्म रात्रि के प्रथम भाग में हुआ सिद्ध हुआ। नियमानुसार चंद्र को 1 अंश का बल प्राप्त होता है।

**कालबलान्तर्गत वर्षेशादि/समाधि बल-**

ये चार प्रकार का होता है। जिसमें वर्षेश, मासेश, दिनेश और होरेश मिलाकर पूर्ण बल प्राप्त होता है।

वर्षमासादिनेशानां तिथित्रिंशच्छरार्णवा:।
होराधिपबलं पूर्णमितिं ज्ञेयं विचक्षणै:।।[101]

- ✓ वर्षपति का बल - 15’ कला
- ✓ मासपति का बल- 30’ कला
- ✓ दिनपतिका बल- 45’ कला
- ✓ कालहोराधिपति का बल- $1^0$अंश का बल

[100] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 12-28
[101] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 13-28

वर्षेश/मासेश साधन नियम- इसके लिए सबसे पहले अहर्गण साधन करें। अहर्गण -373/2520 करें। शेष को दो स्थानों में रखें। प्रथम स्थान में 360 का भाग दें। दूसरे में 30 का भाग दें। दोनों की लब्धियों को क्रमश: 3 और 2 से गुणा करें। गुणनफल में 1 जोड दें। प्राप्त योगफल में 7 का भाग देने पर प्रथम स्थान का शेष वर्षपति और द्वितीय स्थान का शेष मासपति होता है।

अहर्गणसाधन –

द्व्यब्धीन्द्रो नितशक ईशहृत्फलं स्यात् चक्राख्यं रवि हतशेषकं तु युक्तम्।
चैत्राद्यै: पृथगमुत: सदृघ्नचक्राद् दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम्।।
खत्रिघ्नं गततिथियुङ्निरग्रचक्रांगाशाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिषट्कलब्धै:।
ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद् वै वार: स्याच्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात्।।[102]

अहर्गण साधन विधि- इसके लिए हमें निम्न अंशों की आवश्यकता होगी। चक्र साधन, मध्यम मासगण, अधिक मासगण, मासगण, मध्यम अहर्गण, क्षयदिवस आदि

- क्रमश: हमें- चक्र = इष्ट शक $-\frac{1442}{11} =$ लब्धि चक्र होगी, शेष रख लें
- मध्यम मासगण = (शेष X 12) + गत मास (इष्टमास को छोडकर बीते हुए माह)
- अधिकमास $= (\text{चक्र}X2) + 10 + \frac{\text{मध्यममासगण}}{33}$
- मासगण $=$ मध्यम मास $+$ अधिमासगण
- मध्यम अहर्गण $= (\text{मासगण}X30) +$ गत तिथि $+ \frac{\text{चक्र}}{6}$ (लब्धि)
- क्षयदिवस $=$ मध्यम अहर्गण $\div 64$
- अहर्गण $=$ मध्यम अहर्गण $-$ क्षयदिवस
- शेषवार $= \frac{(\text{चक्र}X5) \div \text{अहर्गण}}{7}$

चलिए अब इसका अभ्यास करते हैं-

जैसे शक1835, श्रावण शुक्ल 12, बुधवार का अहर्गण निकालना है।

---

[102] ग्रहलाघवम् 4-1, 5

अहर्गण साधन नियमानुसार-

$$1835 - 1442 = \frac{393}{11}$$ लब्धि – 35 चक्र, शेष 08

शेष 8X 12 = 96 + 4 = 100 मध्यममासगण

चैत्र से गत मास आषाण तक गिनने पर 4 गत मास आए

$$\frac{(35X\,2) + 10 + 100}{33} = \frac{180}{33} = 5$$ लब्धि = अधिमासगण,

और शेष 15 अनावश्यक, 100 + 5 = 105 मासगण

$105x30 = 3150 +$ गततिथि $11 + 5 = 3166$ मध्यम अहर्गण

$$\frac{3166}{64} = 49$$ लब्धिक्षय दिवस, 3166 – 49 = 3117 स्पष्ट अहर्गण

अब अहर्गण के माध्यम से ही वर्षपति साधन किया जा सकता है जैसे-

$$\frac{\text{अहर्गण} - 373}{2520} =$$ लब्धि को दो स्थान में रखें।

- प्रथम स्थान पर - लब्धि/ 360 = लब्धि X 3 + 1 = प्रथम फल
- प्रथम फल/ 7 = वर्षपति होगा।
- द्वितीय स्थान पर - लब्धि/ 30 = लब्धि X 2 +1 = द्वितीय फल
- द्वितीयफल/ 7 = मासपति होगा।

**कालबलान्तर्गत दिनेश साधन**- जिस दिन का बल साधन करना हो वही दिन का अधिपति होगा।

**कालबलान्तर्गत होराधिपति साधन**-

वारादेर्घटिकाद्विघ्ना: स्वाक्षहृच्छेषवर्जिता:।

सैकास्तष्टा नगै: कालहोरेशा दिनपात्क्रमात्।।[103]

अर्थात्- (इष्टघटी X 2) ÷ 5 लब्धि होरा क्रम होगा। लब्धि 7 से अधिक हो तो 7 का भाग दें। शेष कालहोरेश होगा। वार क्रम ग्रहों की कक्षा क्रम के अनुसार होगा।

ग्रह कक्षा क्रम – शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध और चंद्रमा

विशेष- काल बल साधनार्थ उपर्युक्त 4 बलों का योग करें। सम्पूर्ण योग ही ग्रह का काल बल होगा।

[103] मुहूर्तचिन्तामणि 55-1

**नैसर्गिकबल**- मूलस्वभावत: ग्रहों के बल कौ नैसर्गिक बल कहते हैं। जो की सदैव एक सा रहता है।

षष्टि:सप्तहृतैकादिसप्तभिर्गुणिता तदा।
मन्दारज्ञेज्यशुक्रेन्दु सूर्याणां स्यात् स्फुटं बलम्।।[104]

अर्थात् - सारिणी द्वारा ग्रह बल स्पष्ट है।

| क्रम | ग्रह | नैसर्गिक बल |
|---|---|---|
| 1. | सूर्य | 1 अंश |
| 2. | चंद्र | 51’.26’’ |
| 3. | मंगल | 17’09’’ |
| 4. | बुध | 25’43’’ |
| 5. | गुरु | 34’17’’ |
| 6. | शुक्र | 42’51’’ |
| 7. | शनि | 8’34’7 |

**दृक् बल-** ग्रहों की दृष्टि के द्वारा दिए गए बल को दृक् बल कहते हैं। ग्रहों का दृग् बल साधन के पूर्व हमें उनकी दृष्टि स्थान को जानना चाहिए।

पादेक्षणं भवति सोदरमानराशयो: अर्धं त्रिकोणयुगलेऽखिलखेचराणाम्।
पादोन दृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे सम्पूर्णदृग्बलमनङ्गगृहे वदन्ति।। । [105]

अर्थात् – तीसरे और दसवें स्थान पर ग्रह की एकपाद दृष्टि होती है।

त्रिकोण (5,9) स्थान में ग्रह की आधी दृष्टि होती है।

चतुर्थ और अष्टम में ग्रह की त्रिपाद दृष्टि होती है।

ग्रह से सातवें स्थान में उसकी पूर्ण दृष्टि होती है।

विशेष-ग्रहों की दृष्टि के लिए प्रत्येक ग्रह के स्थान से निर्णय लिया जाताहै। जो ग्रह जिस स्थान पर बैठेगा उस स्थान से 3,10 को एकपाद, 5,9 को अर्ध दृष्टि से, 4,8 को त्रिपाद दृष्टि से और सप्तम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

[104] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 14-28
[105] जातकपारिजात 30-2

दृष्टिविशेष-

शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे, सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभ:स्यात्।
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमार: समर्थ:, सकलगगनवासा: सप्तमे दृग्बलाढ्या:।।[106]

दृष्टि बोधक चक्र

| ग्रह | सूर्य | चंद्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एकपाद | 3,10 | 3,10 | 3,10 | 3,10 | 3,10 | 3,10 | ---- |
| अर्ध | 5,9 | 5,9 | 5,9 | 5,9 | ---- | 5,9 | 5,9 |
| त्रिपाद | 4,8 | 4,8 | ---- | 4,8 | 4,8 | 4,8 | 4,8 |
| पूर्ण दृष्टि | सप्तम | सप्तम | 4,7, 8 | सप्तम | 5,7, 9 | सप्तम | 3,7, 10, |

दृग् बल साधन विधि-

दृश्य − दृष्टा = शेष राश्यादि

राशि का ध्रुवांक एवं अगला ध्रुवांक लें।(यदि अगला ध्रुवांक न्यून हो तो ऋण, अधिकहो तो धन होता है)

$$\frac{\text{शेष राश्यादि } X \text{ ध्रुवांक}}{30} = \text{लब्धि},$$

ध्रुवांक $\pm$ लब्धि $\div 4 =$ ग्रह दृष्टि बल

दृष्टि ध्रुवांक सारिणी-

| शेष राशि | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 0 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्रुवांक | 0 | 1 | 2 | 3 | 0 | 4 | 3 | 2 | 1 | 0 | 0 | 0 |

सूर्य का उदाहरण स्वरूप दृष्टि साधन करते हैं- यहाँ सूर्य दृष्टा और सभी ग्रह दृश्य होंगे।

$$8.20.55.35 - 3.27.23.06 = 4.03.32.29$$

---

[106] जातकपारिजात 31-2

यहाँ 4 राशि शेष है इसका ध्रुवांक लिया -2

अगला ध्रुवाकं छोटा है अत: ऋण होगा। -0

इन दोनों का अंतर करें। प्राप्त फल 02।

$$\frac{4.03.32.29X2}{30} = \frac{7.04.58}{30} = 14.09.56$$

$$02.00.00.00 - 14.09.56 = \frac{1.45.50.04}{4}$$

$= 0.26.27.31$ यह सूर्य की चंद्र पर दृष्टि निकली।

इसी प्रकार अन्य ग्रहों पर सूर्य की दृष्टि का साधन करें। तदुपरान्तसभी ग्रहों की इसी क्रम में दृग बल निकालें।

**धनात्मक/ऋणात्मक दृग् बल साधन-** इसका तात्पर्य यह है कि ग्रह पर पाप या शुभ दृष्टि की मात्रा कितनी है।

शुभाशुभदृशां पादैर्युगयुक् तु बलैक्यम्।
ज्ञेज्यदृष्टियुतं तर्हि स्फुटं ग्रहबलं स्मृतम्।।[107]

अर्थात्- ग्रहों पर दो प्रकार की दृष्टि होती है। पाप दृष्टि और शुभ दृष्टि।

यदि शुभ दृष्टि अधिक हो तो शुभदृष्टि $\div 4 =$ शुभ दृष्टि चतुर्थांश

शुभ दृष्टि चतुर्थांश $-$ पापदृष्टि चतुर्थांश $=$ शेष $+$ दृग् बल होगा

यदि पाप दृष्टि अधिक हो तो पाप दृष्टि $\div 4 =$ पाप दृष्टि चतुर्थांश

पाप दृष्टि चतुर्थांश $-$ शुभदृष्टि चतुर्थांश $=$ शेष $+$ दृग् बल होगा

अभ्यास प्रश्न-

11-वर्षपति का बल प्रमाण लिखें 15’ कला

12-दिवारात्रि बल में गुरु को कितना बल मिलता है – 1 रूप बल

13-नतोन्नत बल क्रम में बुध का बल कितना होताहै - सर्वदा 1 अंश बल होता

14-नैसर्गिक बल में सूर्य का बल कितना होता है -1 अंश

[107] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 19-28

15- मंगल की पूर्ण दृष्टि किस स्थान पर होती है - 4,7,8

## 5.4 मुख्य भाग तीन

**अयनबल-** चेष्टाबल साधन के लिए पहले अयन बल, चेष्टाकेन्द्रादि निकालना पडता है। अयन बल साधन के पूर्व ग्रहों की क्रान्ति का साधन करें। ग्रहों की उत्तर और दक्षिण 2 क्रान्ति होती है। उसके बाद उसका अयन बल साधन करें।

उत्तर क्रान्ति - सायनराशि मेष से कन्यान्त तक

दक्षिणक्रान्ति- सायनराशि कन्या से मीनान्त

शराब्धयो ऽमरा: सूर्या:खण्डका: सायनग्रहा:।
तद्दोराशिसमा ,खण्डयुतिर्भोग्यसमाहतात्।
अंशादिकात् खरामाप्तयुता अंशादयो मता:।
सायने तुलमेषादौ धनर्णं शनिचन्द्रयो:।
राशित्रये तथा ज्ञे तु धनं व्यस्तं तु शेषके।
तदंशा विहता रामै रायनं बलमीरितम्।।[108]

अर्थात्- 45, 33,12 ये तीन खण्ड होते हैं। आयनबल ज्ञान के लिए सायनग्रह के भुज बनाएँ। इसमें राशितुल्य खण्डों का योग करें। अंशादि शेष को भोग्य खण्ड से गुणा कर 30 से भाग दें। लब्धि को राशितुल्य खण्डों के योग में जोडकर अंशादि बना लेना चाहिए। फिर सारिणी के माध्यम से 3 राशि का संस्कार कर 3 का भाग देने पर अयन बल प्राप्त होताहै।

| क्रम | ग्रह | नियम |
|---|---|---|
| 1 | सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र के लिए | तुलादि = (3 राशि – अंश ) = सब के अंश बनाकर ÷ 3<br>मेषादि = (3 राशि + अंश ) = सब के अंश बनाकर ÷ 3 |
| 2 | शनि,चंद्र | तुलादि = (3 राशि + अंश ) = सब के अंश बनाकर ÷ 3<br>मेषादि = (3 राशि – अंश ) = सब के अंश बनाकर ÷ 3 |
| 3 | बुध हमेशा | (3 राशि + अंश ) = सब के अंश बनाकर ÷ 3 |

अयन बल साधनार्थ सबसे पहले ग्रह का भुजांश साधन करें।

[108] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 15-28,16, 17

- ❖ ग्रह 3 राशि के अंदर हो तो वही भुजांश होगा।
- ❖ 3से 6 राशि के अंदर होने पर 6 राशि से घटाने पर प्राप्त अंशादि ही भुजांश होगा।
- ❖ 6से 9 के अंदर होने पर 9 से घटानेपर भुजांश होगा।
- ❖ 9से 12 के बीच में 12 से घटाने पर भुजांश होगा।

उदाहरण- हमारा सायनसूर्य है, 4.21.59.46 ये तीन से अधिक है अत: 6 राशि से घटाएँगे।

सूर्य $3.27.26.06 + 24.33.40 = 4.21.59.46$। $06.00.00.00 - 4.21.59.46 =$ भुजांश $01.08.00.14$

- अब भुजांश 08.00.14 X 33 = 264.07.42 प्राप्त हुए।
- अब $\frac{264.07.42}{30} = 08.48.15$
- अब इसमें पूर्व खण्ड का अंश जोडें $- \ 08.48.15 + 45.00.00 = 53.48.15$ अर्थात् $- \ 01.23.48.15$
- सायन सूर्य मेषादि कन्यान्त में है इसलिए 3 राशि जोडेंगे। $03.0.0.0 + 1.23.48.15 = 4.23.48.15$
- इसको अंशादि बनाने पर - $4.23.48.15 = 4x30 + 23.48.15 = 143.48.15 \div 03 =$
- सूर्य का अयन बल $47.56.15$ प्राप्त हुआ।

ग्रन्थान्तरों में सभी के बलादि साधन के लिए सारिणी दी गईं तदर्थ हम उन ग्रन्थों का भी अनुशीलन कर सकते हैं।

मध्यम ग्रह - अहर्गण के माध्यम से मध्यम ग्रह साधन कर लेना चाहिए। ग्रह लाघवादि ग्रन्थों का सम्यक् अनुशीलन करन पर हमें मध्यम ग्रह साधन आ जाएगा। यहाँ कल्पित मध्यम ग्रह दिया जा रहा है-

मध्यम ग्रह

| ग्रह | सूर्य | बुध | शुक्र | चंद्र | चंद्रोच्च | मंगल | बुध केन्द्र | शुक्र केन्द्र | गुरु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | 3 | 3 | 3 | 08 | 10 | 11 | 07 | 08 | 09 | 01 |
| अंश | 28 | 28 | 28 | 15 | 28 | 27 | 24 | 11 | 00 | 20 |
| कला | 43 | 43 | 43 | 52 | 26 | 11 | 16 | 13 | 49 | 06 |

| विकला | 10 | 10 | 10 | 49 | 35 | 44 | 53 | 09 | 31 | 01 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

विशेष- जो ग्रह वक्री होते हैं उन्हीं का चेष्टा केन्द्र निकाला जाता है।

- सूर्य और चंद्रमा का चेष्टा केन्द्र नहीं होता है।
- कहीं कहीं शीघ्रोच्च का उपयोग करते हुए चेष्टाकेन्द्रादि का साधन किया गया है।[109] अत: उसको समझने के लिए निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखें।
- मं,गु, और शनि का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य होता है।
- बुध का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य +बुध शीघ्रकेन्द्र होता है।
- शुक्र का शीघ्रोच्च = मध्यम सूर्य + शुक्र शीघ्रकेन्द्र होता है।
- सूर्य का अयन बल ही चेष्टाबल होता है।
- चंद्रमा का पक्ष बल ही चेष्टाबल होता है।
- बल साधन में केवल भौमादि पंच ताराग्रहों का प्रयोग किया जाता है।

**चेष्टाकेन्द्र साधन-** मध्यमस्पष्टराश्यादिग्रहयोग दलोनितम्।
स्वस्वशीघ्रोच्चकं षड्भाधिकं चक्राद् विशोधितम्।
चेष्टाकेन्द्रं कुजादीनां ,भागीकृत्य त्रिभिर्भजेत्।।
चेष्टाबलं भवति यत् बलमेवं तु षड्विधम्।
स्थानजं दिग्भवं कालदृष्टिचेष्टानिसर्गजम्।।[110]

अर्थात्- चेष्टा बल साधन के पूर्व चेष्टा केन्द्र साधन करना अनिवार्य होता है।

मंगल, गुरु और शनि का चेष्टा केन्द्र = **मध्यम सूर्य** $-\frac{\text{मध्यमग्रह} + \text{स्पष्टग्रह}}{2}$

बुध का चेष्टा केन्द्र= **मध्यम सूर्य** + **बुधकेन्द्र**$-\frac{\text{मध्यमसूर्य} + \text{स्पष्टबुध}}{2}$

शुक्र का चेष्टा केन्द्र = **मध्यम सूर्य** + **शुक्र केन्द्र** $\frac{\text{मध्यमसूर्य} + \text{स्पष्टशुक्र}}{2}$

---

[109] केशवीय जातक पद्धति

[110] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 24-28,25

जैसे- यहाँ मंगलका चेष्टा केन्द्र साधन करतेहैं।

$11.27.11.44 + 01.16.27.58 = 13.13.39.42 \div 2 =$
$06.21.49.51$ योगार्ध

मध्यम सूर्य $03.28.43.10 - 06.21.49.51$ योगार्ध $= 09.6.53.19 =$
मंगल चेष्टाकेन्द्र

**चेष्टाबल साधन विधि-**

यदि चेष्टाकेन्द्र , 6 राशि से अधिक हो तो 12 राशि – चेष्टाकेन्द्र/ 3 = चेष्टाबल

यदि चेष्टाकेन्द्र , 6 राशि से कम हो तो चेष्टाकेन्द्र/ 3 = चेष्टाबल

सूर्य का अयन बल ही चेष्टाबल है।

चंद्रमा का पक्ष बल ही चेष्टाबल है।

उदाहरण-

मंगल चेष्टाबल $= 12.00.00.00 - 09.6.53.19 = 02.23.06.41 =$
अंशादि बनाने पर $83.06.41 \div 3 = 27.42.13$ मंगल चेष्टाबल

**स्फुट चेष्टाबल नियम**- चेष्टाबल + अयन बल

**युद्ध बल**- दो ग्रह जब परस्पर एक ही अंशादि पर होते हैं तो उनका युद्ध बल होता है। उसके लिए पाराशर कहतेहैं कि-

मिथ: संयुतघ्यतोस्ताराग्रहयोर्यद् बलान्तरम्।
धनं बले विजेतुस्तन्निर्जितस्य बलेन्यथा। ।[111]

दोनो लडनेवाले ग्रहों का बल निकालने पर जिसका बल कम हो वह हारा हुआ ग्रह होता है। बाद में दोनों का अंतर कर लें उसे हारे हुए ग्रह के पूर्ण बल से घटा दें। प्राप्त फल को जीते हुए ग्रह से जोड दें। वही युद्ध बल होगा।

- सूर्य के साथ रहने पर ग्रह अस्तहो जाता है अत: युद्ध बल नहीं निकलेगा।

[111] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 20-28

- चंद्रमा के साथ रहनेपर ग्रह समागम हो जाता है अत: युद्ध बल नहीं निकलेगा।

**गति बल साधन चक्र**- वस्तुत :चेष्टा से तात्पर्य ग्रहों की गति से है। ग्रहों की गति मुख्यत: 8 प्रकार की कही गई है-

वक्रातिवक्रा विकला मन्दा मन्दतरा समा।
तथा शीघ्रतरा शीघ्रा ग्रहाणामष्टधागति:।।[112]

अर्थात- वक्र, अतिवक्र, विकला,मन्द, मन्दतर, सम, शीघ्रतर और शीघ्र ये 8 प्रकार की गतियाँ कही गई हैं। प्रचलन में हमें मुख्यत: 2 प्रकार की गतियों का ही ज्ञान हो पाता है। वक्री और मार्गी।

षष्टिर्वक्रगतेर्वीर्यमनुवक्रगतेर्दलम्।
पादो विकलभुक्ते: स्यात् समायास्तु दलं स्मृतम्।
पादो मनदगतेस्तस्य दलं मनदतरस्य च।
शीघ्रभुक्तेस्तु पादोनं दलं शीघ्रतरस्य तु।।[113]

अर्थात्-

| क्रम | ग्रह | बल प्रमाण |
|---|---|---|
| 1 | वक्र ग्रह | 1 रूप |
| 2 | अति वक्र | 30’ कला |
| 3 | विकल ग्रह | 15’ कला |
| 4 | मध्यगतिक ग्रह | 30’ कला |
| 5 | मन्दगतिक ग्रह | 15’ कला |
| 6 | मन्दतर ग्रह | 7’ 30’’ |
| 7 | शीघ्रगतिक ग्रह | 45’ |
| 8 | अतिशीघ्र ग्रह | 30’ |

मित्रों इस प्रकार हमने ग्रहों का षड्बल के नियम व साधन का अभ्यास किया। प्रथमत: देखने में थोडी कठिनाई होती है परन्तु अभ्यास से यह सरल लगने लगता है। अत: पूर्ण मनोयोगसेइसका अभ्यास करें। इस क्रम में आगे बढते हुए हम अब भावों के बल का अभ्यास करेंगे।

[112] सूर्यसिद्धान्त 12-2
[113] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 22-28,23

अभ्यास प्रश्न-

16- भुजांश कितने अंश का होता है?

17-ग्रहों की गति कितने प्रकार की होती है ?

18-किस किस ग्रह के साथ रहने पर युद्ध बल नहीं निकलता है ?

19-उत्तर क्रान्ति कब होती है ?

20- चंद्रमा का चेष्टाबल क्या है ?

## 5.5 मुख्यभाग खण्ड चार

प्रिय सुधी जनों हमने पूर्व खण्डों में ग्रहों के षड्बल का सोदाहरण ज्ञान प्राप्त किया। ग्रहों के बल को जानने के बाद हमें भावों का बल भी जानना चाहिए। इन दोनों बलों के सामञ्जस्य से ही हम फल निर्णय ले सकते हैं। तो चलिए बल स्पष्ट ज्ञान की इस यात्रा में हम भावों के बल भेद व साधन नियमों को समझते हैं-

भाव बल मुख्यत: 3 प्रकार का होता है- भावस्वामी बल, भाव दिक् बल और भाव दृग्बल

1- भाव के स्वामी का जो षड्बल होता है वह भाव स्वामी बल कहलाताहै।

2- भाव के दिशा से निकाला गया बल भाव दिक् बल होता है।

3- भाव पर पडने वाली शुभ या पाप ग्रहों की दृष्टि के अनुसार निकाला गया बल भाव दृग्बल कहलाता है।

**पराशर के अनुसार भावबलसाधन**

**ग्रहाणां बलमित्युक्तं श्रृणु भावबलं पुन:।**
**द्वन्द्वकन्यातुलाधन्विपूर्वार्धघटतोऽस्तभम्।**
**सुखं गोऽजमृगाद्यार्धसिंहचापोत्तरार्धत:।**
**कर्कालितस्तनुं, खं तु मीनान्नक्रान्तिमार्धत:।**
**विशोध्यांगाधिकं तच्चेच्छोध्यमर्काल्लवीकृतम्।**
**त्रिभक्तं सदसद् दृष्टिपादयुक्तोनितं क्रमात्।**
**बुधेज्यदृग्युतं तत्तु स्वस्वेशबलसंयुतम्।।**
**स्फुटं भावबलं चैतदन्यत्तु प्रागुदीरितम्।।**[114]

अर्थात्- ग्रहों के बल साधन के बाद अब पाराशर भावों के बल का विधान कर रहे हैं-

[114] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 29 से 26-28

| क्रम | राशि विशेष | क्रिया |
|---|---|---|
| 1 | मिथुन, कन्या, तुला,धनु का पूर्वार्द्ध और कुम्भ का बल साधनार्थ | इनमें से सप्तम को घटाएँ |
| 2 | मेष, वृष, मकर का पूर्वार्द्ध और सिंह, धनु का उत्तरार्द्ध के लिए | इनमें से चतुर्थ भाव को घटाएँ |
| 3 | कर्क और वृश्चिक के लिए | इनमें से लग्न घटाएँ |
| 4 | मकरोत्तरार्द्ध और मीन के लिए | इनमें से दशम भाव घटाएँ |

शेष 6 से अधिक हो तो 12 से घटाकर अंशादि बना लें।

$$\text{अंशादि भाव} \div 3 + \frac{\text{शुभग्रह दृष्टि}/\text{पापग्रहदृष्टि}}{4} = \text{प्राप्त फल}$$

प्राप्त फल $+$ भावस्वामी बल $=$ भाव स्फुट बल होगा।

विशेष- यदि बुध, गुरु और शुक्र की दृष्टि हो तो उसको भी यहाँ जोड दें।

**भावबल साधन में विशेष-**

**विदिज्योपेतभावस्य बलमेकेन संयुतम्।**
**मन्दाररवियुक्तस्य बलमेकेन वर्जितम्।**
**दिवाशीर्षोदयाश्चैव सन्ध्यायामुभयोदया:।।**
**नक्तं पृष्ठोदयाश्चैव दद्युरंघ्रिमितं बलम्।।**[115]

अर्थात्- प्राप्त भाव फल पर अन्य योग किए जानेवालेअंशो को पाराशर स्पष्ट कर रहे हैं।

| **क्रम** | **स्थिति** | **योजनीय बल** |
|---|---|---|
| 1 | यदि भाव बु.गु. से युक्त हो तो | बल में 1 अंश जोड दें। |
| 2 | यदि भाव पाप युत हो तो | बल में 1 अंश घटा दें। |
| 3 | दिन का जन्म हो तो | शीर्षोदय वाले राशि भाव पर1 और जोड दें। |
| 4 | रात का जन्म हो तो | पृष्ठोदय वाले राशि भाव पर1 और जोड दें। |
| 5 | सन्ध्या को जन्म हो तो | उभयोदय वाले राशि भाव पर1 और जोड दें। |

[115] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 30-28, 31

**ग्रहो का सुबलत्वादि निर्णय**- अब सर्वविध बल साधन के बाद ग्रहों का श्रेष्ठ बलादि का निर्णय करने का नियम बताया जा रहा है।

**अंगाग्नयोऽङ्गरामाश्च खरसा: करसिन्धव:।**
**नवाग्नय: क्षुरा:शून्याग्नयो दिग्गुणिता: क्रमात्।।**
**चेद्बलैक्यमिनादीनां ज्ञेया: सुबलिनस्तदा।**
**ततोऽपि च बलाधिक्ये पूर्णतो बलिनो मता:।**[116]

भावार्थ – ग्रहों का षड्बल में प्राप्त बल को कलादि बना लें।

| क्रम | ग्रह | कलात्मक बल |
|---|---|---|
| 1 | सूर्य | 390 |
| 2 | चंद्र | 360 |
| 3 | मंगल | 300 |
| 4 | बुध | 420 |
| 5 | गुरु | 390 |
| 6 | शुक्र | 330 |
| 7 | शनि | 300 |

यदि सारिणी प्रदत्त बल ग्रह को मिला है तो सुबल। इससे अधिक मिला है तो पूर्ण बल समझना चाहिए। कम होने पर क्रमश:मध्यबली और अल्पबली समझें।

**भाव बल के फल विशेष का चिन्तन-**

**एवं कृते बलैक्ये तु फलं वाच्यं सदा बुधै:।**
**भावस्थानग्रहै: प्रौक्तयोगे ये योगहेतव:।**
**बली तेषु च य: कर्त्ता स एवास्य फलप्रद:।**
**योगेष्वाप्तेषु बहुसु न्याय एवं प्रकीर्तित:।।**[117]

पराशर कहते हैं कि इस तरह सर्व विध बल का ज्ञान करने के बाद सबसे बली शुभ ग्रहा को योग कारक मानना चाहिए। वही योग कारक ग्रह अपने दशा गोचरादि में जातक को सम्पूर्ण शुभफल प्रदान करेगा।

[116] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 32-28,33
[117] बृहत्पाराशर होराशास्त्रम् 37-28, 38

अभ्यास प्रश्न

21- भाव बल क्या है?

22-भाव कितनेहोते हैं?

23-सभी ग्रहों की पूर्ण दृष्टि किस भाव पर होती है?

24-यदि भाव बु.गु. से युक्त हो तो भावबल में क्या करना चाहिए?

25- सूर्य कितने कला के बल में सुबली होता है?

## 5.6 सारांश

हमने इस पाठ के द्वारा ग्रहों के 6 प्रकार के बलों को जाना। ये क्रमश:- स्थान, दिक्, काल, नैसर्गिक, दृग् और चेष्टा बल के नाम से जाने जाते हैं। जिसमें स्थान बल के उच्चादि, सप्तवर्ग, ओजादि, केन्द्रादि और द्रेष्काण 5 भेद हैं। जिनका हमने सोदाहरण अभ्यास किया। इसी तरह दिक् बल एक प्रकार का और काल बल नतोन्नत, पक्ष,दिवारात्रि और वर्षेशादि बल से 4 प्रकार का है। नैसर्गिक बल और दृक् बल भी एक-एक प्रकार के हैं। अन्तिम चेष्टाबल भी एकप्रकार का है परन्तु उसके अन्दर हमें अयन, क्रान्ति, अहर्गण और मध्यम ग्रह साधन की आवश्यकता होती है। सूर्य का अयन बल और चंद्रमा का पक्षबल ही चेष्टाबल होता है। अन्य सभी ग्रहों का चेष्टाकेन्द्र साधन करके उसको 3 से भाग देने पर मध्यम चेष्टाबल प्राप्त होता है। अयन बल + मध्यम चेष्टाबल = स्पष्ट चेष्टाबल होता है। दो परस्पर एक ही राश्यादि में रहने वाले ग्रहों का युद्ध का ज्ञानभी हमने प्राप्त किया। सूर्यके साथ रहनेवाला अस्त और चंद्रमा के साथ समागम होता है। अत: इन दोनों का युद्ध बल नहीं निकाला जाता है। ग्रहों की 8 प्रकार की गति का ज्ञानकरते हुए सभी का बल ज्ञान भी हमने किया।

ग्रहों के बल को जानने के बाद हमने भावों के बल का भी पाठ के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया। जिसमें सबसे बली शुभ ग्रहा को योग कारक मानना चाहिए। वही योग कारक ग्रह अपने दशा गोचरादि में जातक को सम्पूर्ण शुभफल प्रदान करेगा। यह पाठ फलादेश व ग्रहों के बल की दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। अत: पुन:पुन: अभ्यास के द्वारा इसका प्रयोग आपके हितार्थ होगा।

## 5.7शब्दावली

भुज-सबसे समीप सम्पात बिन्दु से सूर्य के अंतर को भुज कहते हैं। यह 3 राशि अर्थात् 90 अंश से कभी अधिक नहीं होता है।

| | |
|---|---|
| क्रान्ति- | उत्तर और दक्षिणक्रान्ति |
| सायन सूर्य- | सूर्य स्पष्ट + अयनांश |
| अहर्गण- | दिनों का समूह |
| होरा- | राश्यर्द्धं होरा। राशि का आधा भाग होरा होता है। 30/2 |
| द्रेष्काण- | राशि का तीसरा भाग 30/03 |
| सप्तमांश- | राशि का सातवां भाग 30/07 |
| नवमांश- | राशि का नवां भाग 30/9 |
| द्वादशांश- | राशि का बारहवां भाग 30/12 |
| त्रिंशांश- | 5 भाग विषम/ सम दोनों में |
| रूप बल - | 1 अंश का |
| दृष्टा– | देखने वाला |
| दृश्य- | जिसको देखा जा रहा है। |
| चेष्टा– | गति वैविध्यता |
| दिक्- | दिशा |
| दृग - | दृष्टि |

## 5.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1- ग्रहों का बल कितने प्रकार का होता है? – 6 प्रकार का
2- मूलत्रिकोणस्थ ग्रह का प्रमाण कितना है? - 45 षष्ठ्यंश
3- पुरुष ग्रहपुरुष राशि में हों तो ओजादि बल प्रमाण लिखें। - 15 षष्ठ्यंश
4- आपोक्लिम भावस्थ ग्रह का बलप्रमाण कितना है? - 15 षष्ठ्यंश
5- मित्रवर्गस्थ ग्रह का बलप्रमाण लिखें – 15 षष्ठ्यंश
6- 6 राशियों का कलात्मक मान क्या है? - 10800
7- 1 राशि में कितने अंश होते हैं? - 30
8- 10800 से भाग क्यों दिया गया है? – 6 राशि का अनुपात जानने के लिए
9- चंद्रमा सिंहराशि में हो तो युग्मबल प्रमाण क्या होगा? - 0 बल
10-प्रदत्त कुण्डली में गुरु का केन्द्रादि बल क्या होगा? - 30 षष्ठ्यंश

11- वर्षपति का बल प्रमाण लिखें 15’ कला

12- दिवारात्रि बल में गुरु को कितना बल मिलता है – 1 रूप बल

13- नतोन्नत बल क्रम में बुध का बल कितना होताहै - सर्वदा 1 अंश बल होता

14- नैसर्गिक बल में सूर्य का बल कितना होता है -1 अंश

15- मंगल की पूर्ण दृष्टि किस स्थान पर होती है - 4,7,8

16- भुजांश कितने अंश का होता है? - 90 अंशों का

17- ग्रहों की गति कितने प्रकार की होती है ? - 8 प्रकार की

18- किस किस ग्रह के साथ रहने पर युद्ध बल नहीं निकलता है ?- सूर्य और चंद्रमा के साथ रहने पर

19- उत्तर क्रान्ति कब होती है ? - सायन सूर्य के मेष से कन्यान्त तक

20- चंद्रमा का चेष्टाबल क्या है ? - पक्षबल ही चेष्टा बल है।

21- भाव बल क्या है? - भाव, भाव स्वामी आदि का बल

22- भाव कितनेहोते हैं? -12

23- सभी ग्रहों की पूर्ण दृष्टि किस भाव पर होती है? - 7 स्थान पर

24- यदि भाव बु.गु. से युक्त हो तो भावबल में क्या करना चाहिए?- 1 अंश और जोड दें।

25- सूर्य कितने कला के बल में सुबली होता है? -390 कला में

## 5.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

❖ बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी

❖ ग्रहलाघवम् – गणेश दैवज्ञ- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

❖ सूर्य सिद्धान्त –व्याख्याकार- कपिलेश्वर- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

❖ केशवीयजातक पद्धति- केशव- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

❖ भारतीय ज्योतिष- नेमिचन्द्र शास्त्री – भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली ।

❖ मुहूर्त चिन्तामणि- रामदैवज्ञ- व्याख्याकार- केदारदत्तजोशी - मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

❖ फलदीपिका- मन्त्रेश्वर- गोपेश ओझा- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।

## 5.10 सहायक/ उपयोगी पाठ्यसामग्री

9- बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी
10-ग्रहलाघवम् – गणेश दैवज्ञ- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
11-सूर्य सिद्धान्त –व्याख्याकार- कपिलेश्वर- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
12-केशवीयजातक पद्धति- केशव- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
13-भारतीय ज्योतिष- नेमिचन्द्र शास्त्री – भारतीय ज्ञान पीठ दिल्ली ।
14-मुहूर्त चिन्तामणि- रामदैवज्ञ- व्याख्याकार- केदारदत्तजोशी - मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
15-फलदीपिका- मन्त्रेश्वर- गोपेश ओझा- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
16-सारावली –कल्याणवर्मा – व्याख्याकार-डॉ.मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
17-जातकपारिजात- वैद्यनाथ - व्याख्याकार-गोपेश ओझा, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
18-भावमंजरी- पं. मुकुन्द दैवज्ञ- व्याख्याकार-डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
19-जैमिनि सूत्र-जैमिन- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
20-बृहत्पाराशर- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.देवेन्द्र नाथ झा, चौखम्बा वाराणसी
21-लघुपाराशरी- पराशर- व्याख्याकार- डॉ.सुरेश चंद्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।
22-बृहज्जातकम् –बाराहमिहिर- व्याख्याकार- मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली।
23-उत्तरकालामृत- कालिदास- व्याख्याकार- जगन्नाथ भसीन, रंजन पब्लिकेशन नई दिल्ली।

## 5.11 निबंधात्मक प्रश्न

1- ग्रहों का स्थान बल साधन करें।
2- ग्रहों का चेष्टा बल साधन करें।
3- शक 1938 माघ कृष्ण चतुर्दशी गुरुवार का अहर्गण साधन करें।
4- काल बल की सोदाहरण विवेचना करें।
5- ग्रह एवं भाव बल के साधन की आवश्यकता एवं विधि पर एक निबंध लिखें।

# खण्ड - 2

# वर्ग एवं अवस्था

# इकाई - 1 षडवर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग विवेचन

इकाई की संरचना

## 1.1 प्रस्तावना

द्वितीय खण्ड – 'वर्ग एवं अवस्था' की प्रथम इकाई में आप सभी ज्योतिषशास्त्र के शिक्षार्थियों का स्वागत है। इस इकाई का शीर्षक है – षडवर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग विवेचन। इससे पूर्व की इकाईयों में आप लोगों ने होरा शास्त्र के आरम्भिक विषयों का अध्ययन कर लिया है। अब आप षडवर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं।

कुण्डली निर्माण प्रक्रिया तथा फलादेशादि में इन वर्गों की जानकारी परमावश्यक है। वस्तुत: षड्वर्ग में गृह या लग्न से लेकर त्रिशांश पर्यन्त 6 वर्ग, सप्तवर्ग में सप्तमांश के साथ 7 एवं दशवर्ग के अन्तर्गत दस वर्ग होते हैं। वर्ग को 'कोष्ठक' आदि के नाम से भी जाना जाता है।

आचार्यों ने फलादेशादि कथन में सूक्ष्मता के दृष्टिकोण से इन वर्गों का अपने-अपने ग्रन्थों में उल्लेख किया है। आइए हम सब भी उक्त वर्गों का विस्तृत अध्ययन इस इकाई के अन्तर्गत करने का प्रयास करते है।

## 1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप जान लेगें कि –

- षड्वर्ग किसे कहते है।
- षड्वर्ग का क्या महत्व है तथा इसका साधन कैसे करते है।
- सप्तवर्ग से क्या तात्पर्य है।
- सप्तवर्ग एवं दशवर्ग का बोध कैसे करते है।
- कुण्डली निर्माण प्रक्रिया एवं फलादेश कथन में षड्वर्ग-सप्तवर्ग एवं दशवर्ग का क्या योगदान है।

## 1.3 षड्वर्ग एवं सप्तवर्ग परिचय

**षड्वर्ग –**

आप सभी को यह ज्ञात होना चाहिए कि षड्वर्ग का सम्बन्ध होरा या फलित ज्योतिष से ही नहीं, अपितु ज्योतिषशास्त्र के प्रत्येक स्कन्धों से है। प्रत्येक स्कन्धों में इसका विवेचन मिलता है। इसके ज्ञान के बिना हम कुण्डली का सम्यक् विश्लेषण नहीं कर सकते हैं। राशियों के परिज्ञान के साथ-साथ ग्रहों के बलाबल आदि जानकारी हेतु आचार्यों द्वारा इनका प्रतिपादन किया गया है। अत: आइए हम सब उसका विस्तार से अध्ययन करते है।

सर्वप्रथम षड्वर्ग क्या है? इसका विचार करते है तो 'षड्' का शाब्दिक अर्थ होता है – 6 एवं वर्ग को

कोष्ठक के नाम से भी जानते है। इस प्रकार जहाँ 6 कोष्ठक या 6 प्रकार के वर्गों (गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश एवं त्रिशांश) का उल्लेख हमें मिलता है सामान्यतया उसे हम 'षड्वर्ग' कहते है। ग्रहों की षडवर्ग संज्ञा होती है। राशियों में वर्ग परिज्ञान हेतु इनका निर्माण आचार्यों द्वारा किया गया है। फलादेश कर्तव्य में षडवर्ग के ज्ञान से हमें सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त होती है। इन्हीं षड्वर्ग में राशि के सातवें भाग अर्थात् सप्तमांश को जोड़ देने से सप्तवर्ग का निर्माण हो जाता है।

**षड्वर्ग विचार: -**

**गृहं होरा च द्रेष्काणो नवांशो द्वादशांशक:।**
**त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजा: शुभा:।।**

गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश तथा त्रिशांश का षड्वर्ग में समावेश होता है। सप्तक वर्ग के लिए सप्तमांश विशेष रहता है।

### 1.3.1 विभिन्न होरा या फलित ग्रन्थानुसार षड्वर्ग विचार –

षड्वर्ग के अन्तर्गत ग्रहों के 6 वर्ग या कोष्ठक है- गृह या लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश एवं त्रिशांश। वस्तुत: ये सभी अत्यन्त महत्वपूर्ण है और ये सभी शुभ कर्मों में प्रशस्त कहे गये हैं। ग्रहों की षडवर्ग संज्ञा का उल्लेख करते हुए आचार्य वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ लघुजातक में कहा है कि –

**गृहहोराद्रेष्काणा नवभागो द्वादशांशकस्त्रिश:।**
**वर्ग: प्रत्येतव्यो ग्रहस्य यो यस्य निर्दिष्ट:।।**

अर्थात् जिस ग्रह के जो गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश कहे गये हैं, वे उस ग्रह के वर्ग समझे जाते हैं। यह गृहादि षड्वर्ग है। षडवर्ग के अन्तर्गत विशेष रूप में हमें यह जानना चाहिए कि सूर्य एवं चन्द्रमा का त्रिशांश नहीं होता है तथा भौमादि पाँच ग्रहों (तारा ग्रहों) की होरा नहीं होती है। आगे हम इसका और विस्तार से अध्ययन करेंगे।

**वृहज्जातकम् ग्रन्थ के अनुसार षड्वर्ग –**

**द्रेष्काणहोरानवभागसंज्ञास्त्रिंशांशक द्वादशसंज्ञिताश्च।**
**क्षेत्रं च यद्यस्य स तस्य वर्गो होरेति लग्नं भवनस्य चार्द्धम्।।**

श्लोकार्थ है कि ग्रहों के 6 वर्ग होते हैं, द्रेष्काण, होरा, नवमांश, त्रिशांश, द्वादशांश और लग्न या गृह। ग्रहों के जो द्रेष्काणादि कहे गये हैं वे उनके वर्ग होते है। यही द्रेष्काणादि षडवर्ग कहे जाते है। इन षडवर्गों में सूर्य-चन्द्र का त्रिशांश नहीं होता तथा भौमादि पंचतारा ग्रहों की होरा नहीं होती। इस तरह ग्रहों की पाँच ही वर्ग होते है। होरा राशि के आधे भाग को कहते है। अर्थात् लग्न के आधे भाग को

कहते है। यदि लघुजातक एवं वृहज्जातकम् दोनों में तुलना करके देखा जाय तो दोनों में एकसमानता है। दोनों ग्रन्थों के ग्रन्थकार एक ही आचार्य वराहमिहिर है। इसीलिए कोई विशेष अन्तर दोनों में दिखलाई नहीं पड़ता।

**वृहत्पराशरहोराशास्त्र में कथित षड्वर्ग** –

लग्नहोरादृकाणांकभागसूर्यांशका इति।
त्रिशांशकश्च षडवर्गा अत्र विंशोपका: क्रमात्।।
रसनेत्राब्धिपंचाश्विभूमय: सप्तवर्गके।।

आचार्य पराशर ने भी षडवर्ग के अन्तर्गत लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश एवं त्रिशांश को ही षड्वर्ग बतलाया है। विशेषत: इनमें क्रम से 6,2,4,5,2,1 इतने विंशोपक बल होते हैं, ऐसा उनका कथन है। **जातकपारिजात ग्रन्थ के अनुसार षडवर्ग –**

विलग्नहोराद्रेष्काणनवांशद्वादशांशका:।
त्रिशांशकश्च षडवर्ग: शुभकर्मसु शस्यते।।
सप्तांशयुक्त: षडवर्ग: सप्तवर्गोऽभिधीयते।
जातकेषु च सर्वेषु ग्रहाणां बलकारकम्।।

यहाँ ग्रन्थकार आचार्य वैद्यनाथ का कथन है कि लग्न (वह राशि जिसमें ग्रह स्थित हो), होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश इन छ: वर्गों को षड्वर्ग कहते है। समस्त शुभ कर्मो में इन्हें प्रशस्त कहा गया ह। सप्तमांश सहित षड्वर्ग को सप्तवर्ग कहते है। जातक के ग्रहों के बलाबल ज्ञानार्थ इस सप्तवर्ग को आचार्यों द्वारा बतलाया गया है। आइए अब हम षड्वर्ग के अन्तर्गत सर्वप्रथम गृह या लग्न को समझने का प्रयास करते हैं -

**1. गृह या लग्न** – जन्मांग चक्र में अथवा गृह या लग्न कोष्ठक में वह राशि जिसमें ग्रह स्थित हो उसे गृह या लग्न के नाम से जाना जाता है। इसका स्थान नियत होता है। उदाहरणार्थ –
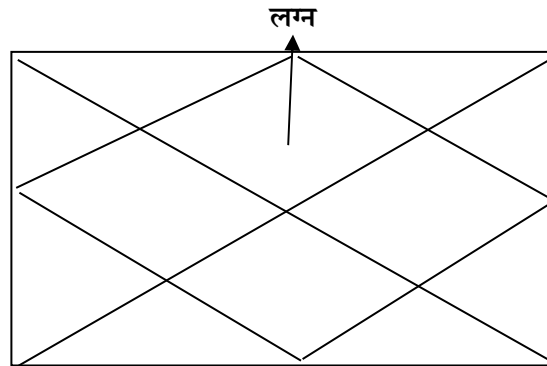
आप उपर के कोष्ठक में देख रह होंगे एक कोष्ठक को संकेत द्वारा लग्न लिखा गया है। वस्तुत: यह स्थान लग्न के निर्धारित की गयी है, जो नीयत है अपरिवर्तनीय है। इस स्थान पर राशियों की संख्या तो परिवर्तन होगा किन्तु यह स्थान लग्न के अतिरिक्त और किसी का नहीं हो सकता है। यह स्थान कुण्डली में सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। सम्पूर्ण होरा या फलित स्कन्ध इसी लग्न पर आधारित होता है। आचार्य भास्कर ने भी कहा है कि – नूनं लग्नबलाश्रितं पुनरयं तत्स्पष्टखेटाश्रयम्।। यहाँ लग्नबल पर जोर देते हुए वह कहते है कि जातक या होरा शास्त्र लग्नबलाश्रित है एवं लग्न जो है वह खेट अर्थात् ग्रह के आश्रित है। अत: गृह या लग्न को ज्योतिष जगत् में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। प्रत्येक लग्न के लिए आचार्यों द्वारा 2 घण्टे का काल निर्धारित किया गया है। एक दिन में 12 लग्न होते हैं और प्रत्येक 2-2 घण्टे के अन्तराल पर वह परिवर्तन होते रहता हैं। गृह या लग्न के पश्चात् दूसरा क्रम होरा का आता है। आइए अब होरा को समझते है।

**2. होरा** - राशि या लग्न के आधे भाग को 'होरा' कहते हैं। विषमराशि में प्रथम सूर्य की 1-15 अंश तक तथा दूसरी चन्द्रमा की 16 से 30 अंश तक होरा होती है। इसी प्रकार सम राशि में प्रथम चन्द्रमा की 1-15 अंश तक और दूसरी सूर्य की 16-30 अंश तक होरा होती है। ऐसा आपको जानना चाहिए। इसमें प्रथम 0-15 अंश तक के स्वामी देवता तथा 16-30 अंश तक के स्वामी पितर को माना गया है।

**त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्धमुच्यते।**
**मार्तण्डेन्द्वोरयुजि समभे चन्द्रभान्वोश्च होरे।।**

एक राशि में दो होरा पन्द्रह-पन्द्रह अंश की होती है। विषम राशि में प्रथम सूर्य तथा द्वितीय चन्द्रमा की होरा होती है। समराशि में प्रथम चन्द्रमा तथा द्वितीय सूर्य की होरा रहती है।

स्पष्टार्थ चक्र –

| **राशियाँ** | **मेष** | **वृष** | **मिथुन** | **कर्क** | **सिंह** | **कन्या** | **तुला** | **वृश्चिक** | **धनु** | **मकर** | **कुंभ** | **मीन** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1-15 अंश | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र |
| 16-30 अंश | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य | चन्द्र | सूर्य |

होराधिपतियों का एक मतान्तर भी प्राप्त होता है। कुछ आचार्यों के मतानुसार प्रथमहोरापति उसी राशि का स्वामी और द्वितीय होरापति उससे ग्यारहवीं राशि का स्वामी होता है। जैसे मेषराशि मे पहला होराधिपति भौम और द्वितीय होराधिपति मेष से ग्यारहवॉ कुम्भ का स्वामी शनि हुआ। इसी प्रकार आगे समझना चाहिए।

मतान्तर स्पष्टार्थ चक्र –

| **राशियाँ** | **मेष** | **वृष** | **मिथुन** | **कर्क** | **सिंह** | **कन्या** | **तुला** | **वृश्चिक** | **धनु** | **मकर** | **कुंभ** | **मीन** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1-15 अंश | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
| 16-30 अंश | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क |

**विशेष** – यह पूर्व में भी बताया जा चुका है कि भौमादि पंचताराग्रहों की होरा नहीं होती है। केवल सूर्य एवं चन्द्र की ही होरा होती है, जैसा कि उपर के चक्र से स्पष्ट है।

**उदाहरण के लिए** यदि लग्न का मान – ५/२०/२६/२८ राश्यादि है तो यह कन्या राशि है, अत: यह बुध के गृह में हुआ। कन्या सम राशि है अत: सम राशि में यहाँ २० अंश है अत: नियमानुसार सम राशि में 0-15 अंश तक प्रथम चन्द्रमा की होरा होती है और 16-30 अंश तक द्वितीय सूर्य की। अत: यहाँ 20 अंश मान होने के कारण सूर्य की होरा हुई।

**3. द्रेष्काण** – एक राशि 30 अंश का होता है। द्रेष्काण के अन्तर्गत एक राशि में 10-10 अंशों के तीन भाग होते हैं जिनमें 1 से 10 अंश तक प्रथम, 11 से 20 अंश तक द्वितीय, और 21 से 30 अंश तक तृतीय द्रेष्काण होता है। प्रथम द्रेष्काण में उसी राशि का स्वामी, द्वितीय में उससे पाँचवीं राशि का तथा तृतीय में उससे नौवीं राशि का स्वामी होता है। जैसे मेष में प्रथम मेष का स्वामी, द्वितीय में सिंह का स्वामी और तृतीय द्रेष्काण में नौवीं राशि धनु का स्वामी होता है। अर्थात् 1 से 10 अंश तक स्वराशि का प्रथम द्रेष्काण, 11 से 20 अंश तक उससे पंचम राशि का द्वितीय द्रेष्काण तथा 21 से 30 अंश तक उससे नवम राशि का तृतीय द्रेष्काण होता है।

आचार्य पराशर कृत **वृहत्पराशरहोराशास्त्र** ग्रन्थोक्त द्रेष्काण साधन का मूल श्लोक –

**राशित्रिभागा द्रेष्काणास्ते च षट्त्रिंशदीरिता:।**
**परिवृत्तित्रयं तेषां मेषादे: क्रमशो भवेत्।।**
**स्वपंचनवमानां च राशीनां क्रमशश्च ते।**
**नारदाऽगस्तिदुर्वासा द्रेष्काणेशाश्चरादिषु।।**

**स्पष्टार्थ द्रेष्काण चक्र**

| द्रेष्काण | राशियाँ | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | 10 अंश | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| द्वितीय | 20 अंश | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| तृतीय | 30 अंश | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 | 2 |
| द्रेष्काण | राशियाँ | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | 10 अंश | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| द्वितीय | 20 अंश | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 |
| तृतीय | 30 अंश | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |

अब आगे यहाँ द्रेष्काण के सम्बन्ध में अन्य मत को भी जानते हैं।

**मतान्तर द्रेष्काण चक्रम**

| **द्रेष्काण** | **राशियाँ** | **मेष** | **वृष** | **मिथुन** | **कर्क** | **सिंह** | **कन्या** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | 10 अंश | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| द्वितीय | 20 अंश | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| तृतीय | 30 अंश | 11 | 12 | 1 | 2 | 3 | 4 |
| **द्रेष्काण** | **राशियाँ** | **तुला** | **वृश्चिक** | **धनु** | **मकर** | **कुम्भ** | **मीन** |
| प्रथम | 10 अंश | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| द्वितीय | 20 अंश | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| तृतीय | 30 अंश | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |

**उदाहरण के लिए** – लग्न का मान यदि ६/८/२५/३० है तो, इसमें प्रथम द्रेष्काण है, क्योंकि इसका अंश 1 से 10 के बीच का ८ है। और हम जानते है कि प्रथम द्रेष्काण स्वराशि का होता है। अत: यहॉं लग्नानुसार तुला का मान होने से तुला का द्रेष्काण हुआ जिसका अधिपति शुक्र होता है।

**विशेष** – प्रथम 1-10 अंश तक के द्रेष्काण का स्वामी नारद, द्वितीय 11-20 अंश तक के द्रेष्काण के स्वामी अगस्त तथा तृतीय 21-30 अंश तक के द्रेष्काण के स्वामी दुर्वासा ऋषि को माना गया है। अथवा आप इस प्रकार भी समझ सकते है कि चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियों के द्रेष्काणों के स्वामी क्रमश: नारद, अगस्त एवं दुर्वासा कहे गये हैं।

## बोध प्रश्न – 1

1. षड् का शाब्दिक अर्थ है -

   क. 5 ख. 6 ग. 7 घ. 8

2. गृह का दूसरा नाम है –

   क. लग्न ख. होरा ग. द्रेष्काण घ. नवमांश

3. चर संज्ञक होता है -

   क. 1,4,7,10 ख. 2,5,8,11 ग. 3,6,9,12 घ. 3,7,8,11

4. विषम राशि में 0 से 15 अंश तक किसकी होरा होती है।

क. सूर्य की ख. चन्द्रमा की ग. मंगल की घ. कोई नहीं

5. सम राशि में 15-30 अंश तक किसकी होरा होती है।

क. सूर्य की ख. चन्द्र की ग. बुध की घ. गुरु की

6. 1-10 अंश तक प्रथम द्रेष्काण किसकी होती है।

क. पंचम राशि की ख. स्वराशि की ग. नवम राशि की घ. कोई नहीं

**4. नवमांश** – राशि के नवें भाग को नवमांश कहते हैं। हम जानते हैं कि एक राशि में 30 अंश होते हैं इस प्रकार एक नवमांश में 30/9 = 3/20 अर्थात् 3 अंश 20 कला का एक नवमांश होता है। आचार्य वैद्यनाथ जी ने अपने ग्रन्थ जातकपारिजात में नवमांश और उनके स्वामी के बारे में बतलाते हुए कहा है कि –

**मूल श्लोक -** **चापाजसिंहराशीनां नवांशास्तुम्बुरादय:।**
**वृषकन्यामृगाणां च मृगाद्या नव कीर्तिता:।।**
**नृयुक् तुलाघटानां च तुलाद्याश्चांशका नव**
**कर्किवृश्चिकमीनानां कर्कटाद्या नवांशका:।।**

अर्थात् धनु, मेष और सिंह राशियों के नव नवमांश मेषादि 9 राशियॉं, वृष, कन्या और मकर राशियों के नव नवमांश मकरादि 9 राशियाँ, मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि के नव नवमांश तुलादि 9 राशियाँ तथा कर्क, वृश्चिक और मीन राशियों के नव नवमांश कर्कादि नव राशियाँ होती है। सारावली ग्रन्थ में नवमांश राशियों के सम्बन्ध में ग्रन्थकर्ता कल्याणवर्मा के अनुसार ''नवभागानामजमृगतुलकर्कटाद्याश्च...0'' कहा है अर्थात् मेषादि राशियों में क्रम से मेष, मकर, तुला और कर्क- ये प्रथम नवांश राशियाँ है। इनसे प्रारम्भ होकर क्रमश: 9 राशियों का नवमांश होता है। नवमांश का ज्ञान सूक्ष्म फलादेश के लिए तथा कलत्र सुख के विचारार्थ परमावश्यक बतलाया गया है।

**नवमांश बोधक स्पष्टार्थ चक्रम्**

| **नवमांश (अंशादि मान)** | **मेष, सिंह, धनु** | **वृष, कन्या, मकर** | **मिथुन, तुला, कुम्भ** | **कर्क, वृश्चिक, मीन** | **स्वामी** |
|---|---|---|---|---|---|
| 0° – 3°।20 | मेष | मकर | तुला | कर्क | देवता |
| 3°।20 – 6° ।40 | वृष | कुम्भ | वृश्चिक | सिंह | मनुष्य |
| 6° ।40 –10° ।00 | मिथुन | मीन | धनु | कन्या | राक्षस |
| 10°।00–13°।20 | कर्क | मेष | मकर | तुला | देवता |

| 13°।20–16°।40 | सिंह | वृष | कुम्भ | वृश्चिक | मनुष्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 16°।40–20°।00 | कन्या | मिथुन | मीन | धनु | राक्षस |
| 20°।00–23°।20 | तुला | कर्क | मेष | मकर | देवता |
| 23°।20–26°।40 | वृश्चिक | सिंह | वृष | कुम्भ | मनुष्य |
| 26°।40–30°।00 | धनु | कन्या | मिथुन | मीन | राक्षस |

**उदाहरण के लिए** यदि लग्न का मान ८।२५।३०।२० है तो यहाँ ९ वीं राशि धनु का यह मान है। अब धनु में यहाँ २५ अंश का मान है। तो चक्र में आप धनु में २५ अंश जहाँ है वह वृश्चिक का नवमांश है। अत: यह वृश्चिक के नवमांश में हुआ। आशा है आप नवमांश को समझ गये होंगे।

**5. द्वादशांश** – षडवर्ग के अन्तर्गत पाँचवाँ क्रम द्वादशांश का है। स्वराशि से आरम्भ कर क्रमश: द्वादश राशियों के द्वादशांश होते है। १ राशि में ३० अंश होता है अत: ३०°/१२ = २°।३० अर्थात् २ अंश ३० कला का एक द्वादशांश होता है। एक राशि में इतने ही मान के १२ भाग या द्वादशांश होते हैं। राशि के प्रथम द्वादशांश पर उसी राशि का अधिकार होता है। द्वितीय द्वादशांश पर उस राशि से दूसरी राशि का, तृतीय द्वादशांश पर उस राशि से तृतीय राशि का, दसवें द्वादशांश पर उस राशि से दसवीं राशि का अधिकार होता है तथा उन द्वादशांश राशियों के स्वामी तत्तद् द्वादशांशों के स्वामी होते हैं। जैसे मेष राशि में प्रथम द्वादशांश मेष राशि और उसका स्वामी मंगल प्रथम द्वादशांशेश, दूसरा द्वादशांशेश वृष राशि और उसका स्वामी शुक्र द्वितीय द्वादशांश का स्वामी होगा।

**द्वादशांश स्पष्टबोधक चक्र**

| अंशादि मान | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0°-२°।३० | १ मं. | २ शु | ३ बु. | ४ चं. | ५ सू. | ६ बु. | ७ शु | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११श | १२गु. |
| २।३०-५।०० | २ शु. | ३ बु | ४ चं. | ५सू | ६ बु. | ७ शु | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११श | १२गु | १ मं. |
| ५।००-७।३० | ३ बु. | ४ चं. | ५ सू. | ६ बु | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १० श. | ११श | १२गु | १ मं. | २ शु |
| ७।३०-१०।०० | ४ चं. | ५ सू. | ६ बु. | ७ शु | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११श | १२गु | १मं | २शु | ३बु |
| १०।००-१२।३० | ५ सू. | ६ बु. | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११श | १२गु | १मं. | २शु. | ३बु. | ४चं. |
| १२।३०-१५।०० | ६ बु. | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १० श | ११श | १२गु | १मं | २शु | ३बु | ४चं. | ५सू. |
| १५।००-१७।३० | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११ श | १२गु. | १मं. | २शु | ३बु | ४चं. | ५सू. | ६बु. |
| १७।३०-२०।०० | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११श | १२ गु | १ मं | २शु. | ३बु. | ४चं. | ५सू. | ६बु. | ७शु. |
| २०।००-२२।३० | ९ गु. | १०श | ११श | १२गु | १ मं. | २ शु | ३बु. | ४चं. | ५सू. | ६बु. | ७शु | ८मं |
| २२।३०-२५-०० | १०श | ११श | १२गु | १ मं. | २ शु. | ३ बु | ४चं. | ५सू. | ६बु. | ७शु. | ८मं. | ९गु. |
| २५।००-२७।३० | ११श | १२गु | १ मं | २ शु. | ३ बु | ४ चं. | ५ सू. | ६ बु. | ७ शु | ८ मं. | ९ गु. | १०श |
| २७।३०-३०°।०० | १२गु | १ मं. | २ शु. | ३ बु. | ४ चं. | ५ सू. | ६ बु | ७ शु. | ८ मं. | ९ गु. | १०श | ११श |

द्वादशांशेशों के सम्बन्ध में पराशर का कथन इससे भिन्न है। उनके अनुसार बारह द्वादशांशेशों के स्वामी क्रमश: गणेश, अश्विनीकुमार, यम और अहि अर्थात् सर्प होते हैं। पंचम दशमांश से पुन: गणेशादि क्रम से द्वादशांशेश होते है।

**द्वादशांशस्य गणना तत्तत्क्षेत्राद्विनिर्दिशेत्।**
**तेषामधीशा: क्रमशो गणेशाश्वियमाह्वय:।।**

जातकपारिजात ग्रन्थकर्ता के अनुसार पराशर जी के उपरोक्त इस मत को अन्य विद्वानों की स्वीकृति प्राप्त नहीं हो सकी।

6. त्रिशांश – षडवर्ग के अन्तर्गत छठा और अन्तिम त्रिशांश होता है। एक त्रिशांश ३०°/३०° = १ अंश के बराबर होता है।

**मूल श्लोक –**

**आरार्किजीवशशिनन्दनशुक्रभागा**
**स्त्वोजे समीरपवनाष्टकशैलबाणा:।**
**युग्मे समीरगिरिपन्नगपंचबाणा:।**
**त्रिंशांशकास्सितविदार्यशनिक्षमाजा:।।**

अर्थात् विषम राशि में प्रथम समीर ५ अंश के स्वामी आर= भौम, अगले पवन- 5 अंश के स्वामी अर्कि = शनि, अगले अष्टक -8 अंश के जीव =वृहस्पति, अगले शैल-7 अंश के स्वामी बुध तथा अन्तिम बाण-5 अंश के स्वामी शुक्र होते हैं। सम राशि में प्रथम समीर 5 अंश के स्वामी सित = शुक्र, अगले गिरि-7 अंश के स्वामी विद् = बुध, अगले पन्नग- 8 अंश के स्वामी आर्य = वृहस्पति, अगले पंच-5 अंश के स्वामी शनि और अन्तिम बाण-5 अंश के स्वामी क्षमाजा = भौम होते हैं।

विषम राशि में त्रिशांश के 30 अंश से 5, 5, 8,7,5 के पाँच खण्ड बनाये गये और इन पाँच खण्डों का स्वामित्व क्रमश: भौम, शनि, बृहस्पति, बुध और शुक्र को दिया गया। सम राशि में यह क्रम विपरीत हो जाता है। अर्थात् सम राशि में 5 अंश के स्वामी शुक्र, 5-12 अंश तक के बुध, 12 से 20 अंश तक के स्वामी वृहस्पति, 20-25 अंश के स्वामी शनि, और 25 से 30 अंश तक के स्वामी भौम होते है।

वराहमिहिर कृत लघुजातक में भी त्रिशांशो के स्वामी इस प्रकार कहा गया है –

**कुजयमजीवज्ञसिता: पंचेन्द्रियवसुमुनीन्द्रियांशानाम्।**
**विषमेषु समर्क्षेषूत्क्रमेण त्रिंशांशपा: कल्प्या:।।**

विषम 1,3,5,7,9,11 राशियों में 5,5,8,7,5 अंशों के क्रमश: भौम, शनि, गुरु, बुध एवं शुक्र त्रिशांशाधिपति होते हैं। तथा सम 2,4,6,8,10,12 राशियों में 5,7,8,5,5 अंशों के क्रमश: शुक्र,बुध,गुरु, शनि एवं भौम त्रिशांशाधिपति होते हैं।

**विषम त्रिशांशाधिपति चक्र**

| अंश | मे.१ | मि३ | सिं५ | तु७ | ध.९ | कु.११ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | मं. | मं. | मं. | मं. | मं. | मं. |
| ५ | श. | श. | श. | श. | श. | श. |
| ८ | वृ. | वृ. | वृ. | वृ. | वृ. | वृ. |
| ७ | बु. | बु. | बु. | बु. | बु. | बु. |
| ५ | शु. | शु. | शु. | शु. | शु. | शु. |

**सम त्रिशांशाधिपति चक्र**

| अंश | वृ.२ | क.४ | क.६ | वृ८ | म१० | मी१२ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | शु. | शु. | शु. | शु. | शु. | शु. |
| ७ | बु. | बु. | बु. | बु. | बु. | बु. |
| ८ | वृ. | वृ. | वृ. | वृ. | वृ. | वृ. |
| ५ | श. | श. | श. | श. | श. | श. |
| ५ | मं. | मं. | मं. | मं. | मं. | मं. |

विशेष – पराशर जी के अनुसार विषम राशि के पाँच खण्डों के अधपिति वह्नि, वायु, इन्द्र, धनद एवं जलद है तथा सम राशि के पाँच खण्डों के अधिपति जलद, धनद, इन्द्र, वायु और वह्नि है।

सूर्य और चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी है जिनमें एक सम और दूसरी विषम राशि होती है। तब इन दो राशियों के स्वामी जिस अंशखण्ड के स्वामी होंगे उसकी त्रिंशांश राशि कौन होगी? सम या विषम? जैसे यदि लग्नमान राश्यादि ६।१५।२२।३७ तो इसका त्रिंशांशेश वृहस्पति हुआ जिसकी धनु और मीन राशियाँ है। इस स्थिति में लग्न की त्रिंशांश राशि धनु होगी न की मीन जो सम राशि है। विषम राशि में विषम राशि और समराशि में समराशि को त्रिंशांश राशि के रूप में ग्रहण करना चाहिए। सूर्य के राश्यादि भोग यदि ६।२४।८।२० हो तो बुध त्रिंशांशेश हुआ। बुध की राशि मिथुन विषम और कन्या सम राशि है। यत: सूर्य विषमराशिगत है इसीलिए मिथुन ही सूर्य की त्रिशांश राशि होगी। षडवर्ग ज्ञान के पश्चात् आइए अब सप्तवर्ग एवं दशवर्ग का ज्ञान करते हैं।

**सप्तवर्ग** – सप्तवर्ग के अन्तर्गत जैसा कि नाम से स्पष्ट है इसमें सात वर्ग होते है। पूर्व के षडवर्ग में एक सप्तमांश जोड़ देने से सप्तवर्ग पूरा हो जाता है। अत: हमने षडवर्ग का अध्ययन पहले कर लिया है अब यहाँ सप्तमांश का अध्ययन करेंगे।

**सप्तमांश** – राशि के सातवें भाग अर्थात् ३०/७ = ४°।१७।८.५७ के बराबर एक सप्तमांश का मान होता है।

**ओजे नगांशा: निजराशित: स्यु: युग्मे ततो द्यूनगृहाद्भवन्ति।**

३० अंश में ७ का भाग देने से अंशादि ४।१७।८ फल प्राप्त होता है। अत: ४।१७ का एक-एक भाग मानकर सात खण्ड किये उनमें विषम राशि में प्रथमादि खण्ड अपनी राशि से प्रारंभ होता है। और समराशि में प्रथमादि खण्ड अपनी राशि से सप्तम राशि से प्रारम्भ होता है।

कल्पना किया कि यदि लग्न ६।५।३७।५९ है। तुला के दूसरे सप्तमांश में आता है। अत: लग्न का सप्तमांश वृश्चिक हुआ। सूर्य का मान यदि ३।७।१९।३५ है। यह कर्क के दूसरे सप्तमांश में है। अत: सूर्य का सप्तमांश (कर्क से सप्तम मकर राशि और इससे दूसरा सप्तमांश) ११ राशि हुआ। चन्द्र १।२९।२५।४१ है। अत: चन्द्र का सप्तमांश (वृष से सप्तम वृश्चिक राशि और उससे सातवाँ सप्तमांश) वृषभ का अन्तिम वृष ही हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी जान लेना चाहिए।

**सप्तमांश और उनके स्वामी –**

**लग्नादिसप्तमांशेशास्त्वोजे राशौ यथाक्रमम्।**
**युग्मे लग्ने स्वरांशानामधिपा: सप्तमादय:।।**

अर्थात् विषम राशि में सप्तमांश उसी राशि से और समराशि में उस राशि से सातवीं राशि से प्रारम्भ होकर राशिक्रम से सप्तमांश राशियाँ होती हैं। इनके स्वामी सप्तमांशपति होते हैं।

सप्तमांश अर्थात् राशि का सातवाँ भाग ३०/७ = ४।१७।८। यह राशि के एक सप्तमांश का मान है। एक राशि में इतने ही मान के सात खण्ड होंगे। विषम राशि का प्रथम खण्ड उसी राशि का दूसरा खण्ड उससे अगली राशि का, तीसरा खण्ड उस राशि से तीसरी राशि का आदि क्रम से प्रत्येक खण्ड या सप्तमांश पर राशियों का अधिकार होता है तथा उन राशियों के स्वामी उन-उन खण्डों या सप्तमांशों के स्वामी होंगे। जैसे मेष विषम राशि है, अत: इसका प्रथम सप्तमांश ० अंश से ४।१७।८ तक मेष राशि का होगा और उसका स्वामी मंगल होगा। दूसरा सप्तमांश ४।१७।८ से ८।३४।१७ तक वृष राशि का होगा और उसके स्वामी शुक्र होंगे। इसी क्रम से आगे जानना चाहिए।

विषम राशि में पहला सप्तमांश उस राशि से सातवीं राशि का होता है। दूसरा सप्तमांश उससे आठवीं राशि का होगा और उस आठवीं राशि के स्वामी ही इस द्वितीय सप्तमांश के स्वामी होंगे। तीसरा सप्तमांश उस राशि से नवीं राशि का होगा तथा इस नवीं राशि के स्वामी ही तृतीय सप्तमांश के स्वामी होंगे। जैसे वृष राशि समराशि है। इसका प्रथम सप्तमांश वृष से सातवीं राशि वृश्चिक का होगा और उसके स्वामी मंगल ही प्रथम सप्तमांशेश होंगे। द्वितीय सप्तमांश राशि से आठवीं राशि धनु राशि का होगा और धनु राशि के स्वामी वृहस्पति ही इस तृतीय सप्तमांश के स्वामी होंगे।

जातक की प्रकृति, स्वभाव और चरित्र आदि के विचार में ये सप्तमांश अत्यन्त उपयोगी होते हैं। क्रूर राशि के सप्तमांश में उत्पन्न जातक उग्र स्वभाव का होगा और सौम्य राशि के सप्तमांश में उत्पन्न

होने वाला जातक सौम्य प्रकृति का होगा।

**सप्तमांश चक्र**

| राशि | | मे. | वृ. | मि. | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृ. | ध. | म. | कु. | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४°।१७।८।५७ | राशि स्वामी | १ मं | ८ मं. | ३ बु | १०श | ५ सू | १२गु | ७शु | २शु | ९गु | ४चं | ११श | ६बु |
| ८।३४।१७।१४ | .. | २ शु. | ९ गु. | ४ चं | ११श | ६ बु | १मं | ८ मं | ३बु | १०श | ५सू | १२गु | ७शु |
| १२।५१।२५।७ | .. | ३ बु. | १० श. | ५ सू | १२गु | ७ शु | २शु | ९ गु | ४चं | ११श | ६बु | १मं | ८मं |
| १७।८।३४।२९ | .. | ४ चं. | ११श. | ६ बु | १ मं | ८ मं | ३बु | १०श | ५सू | १२गु | ७शु | २शु | ९गु |
| २१।२५।४२।८ | .. | ५ सू. | १२ गु. | ७ शु | २ शु | ९ गु | ४चं | ११श | ६बु | १मं | ८मं | ३बु | १०श |
| २५।४२।५१।४ | .. | ६ बु. | १ मं. | ८ मं | ३ बु | १०श | ५सू | १२गु | ७शु | २शु | ९गु | ४चं | ११श |
| ३०°।०।० | .. | ७ शु. | २ शु. | ९ गु | ४ चं | ११श | ६बु | १ मं | ८मं | ३बु | १०श | ५सू | १२गु |

विषम राशियों के सप्तमांशाधिपति क्रमशः – 1. क्षार, 2. क्षीर, 3. दधि, 4. आज्य, 5. इक्षुरस, 6. मद्य, और 7. शुद्धजल होते हैं। सम राशियों के सप्तमांशाधिपति क्रमशः 1. शुद्ध जल, 2. मद्य, 3. इक्षुरस, 4. आज्य, 5. दधि, 6. क्षीर, और 7. क्षार होते हैं।

## 1.4 दशवर्ग विवेचन –

सप्तक वर्ग में दशांश, षोडशांश तथा षष्ट्यंश जोड़ने से दशवर्ग बनते हैं।

**दशमांश** -

**लग्नादिदशमांशेशास्त्वोजे युग्मे शुभादिका:।**
**द्वादशांशाधिपतयस्तत्तद्राशिवशानुगा:।।**

अर्थात् विषम राशियों में उसी राशि से तथा सम राशियों में उससे नवीं राशि से दशमांश होते है तथा उसी राशि से प्रारंभ होकर राशिक्रम से द्वादशांश होते हैं।

राशि का दशम भाग ३०/१० =३ अंश का एक दशमांश होता है। स्पष्ट है कि एक राशि में ३ अंशों के दस दशमांश होंगे। विषम राशि में प्रथम दशमांश वही राशि, दूसरा दशमांश उस राशि से दूसरी राशि, तीसरा दशमांश उससे तीसरी राशि, इसी क्रम से अन्तिम दशम दशमांश उस राशि से दसवीं राशि होगी। इस प्रकार मेष राशि में प्रथम दशमांश मेष स्वयं और उसका स्वामी मंगल प्रथम दशमांशेश हुआ। दूसरा दशमांशेश वृष राशि और उसका स्वामी शुक्र द्वितीय दशमांशेश होगा। इसी प्रकार दशम दशमांश मकर राशि और उसका स्वामी शनि दशम दशमांशेश होगा।

इसी प्रकार सम राशियों में प्रथम दशमांश उस राशि से दशम राशि होती है और उसका स्वामी प्रथम दशमांशेश होता है। दूसरा दशमांश उससे दूसरी राशि और उसका स्वामी द्वितीय दशमांशपति होता है। इसी क्रम से आगे समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए यदि सूर्य 3।7।19।35 है तो यह कर्क के तीसरे वृष के दशांश में होगा।

**षोडशांश** –

चर राशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से तथा द्विस्वभाव राशि में धनु से षोडशांश का प्रारम्भ होता है। एक षोडशांश 1 अंश 52 कला 16 विकला का रहता है। यदि सूर्य 3।7।19।35 है तो यह कर्क के षोडशांश में है।

**षष्ट्यंश** – 30 कला का एक षष्ट्यंश रहता है। अत: ग्रह की राशि को छोड़कर अंश को द्विगुणित करके कला में 30 का भाग देकर लब्धि को उसमें मिला दें। यह लब्धि संख्या गत षष्टयंश होगी। उसमें एक मिलाने से वर्तमान षष्ट्यंश होता है। षष्टयंश के 60 देवता पठित है। विषम राशि के देवता के क्रम को उलट देने से सम राशि के षष्ट्यंश के देवता होते हैं।

अभीष्ट षष्टयंश की राशि जानने के लिए 12 से भाग देकर शेष राशि अभीष्ट षष्टयंश की होगी। राशि गणना का प्रारंभ स्वराशि से होता है।

**दशमांश चक्र –**

| राशियाँ / दशमांश | मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कु | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०-३ | १ | १० | ३ | १२ | ५ | २ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ |
| ४-६ | २ | ११ | ४ | १ | ६ | ३ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ |
| ७-९ | ३ | १२ | ५ | २ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० |
| ९-१२ | ४ | १ | ६ | ३ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ |
| १३-१५ | ५ | २ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ३ | १२ |
| १६-१८ | ६ | ३ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | ४ | १ |
| १९-२१ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ३ | १२ | ५ | २ |
| २२-२४ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | ४ | १ | ६ | ३ |
| २५-२७ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ३ | १२ | ५ | २ | ७ | ४ |
| २८-३० | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | ४ | १ | ६ | ३ | ८ | ५ |

अब यहाँ दशवर्ग से सम्बन्धित जानकारी भी पूर्ण हुई। इस प्रकार आप सभी ने इस इकाई में षड्वर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग से सम्बन्धित विषयों को जान लिया है।

**बोध प्रश्न – 2**

**रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –**

1. एक नवमांश का मान ............ होता है।
2. षड्वर्ग में सप्तमांश जोड़ देने से ............ होता है।
3. षष्टि का शाब्दिक अर्थ ................ है।
4. 30 कला का एक ............. होता है।
5. 2 अंश 30 कला मान ............ का होता है।
6. एक त्रिशांश का मान ........... है।

## 1.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि षड्वर्ग का सम्बन्ध होरा या फलित ज्योतिष से ही नहीं, अपितु ज्योतिषशास्त्र के प्रत्येक स्कन्धों से है। प्रत्येक स्कन्धों में इसका विवेचन मिलता है। इसके ज्ञान के बिना हम कुण्डली का सम्यक् विश्लेषण नहीं कर सकते हैं। राशियों के परिज्ञान के साथ-साथ ग्रहों के बलाबल आदि जानकारी हेतु आचार्यों द्वारा इनका प्रतिपादन किया गया है। अत: आइए हम सब उसका विस्तार से अध्ययन करते है। सर्वप्रथम षड्वर्ग क्या है? इसका विचार करते है तो 'षड्' का शाब्दिक अर्थ होता है – 6 एवं वर्ग को कोष्ठक के नाम से भी जानते है। इस प्रकार जहाँ 6 कोष्ठक या 6 प्रकार के वर्गों (गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश एवं त्रिशांश) का उल्लेख हमें मिलता है सामान्यतया उसे हम 'षड्वर्ग' कहते है। ग्रहों की षडवर्ग संज्ञा होती है। राशियों में वर्ग परिज्ञान हेतु इनका निर्माण आचार्यों द्वारा किया गया है। फलादेश कर्तव्य में षडवर्ग के ज्ञान से हमें सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त होती है। षड्वर्ग में सप्तमांश जोड़ देने से सप्तवर्ग एवं उनमें दशमांश, षष्टयंश तथा षोडशांश जोड़ने से हमें दशवर्ग का ज्ञान हो जाता है।

## 1.7 पारिभाषिक शब्दावली

षडवर्ग – षड्वर्ग के अन्तर्गत छ: वर्ग या कोष्ठक होते है। गृह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश।

गृह – लग्न का दूसरा नाम है।

होरा – एक होरा 15 अंश की होती है। विषम राशियों में क्रमश: 0-15 अंश तक सूर्य की और 15-30 अंश तक चन्द्रमा की होरा होती है। सम राशि में इसके विपरीत होता है।

द्रेष्काण – 10 अंश का एक द्रेष्काण होता है।

नवमांश – 3 अंश 20 कला का एक नवमांश होता है। राशि के नवें भाग को नवमांश कहते हैं।

द्वादशांश – राशि का 12 वॉं अंश द्वादशांश होता है। 2 अंश 30 कला इसका मान होता है।

त्रिशांश – एक त्रिशांश 1 अंश के बराबर होता है।

## 1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्नों के उत्तर – 1

1. ख 2. क 3. क 4. क 5. क 6. ख

बोध प्रश्नों के उत्तर – 2

1. 3 अंश 20 कला 2. सप्तवर्ग 3. 60 4. षष्टयंश 5. द्वादशांश 6. 1 अंश

## 1.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

जातकपारिजात- मूल लेखक – आचार्य वैद्यनाथ, टिका – हरिशंकर पाठक।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र – मूल लेखक – महर्षि पराशर, टिका- पं. पद्मनाभ शर्मा।

लघुजातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. कमलाकान्त पाण्डेय।

वृहज्जातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. सत्येन्द्र मिश्र।

सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा, टिका – डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी।

## 1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षड्वर्ग का विस्तृत विवेचन कीजिये।
2. सप्तवर्ग से क्या तात्पर्य है? वर्णन कीजिये।
3. दशवर्ग का उल्लेख कीजिये।
4. षड्वर्ग के गणितीय पक्ष का उल्लेख कीजिये।
5. फलादेश में षडवर्ग, सप्तवर्ग तथा दशवर्ग की क्या उपयोगिता है।

## इकाई -2 षोडश वर्ग विवेचन

### इकाई की संरचना

## 2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आप सभी का स्वागत है। इस इकाई का शीर्षक है- षोडश वर्ग विवेचन। इसके पूर्व की इकाई में आपने षड्वर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग का अध्ययन कर लिया है। अब आप इस इकाई में षोडश वर्ग का अध्ययन करने जा रहे हैं।

षोडश का शाब्दिक अर्थ है – 16। यह संख्यावाची शब्द है। पूर्व के दशवर्ग के अतिरिक्त 6 वर्ग और इस षोडश वर्ग में निहित है।

आइए हम सभी षोडश वर्ग से सम्बन्धित सभी विषयो का इस इकाई में विस्तृत अध्ययन करते हैं। फलादेश कर्तव्य में तथा जन्मकुण्डली के सूक्ष्म विश्लेषण में इन वर्गों का विशेष योगदान है।

## 2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- षोडश वर्ग को समझ जायेंगे।
- षोडश वर्ग के अन्तर्गत आने वाले सभी वर्गों का ज्ञान करा सकेंगे।
- षोडश वर्ग का साधन कैस करते हैं बता सकेंगे।
- षोडश वर्ग से भली- भॉति परिचित हो जायेंगे।

## 2.3 षोडशवर्ग परिचय

'षोडश वर्ग' के बारे में जानने से पूर्व आप सभी को षोडश वर्ग का शाब्दिक अर्थ समझ लेना चाहिए। तो सर्वप्रथम 'षोडश' संस्कृत का शब्द है जिसका हिन्दी में अर्थ होता है – 16। यह संख्यावाची शब्द है और वर्ग शब्द से आप सभी परिचित हो ही चुके है। इस प्रकार 16 वर्ग या खाने अथवा कोष्ठक से सम्बन्धित को 'षोडश वर्ग' के नाम से जाना जाता है।

षोडश वर्ग के अन्तर्गत षड्वर्ग (गृह या लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश) सप्तमांश, दशमांश, षोडशांश, क्षेत्रांश, विशांश, चतुर्विशांश, भांश, खवेदांश, अक्षवेदांश और षष्टयंश आदि होते हैं।

**षोडशवर्ग से विचारणीय विषय** – आचार्य पराशर प्रणीत वृहत्पराशरहोराशास्त्र में –

**मूल श्लोक-**

**अथ षोडशवर्गेषु विवेकं च वदाम्यहम्।**
**लग्ने देहस्य विज्ञानं होरायां सम्पदादिकम्।।**
**द्रेष्काणे भ्रातृजं सौख्यं तुर्यांशे भाग्यचिन्तनम्।**

**पुत्रपौत्रादिकानां वै चिन्तनं सप्तमांशके।।**
**नवमांशे कलत्राणां दशमांशे महत्फलम्।**
**द्वादशांशे तथा पित्रोश्चिन्तनं षोडशांशके।।**
**सुखाऽसुखस्य विज्ञानं वाहनानां तथैव च।**
**उपासनाया विज्ञानं साध्यं विंशतिभागके।।**
**विद्याया वेदबाह्वंशे भांशे चैव बलाऽबलम्।**
**त्रिंशांशके रिष्टफलं खवेदांशे शुभाऽशुभम्।।**
**अक्षवेदांशके चैव षष्टयंशेऽखिलमीक्षयेत्।**
**यत्र कुत्रापि सम्प्राप्तः क्रूरषष्टयंशकाधिपः।।**
**तत्र वृद्धिश्च पुष्टिश्च गर्गादीनां वचो यथा।**
**इति षोडशवर्गाणां भेदास्ते प्रतिपादिताः।**

इस प्रकार से आचार्य ने इस श्लोक में षोडश वर्ग से विचारणीय विषयों को बतलाते हुए कहा है कि गृह या लग्न की राशि से शरीर सम्बन्धि विचार, नवमांश से स्त्री, दशमांश से आकस्मिक लाभ, राज्य धनादि उत्कृष्ट लाभ, द्वादशांश से माता-पिता सम्बन्धी विचार, षोडशांश से वाहन सम्बन्धी सुख-दु:ख, विंशांश से उपासना, ज्ञान सम्बन्धी विचार, चतुर्विशांश से विद्या, भांश (सप्तविंशांश) से बलाबल, त्रिशांश से अरिष्ट फल सम्बन्धी विचार, खवेदांश से शुभाशुभ का विचार, अक्षवेदांश और षष्टयंश से सभी क्षेत्रों में, सभी वस्तुओं का शुभाशुभ फल बताना चाहिए। षष्टयंशपति क्रुर ग्रह होकर जिस भाव में बैठा हो, उस भाव का नाश हो जाता है और षोडशांशाधिप शुभ ग्रह होकर जिस भाव में स्थित हो, उस भाव की वृद्धि होती है।

### षोडश वर्ग से विचारणीय विषय का स्पष्टार्थ चक्र

| **षोडश वर्ग नाम** | गृह या लग्न | होरा | द्रेष्काण | नवमांश | द्वादशांश | सप्तमांश | दशमांश | षोडशांश | विंशांश | चतुर्विशांश | भांश | त्रिशांश | खवेदांश | अक्षवेदांश | षष्टयंश | क्षेत्रांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **विचारणीय विषय** | शरीर | सम्पत्ति | भ्रातृ सुख | स्त्री | माता-पिता | सन्तान | धन लाभ | वाहन | उपासना/ ज्ञान | विद्या | बलाबल | अरिष्ट फल | शुभाशुभ | समस्त क्षेत्र | समस्त क्षेत्र | सुख |

आपने चूँकि पूर्व के अध्याय में षडवर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग का अध्ययन कर लिया है। अत: इनके अतिरिक्त जो वर्ग शेष रह गये है उनका इस अध्याय में यहाँ विवेचन करता हूँ।

सर्वप्रथम यहाँ **चतुर्थांश साधन** कहते हैं –

**स्वर्क्षादिकेन्द्रपतयस्तुर्यांशेशा: क्रियादिषु।**
**सनकश्च सनन्दश्च कुमारश्च सनातन:।।**

मेषादि राशियों के चतुर्थांश केन्द्र १,४,७,१० के अधिपति होते हैं। प्रथम चतुर्थांश उसी राशि का, द्वितीय चतुर्थांश उससे चौथी राशि का, तृतीय चतुर्थांश उससे सप्तम राशि का और चतुर्थ चतुर्थांश उससे दशम राशि का होता है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ चतुर्थांशों के स्वामी क्रमश: सनक, सनन्दन, कुमार और सनातन कहे गये हैं।

**चतुर्थांश चक्र** –

| **स्वामी** | **मे.** | **वृ.** | **मि.** | **क.** | **सिं.** | **क.** | **तु.** | **वृ.** | **ध.** | **म.** | **कु.** | **मी** | **अंश** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सनक | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ७°।३० |
| सनन्दन | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | १५।० |
| कुमार | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | २२।३० |
| सनातन | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ३०।० |

**उदाहरण के लिए माना कि यदि लग्न का मान** – ६।२०।१८।२५ है। यहाँ तुला का सप्तम राशि का चतुर्थांश हुआ। अत: तुला से सप्तम राशि मेष का चतुर्थांश हुआ और उसका अधिपति मंगल हुआ।

**विंशांश साधन** –

**अथ विंशतिभागनामधिपा ब्रह्मणोदिता:।**
**क्रियाच्चरे स्थिरे चापान् मृगेन्द्राद् द्विस्वभावके।।**
**काली गौरी जया लक्ष्मीर्विजया विमला समी।**
**तारा ज्वालामुखी श्वेता ललिता बगलामुखी।।**
**प्रत्यंगिरा शची रौद्री भवानी वरदा जया।**
**त्रिपुरा सुमुखी चेति विषमे परिचिन्तयेत्।।**
**समराशौ दया मेधा छिन्नशीर्षा पिशाचिनी।**

**धूमावमी च मातंगी बाला भद्राऽरुणानला।।**

**पिंगला छुच्छुका घोरा वाराही वैष्णवी सिता।**

**भुवनेशी भैरवी च मंगला ह्यपराजिता।।**

श्लोकार्थ है कि चर राशियों में मेष से स्थिर राशियों में धनु से और द्विस्वभाव राशियों में सिंह से आरंभ करके क्रम से विंशांश होते हैं। उनके स्वामी विषम राशियों में क्रम से काली ,गोरी ,जया ,लक्ष्मी ,विजया, विमला, सती, तारा ,ज्वालामुखी, श्वेता, ललिता, बगलामुखी, प्रत्यंगिरा, शचि, रौद्री, भवानी वरदा, जया, त्रिफरा और सुमुखी होती हैं। सम राशियों में दया, मेधा, छिन्नशीर्षा, पिशाचिनी, धूमावती, मातंगी, बाला, भद्रा, अरुणा, अनला, पिंगला, छुच्छुका, धोरा, वाराही, वैष्णवी सीता महेश्वरी भैरवी मंगला और अपराजिता होती हैं। उदाहरण जैसे लग्न 3।25।9।45 कर्क चर राशि में है, अतः मेष से प्रारंभ कर 18 वे खंड में रहने से कन्या का विंशाश हुआ और सम राशि कर्क है, अतः भैरवी स्वामिनी हुई, कन्या का स्वामी बुध है।

**स्पष्टार्थ विंशांश चक्र -**

| सं. | वि.स्वा | अशादि | मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु | मी. | सम. स्वा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | काली | 1/30 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | दया |
| 2. | गौरी | 3/0 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | मेधा |
| 3. | जया | 4/30 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | दि.शी |
| 4. | लक्ष्मी | 6/0 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | पिशा |
| 5. | विजय | 7/30 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | घूमा |
| 6. | विमला | 9/30 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | मतंगी |
| 7. | स्ती | 10/30 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | बाला |
| 8. | तरा | 12/00 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | भद्रा |
| 9. | ज्वा.मु | 13/30 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | अरूणा |
| 10. | श्वेता | 15/00 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | अनला |
| 11. | ललिता | 16/30 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | पिंगला |
| 12. | बगलामुखी | 18/00 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | छुच्छुका |
| 13. | प. गिरा | 19/30 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | धोरा |
| 14. | शची | 21/0 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | वाराही |
| 15. | रैद्री | 22/30 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | वैष्णवी |
| 16. | भवानी | 24/00 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | सिता |
| 17. | व्रदा | 25/30 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | 5 | 1 | 9 | भुवनेश्वरी |

| 18. | जया | 27 / 00 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | 6 | 2 | 10 | भैखी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 19. | त्रिपुरा | 28 / 30 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | 7 | 3 | 11 | मंगला |
| 20. | सुमुखी | 30 / 00 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | 8 | 4 | 12 | अपराजिता |

**भांश (सप्तविंशांश) साधन -**

**भांशाधिपाः क्रमादस्रधमवह्निपितामहाः,**

**चन्द्रेशादिति नीवाहिपितरो भगसंहिताः।**

**अर्यमार्कत्वष्टमरुच्छक्राग्निमित्रावासवाः,**

**निर्सृत्युदकविश्वेऽजगोविन्दो वसवोऽम्बुपः।**

**ततोऽजपाअहिर्बुधन्यः पूजा चैव प्रकीर्तिताः,**

**नक्षत्रोशास्तु भांशेशा मेषादि चरभक्रमात्।।**

मेषादि राशियों में चरसंज्ञक राशियों से सप्तविंशांश गिना जाता है, अर्थात् मेष को मेष से ही, वृष को कर्क से, मिथुन को तुला से, कर्क को मकर से, सिंह को मेष से, कन्या को कर्क से, तुला को तुला से, वृश्चिक को मकर से, धनु को मेष से, मकर को कर्क से, कुम्भ को तुला से और मीन को मकर से क्रम से गिनने पर विंशांश होते हैं। उनके अधिदेवता क्रमशः अश्विनी कुमार, यम्, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्र, ईश, अदिति, जीव, अहि, पितर, भग, अर्यमा, सूर्य, त्वष्टा, महत, शक्राग्नि, मित्रा, वासव, राक्षस, वरुण, विश्वदेव, गोविन्द, वसु, वरुण, अजपात, अहिर्बुधन्य और पूषा होते हैं।

**उदाहरण** - जैसे लग्न 4।20।8।45 सिंह राशि है, अतः मेष से 18 वें खण्ड में है, इसीलिए कन्या के सप्तविंशांश में है। इसका स्वामी बुध है और अधिदेवता वासव हैं।

| सं | अंशादि | मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. | स्वामी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 1 \|640 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | अश्विनी |
| 2. | 2 \|31 \|20 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | यम |
| 3. | 3 \|20 \|0 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | अग्नि |
| 4. | 4 \|26 \|40 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | ब्रह्मा |
| 5. | 5 \|33 \|20 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | चन्द्र |
| 6. | 6 \|40 \|0 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | ईश |
| 7. | 7 \|46 \|40 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | अदिति |
| 8. | 8 \|53 \|20 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | जीव |
| 9. | 10 \|0 \|0 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | सर्प |
| 10. | 11 \|6 \|40 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | पितर |
| 11. | 12 \|13 \|20 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | भग |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12. | 13 \|20 \|0 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | अर्यमा |
| 13. | 14 \|26 \|40 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | सूर्य |
| 14. | 15 \|33 \|20 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | त्वष्टा |
| 15. | 16 \|40 \|0 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | मरुत् |
| 16. | 17 \|46 \|40 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | शक्राग्नि |
| 17. | 18 \|53 \|20 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | मित्रा |
| 18. | 20 \|0 \|0 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | वासव |
| 19. | 21 \|6 \|40 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | राक्षस |
| 20. | 22 \|13 \|20 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | वरुण |
| 21. | 23 \|20 \|0 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | विश्वेदेवता |
| 22. | 24 \|26 \|40 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | गोविन्द |
| 23. | 25 \|33 \|20 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | वसु |
| 24. | 26 \|40 \|0 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | वरुण |
| 25. | 27 \|46 \|40 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | 1 | 4 | 7 | 10 | अजपात् |
| 26. | 28 \|53 \|20 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | 2 | 5 | 8 | 11 | अहिर्बुधन्य |
| 27. | 30 \|0 \|0 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | 3 | 6 | 9 | 12 | पूषा |

## बोध प्रश्न – 1

1. 'षोडश' का शाब्दिक अर्थ है -

   क. १५ ख.१६ ग.१७ घ.१८

2. 'खवेद' का तात्पर्य है –

   क. ४२ ख.५० ग. १० घ.४०

3. 'द्रेष्काण' से विचारणीय विषय है -

   क. मातृ सुख ख. सर्वसुख ग. भ्रातृ सुख घ. गृह सुख

4. स्थिर संज्ञक राशियाँ है –

   क. २,५,८,११ ख. ३,६,९,१२ ग. १,४,७,१० घ. कोई नहीं

5. सप्तविंशांश का अर्थ है –

   क. २५ वाँ भाग ख. २७ वाँ भाग ग. २८ वॉ भाग घ. ३० वाँ भाग

6. द्वितीय चतुर्थांश होता है –

   क. उसी राशि का ख. उससे चौथी राशि का ग. तीसरी घ. कोई नहीं

**खवेदांश (४०) साधन**

**चत्वारिंशद्विभागानामधिपा विषमे क्रियात्।**
**समभे तुलतो ज्ञेयाः स्वस्वाधिपसमन्विताः।।**
**विष्णुश्चन्द्रो मरीचिश्च त्वष्टा धाता शिवो रविः।**
**यमो यक्षश्च गन्धर्वः कालो वरुण एव च।।**

श्लोक का अर्थ है कि विषम राशियों में मेष से और समराशियों में तुला से गिनने पर चत्वारिंशांशाधिपति होते हैं। इनके अधिदेव क्रम से विष्णु, चन्द्र, मरीचि आदि होते हैं, जो निम्न चक्र से स्पष्ट होगा।

**उदाहरण** - लग्न 4।15।20।25 विषम राशि के 21 वें खण्ड में है, अतः धनु के खवेदांश में हुआ इसके स्वामी गुरु हैं और अधिदेव यक्षेश हैं।

**स्पष्ट खवेदांश चक्र**

| सं | स्वामी | अंशादि | मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | विष्णु | 0 ।45 ।0 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 |
| 2 | चन्द्र | 1 ।30 ।0 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 |
| 3 | मरीचि | 2 ।15 ।0 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 |
| 4 | त्वष्टा | 3 ।00 ।0 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 |
| 5 | धाता | 3 ।45 ।0 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 |
| 6 | शिव | 4 ।30 ।0 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 |
| 7 | रवि | 5 ।15 ।0 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 |
| 8 | यम | 6 ।00 ।0 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 |
| 9 | यक्षेश | 6 ।45 ।0 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 |
| 10 | गन्धर्व | 7 ।30 ।0 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 |
| 11 | काल | 8 ।15 ।0 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 |
| 12 | वरूण | 9 ।00 ।0 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 |
| 13 | विष्णु | 9 ।45 ।0 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 |
| 14 | चन्द्र | 10 ।30 ।0 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 |
| 15 | मरीचि | 11 ।15 ।0 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 |
| 16 | त्वष्टा | 12 ।00 ।0 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 |
| 17 | धाता | 12 ।45 ।0 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 |
| 18 | शिव | 13 ।30 ।0 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 |
| 19 | रवि | 14 ।15 ।0 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 |
| 20 | यम | 15 ।00 ।0 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 |
| 21 | यक्षेश | 15 ।45 ।0 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 |
| 22 | गन्धर्व | 16 ।30 ।0 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 |
| 23 | काल | 17 ।15 ।0 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 |
| 24 | वरूण | 18 ।00 ।0 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 |
| 25 | विष्णु | 18 ।45 ।0 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 |
| 26 | चन्द्र | 19 ।30 ।0 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 |
| 27 | मरीचि | 20 ।15 ।0 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 |
| 28 | त्वष्टा | 21 ।00 ।0 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 29 | धाता | 21 ।45 ।0 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 |
| 30 | शिव | 22 ।30 ।0 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 |
| 31 | रवि | 23 ।15 ।0 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 |
| 32 | यम | 24 ।00 ।0 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 |
| 33 | यक्षेश | 24 ।45 ।0 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 |
| 34 | गन्धर्व | 25 ।30 ।0 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 |
| 35 | काल | 2615 ।0 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 | 11 | 5 |
| 36 | वरूण | 27 ।00 ।0 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 | 12 | 6 |
| 37 | विष्णु | 27 ।45 ।0 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 | 1 | 7 |
| 38 | चन्द्र | 28 ।30 ।0 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 | 2 | 8 |
| 39 | मरीचि | 29 ।15 ।0 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 | 3 | 9 |
| 40 | त्वष्टा | 30 ।00 ।0 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 | 4 | 10 |

## अक्षवेदांश साधन

**तथाक्षवेदभागानामधिपाश्चरभे क्रियात्।**
**स्थिरे सिंहाद् द्विभे चापात् विधीशविष्णवश्चरे।।**
**ईशाच्युतसुरज्येष्ठा विष्णुकेशाः स्थिरे द्विभे।**
**देवाः पंचदशावृत्त्या विज्ञेया द्विजसत्तमः।।**

उक्त श्लोक का अर्थ है कि चर राशियों में मेष से, स्थिर में सिंह से और द्विस्वभाव राशियों में धन से गणना करने पर पंचचत्वारिंशाश होते हैं। चरराशियों में ब्रह्मा, शिव, विष्णु स्थिर में शिवख् विष्णु, ब्रह्मा एवं द्विस्वभाव में विष्णु, ब्रह्मा, शिव, 15-25 आवृत्ति करके इनके अधिदेव होते हैं।

**उदाहरण** - जैसे लग्न 3।25।9।45 कर्क चर राशि के अन्तर्गत हैं और 38 वें खण्ड में हैं, अतः वृष के पंचचत्वारिंशाश में है, वृष का अधिपति शुक्र है और अधिदेव शिव हैं।

**स्पष्ट अक्षवेदांश चक्र**

| क्र सं | अंशादि | मे. | वृ. | मि. | क. | सि. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.** | 0 ।40 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 |
| **2.** | 1 ।20 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 |
| **3.** | 2 ।0 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 |
| **4.** | 2 ।4 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 |
| **5.** | 3 ।20 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 |
| **6.** | 4 ।0 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 |
| **7.** | 4 ।40 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 |
| **8.** | 5 ।20 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 |
| **9.** | 6 ।0 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 |
| **10.** | 6 ।40 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 |

| **11.** | 7 ।20 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **12.** | 8 ।0 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 |
| **13.** | 8 ।40 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 |
| **14.** | 9 ।20 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 |
| **15.** | 10 ।0 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 |
| **16.** | 10 ।40 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 |
| **17.** | 11 ।20 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 |
| **18.** | 12 ।0 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 |
| **19.** | 12 ।40 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 |
| **20.** | 13 ।20 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 |
| **21.** | 14 ।0 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 |
| **22.** | 14 ।40 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 |
| **23.** | 15 ।20 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 |
| **24.** | 16 ।0 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 |
| **25.** | 16 ।40 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 |
| **26.** | 17 ।20 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 |
| **27.** | 18 ।0 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 |
| **28.** | 18 ।40 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 |
| **29.** | 19 ।20 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 |
| **30.** | 20 ।0 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 |
| **31.** | 20 ।40 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 |
| **32.** | 21 ।20 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 |
| **33.** | 22 ।0 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 |
| **34.** | 22 ।40 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 |
| **35.** | 23 ।20 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 |
| **36.** | 24 ।0 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 |
| **37.** | 24 ।40 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 |
| **38.** | 25 ।20 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 |
| **39.** | 26 ।0 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 |
| **40.** | 26 ।40 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 |
| **41.** | 27 ।20 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 |
| **42.** | 28 ।0 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 | 6 | 10 | 2 |
| **43.** | 28 ।40 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 | 7 | 11 | 3 |
| **44.** | 29 ।20 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 | 8 | 12 | 4 |
| **45.** | 30 ।0 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 | 9 | 1 | 5 |

**षष्ट्यंश साधन**

**राशीन् विहाय खेटस्य द्विघ्नमंशाद्यमर्कहृत्।**
**शेषं सैकं च तद्राशेर्भपाः षष्ट्यंशपाः स्मृताः।।**
**घोरश्च राक्षसो देवः कुबेरो यक्षकिन्नरौ।**
**भ्रष्टः कुलघ्नो गरलो वरर्माया पुरीषकः।।**

**अपाम्पतिर्मत्वांश्च कालः सर्पामृतेन्दुकाः।**
**मृदुः कोमल-हेरम्ब-ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वराः।।**
**देवादौ कलिनाशश्च क्षितिशकमलाकरौ।**
**गुलिको मृत्युकालश्च दावाग्निर्घोरसंज्ञकः।।**
**यमश्च कण्टकसुधाऽमृतौ पूर्णनिशाकरः।**
**विषदग्धकुलान्तश्च मुख्यो वंशक्षयस्तथा।।**
**उत्पातकालसौम्याख्याः कोमलः शीतलाभिधः।**
**करालदंष्ट्रचन्द्रास्यौ प्रवीणः कालपावकः।।**
**दण्डभिनिर्मलः सौम्यः क्रूरोऽतिशीतलोऽमृतः।**
**पयोधिभ्रमणाख्यौ च चन्द्ररेखा त्वयुग्मपाः।।**
**समे भे व्यत्ययाज्ज्ञेयाः षष्ट्यंशेशाः प्रकीर्तिताः।**
**षष्टयंशस्वामिनस्त्वोजे तदीशाद् व्यत्ययः समे।।**
**शुभष्ट्यंशसंयुक्ता ग्रहाः शुभफलप्रदाः।**
**क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ता नाशयन्ति खचारिणः।।**

राशियों को छोड़कर अंशादि, ग्रह, भाव और स्पष्ट लग्न; जिसका षष्टयंश विचार करना है उसी काद्ध को दो से गुणा कर 12 का भाग दे। शेष में एक जोड़ने से गिनने पर जो संख्या होती है, वह ग्रहाश्रित राशि से गिनने पर जिस राशि की होती है उसी का षष्ट्यंश होता है। द्विगुणित अंशादि में एक युक्त करने पर जो संख्या हो, उतनी संख्यक विषम में घोर, राक्षसादि क्रम से और सम में चन्द्ररेखा, भ्रमणादि व्युक्रम से अधिदेव होते हैं।

**उदाहरण** - जैसे लग्न 3।25।9।45 इसमें राशि छोडकर अंशादि 25।9।45 को दो से गुणा कर 50।29।30 इसके अंश; 50, में 12 का भाग दिया, शेष 2 में से 1 जोड़ा तो 3 हुआ, अतः कर्क से तीसरी कन्या राशि का षष्ट्यंश हुआ, उसका स्वामी बुध है तथा सैक द्विघ्नांस 51 तुल्य, अग्नि आधिदेव हुए। इस प्रकार प्रतिभाव और प्रति ग्रह में षोड़श वर्ग बनाकर विचार करें कि शुभ वर्ग अधिक होने से उन-उन ग्रह और भावों का फल शुभपफलदायक तथा अशुभ ग्रह के वर्ग अधिक होने से अशुभफलदायक समझना चाहिए।

### वर्गभेद कथन –

वर्ग चार प्रकार के होते हैं –

१. षडवर्ग
२. समवर्ग
३. दशवर्ग
४. षोडश वर्ग

षडवर्ग में २,३ आदि के स्ववर्ग में रहने से किंशुकादि संज्ञा होती है। जैसे दूसरे वर्ग स्व वर्ग में रहने से किंशुक संज्ञा होती है। इसी प्रकार ३ से व्यंजन, ४ से चामर, ५ से छत्र, ६ से कुण्डल नामक संज्ञा होती है। सप्तवर्ग में षडवर्ग तक उक्त संज्ञा और ७ से मुकुट नामक संज्ञा होती है। दशवर्ग में २-३ आदि वर्ग की स्ववर्ग में रहने से पारिजात आदि संज्ञायें होती हैं। जैसे २ वर्ग की स्ववर्ग में रहने से पारिजातनामक संज्ञा होती है। इसी प्रकार ३ से उत्तम, ४ से गोपुर, ५ से सिंहासन, ६ से पारावत, ७ से देवलोक, ८ से ब्रह्मलोक, ९ से शक्रवाहन और १० वर्ग स्ववर्ग में रहने से श्रीधाम संज्ञा होती है। एवं षोडश वर्ग में २ आदि वर्ग के स्ववर्ग में रहने से भेदक संज्ञायें होती हैं। यथा २ स्ववर्ग से भेदक, ३ से कुसुम, ४ से नागपुष्प, ५ से कन्दुक, ६ से केरल,७ से कल्पवृक्ष, ८ से चन्दन, ९ से पूर्ण चन्द्र, १० से उच्चै:श्रवा, ११ से धन्वन्तरि, १२ से सूर्यकाल, १३ से विद्रूम, १४ से शक्रसिंहासन, १५ से गोलोक एवं १६ से श्रीवल्लभ नामक संज्ञा होती है। इस प्रकार वर्गभेद कहा गया है।

इनमें अपने उच्च, अपना मूल त्रिकोण और स्वभवन, लग्न, केन्द्राधिपतियों के वर्ग शुभ होते हैं। अस्तंगत, पराजित, नीचगत, बलहीन, शयनादि अवस्था में स्थित ग्रहों के वर्ग अशुभ फलदायक और शुभ फलों के नाशकारक होते हैं, ऐसा आप सभी को समझना चाहिए।

**बोध प्रश्न -2**

1. वर्ग ............. प्रकार के होते हैं।
2. अक्षवेदांश का शाब्दिक अर्थ ......... है।
3. षोडश वर्ग में ............ वर्ग होते हैं।
4. षडवर्ग में २,३ आदि के स्ववर्ग में रहने से ........... संज्ञा होती है।
5. षोडश वर्ग में १६ संख्या रहने पर ...... नामक संज्ञा होती है।

## 2.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि षोडश वर्ग' के बारे में जानने से पूर्व आप सभी को षोडश वर्ग का शाब्दिक अर्थ समझ लेना चाहिए। तो सर्वप्रथम 'षोडश' संस्कृत का शब्द है जिसका हिन्दी में अर्थ होता है – 16। यह संख्यावाची शब्द है और वर्ग शब्द से आप सभी परिचित हो ही चुके है। इस प्रकार 16 वर्ग या खाने अथवा कोष्ठक से सम्बन्धित को 'षोडश वर्ग' के नाम से जाना जाता है।

षोडश वर्ग के अन्तर्गत षड्वर्ग (गृह या लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश) सप्तमांश, दशमांश, षोडशांश, क्षेत्रांश, विशांश, चतुर्विशांश, भांश, खवेदांश, अक्षवेदांश और षष्ट्यंश आदि

होते हैं।

## 2.7 पारिभाषिक शब्दावली

षोडशवर्ग – षोडशवर्ग में कुल 16 वर्ग होते है।

किंशुकादि – षडवर्ग में २,३ आदि के स्ववर्ग में रहने से किंशुकादि संज्ञा होती है।

नवमांश – 3 अंश 20 कला का एक नवमांश होता है। राशि के नवें भाग को नवमांश कहते हैं।

द्वादशांश – राशि का 12 वॉं अंश द्वादशांश होता है। 2 अंश 30 कला इसका मान होता है।

त्रिशांश – एक त्रिशांश 1 अंश के बराबर होता है।

भांश – राशि का २७ वाँ भाग एक भांश के बराबर होता है।

## 2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्नों के उत्तर – 1**

1. ख 2. घ 3. ग 4. क 5. ख 6. ख

**बोध प्रश्नों के उत्तर – 2**

1. 4 2. 45 3. 16 4. किंशुकादि 5. श्रीवल्लभ 6. 1 अंश

## 2.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

जातकपारिजात- मूल लेखक – आचार्य वैद्यनाथ, टिका – हरिशंकर पाठक।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र – मूल लेखक – महर्षि पराशर, टिका- पं. पद्मनाभ शर्मा।

लघुजातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. कमलाकान्त पाण्डेय।

वृहज्जातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. सत्येन्द्र मिश्र।

सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा, टिका – डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी।

## 2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षोडश वर्ग से क्या तात्पर्य है।
2. अक्षवेदांश क्या है? वर्णन कीजिये।
3. चतुर्थांश का उल्लेख कीजिये।
4. षोडशवर्ग के गणितीय पक्ष का वर्णन कीजिये।
5. सोदाहरण भांश साधन विधि लिखिये।

# इकाई - 3 ग्रहों की अवस्था का विचार

**इकाई की संरचना**

## 3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई एम.ए. ज्योतिष तृतीय सेमेस्टर (MAJY-601) के द्वितीय खण्ड की तीसरी इकाई से सम्बन्धित है। इस इकाई का शीर्षक है – ग्रहों की अवस्था का विचार। इससे पूर्व की इकाई में आपने षडवर्ग, सप्तवर्ग एवं दशवर्ग एवं षोडश वर्ग का अध्ययन कर लिया है। आइए अब इस इकाई में ग्रहों की अवस्था से सम्बन्धित तथ्यों का अध्ययन करते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि आठ प्रकार की अवस्था बतलायी गयी है। इसके अतिरिक्त बालादि पंच अवस्थाओं का भी उल्लेख हमें प्राप्त होता है। गणितीय एवं फलादेश सम्बन्धित तथ्यों को जानने के लिए हमें ग्रहों की अवस्था का ज्ञान होना परमावश्यक है।

जन्मकुण्डली में ग्रह किस अवस्था में है? इसका ज्ञान किए बिना हम उसका सम्यक्तया फलादेश कथन कैसे कर सकते हैं। अत: आइए हम ज्योतिष शास्त्र में कथित विभिन्न प्रकार के ग्रहों की अवस्थाओं का ज्ञान हम इस इकाई में करते हैं।

## 3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- बता सकेंगे कि ग्रह- अवस्था क्या है?
- समझा लेंगे कि ग्रहों के कितने प्रकार की अवस्थायें होती है।
- विभिन्न जातक ग्रन्थों के आधार पर ग्रहों की अवस्थाओं से परिचित हो जायेंगे।
- ग्रहों की अवस्थाओं का महत्व समझ लेंगे।
- सिद्धान्त एवं फलित ज्योतिष में ग्रहों की अवस्थाओं की क्या भूमिका है? इसे बता सकेंगे।

## 3.3 ग्रहों की अवस्था का परिचय

जातक शास्त्र के प्राय: समस्त ग्रन्थों में ऋषियों द्वारा ग्रहों की अवस्था का उल्लेख किया गया है। जब आप प्रमुख कुछ ग्रन्थों का अवलोकन करेंगे तो पायेंगे कि उन अवस्थाओं के प्रकार भी अलग-अलग दिखलायी पड़ते है। जैसे – अंशों पर आधारित ग्रहों की बालादि अवस्था, ग्रहों की दीप्तादि अवस्था और ग्रहों की मानसिक अवस्था आदि। सारावली नामक ग्रन्थ में आपको दीप्तादि अवस्थाओं के 9 प्रकार और जातकपारिजात ग्रन्थ में ग्रहों की 10 प्रकार की मानसिक स्थितियों का

वर्णन प्राप्त होगा। आइए अब हम सभी विस्तारपूर्वक ग्रहों की अवस्थाओं का इस इकाई में अध्ययन करते हैं।

सर्वप्रथम क्या है ग्रहों की अवस्था? इसका विचार करते है तो –

**ग्रहाणां अवस्था वा स्थिति: ग्रहावस्था: भवति।** अर्थात् ग्रहों की अवस्था अथवा स्थिति का नाम ग्रहावस्था है। ग्रहों के विभिन्न अवस्थाओं को हम विविध ग्रन्थों के आधार पर समझ सकते हैं।

### 3.3.1 विभिन्न ग्रन्थानुसार ग्रहों की अवस्था विवेचन

सर्वप्रथम **जातकपारिजात** ग्रन्थ के ग्रहनामरूपगुणभेदाध्याय में ग्रहों की अवस्था का वर्णन हमें इस प्रकार मिलता है।

**मूल श्लोक:-**

**बालो धराज: शशिज: कुमारकस्त्रिंशद्गुरु: षोडशवत्सर: सित:।**
**पंचाशदर्को विधुरब्दसप्तति: शताब्दसंख्या: शनिराहुकेतव:।।** (श्लोक संख्या १४)

अर्थात् मंगल बालक है, बुध कुमार, वृहस्पति की ३० वर्ष, शुक्र की १६ वर्ष, सूर्य की ५० वर्ष, चन्द्रमा की ७० वर्ष तथा शनि, राहु और केतु की वय (अवस्था) १०० वर्ष है।

उपर्युक्त श्लोक का समर्थन **शुकजातक** नामक ग्रन्थ भी करता है। यथा –

**बालवयस्कौ भौम: कुमारवेशो बुधो गुरुस्त्रिंशत्।**
**शुक्र: षोडशवर्षो रविश्च पंचाशदब्दश्च।।**
**चन्द्र: सप्ततिवर्ष: शतवर्षं शनिराहुकेतो: स्यात्।**
**येषां प्रसूतिसमये सदसत्फलदायक: खेट:।।**
**बलसहित: स्वावस्थाकालस्वरूपं विशेषत: कुर्यात्।**

जातक पारिजात ग्रन्थ में ही ग्रहों की मानसिक स्थितियाँ का विवेचन इस प्रकार है –

**दीप्त: प्रमुदित: स्वस्थ: शान्त: शक्त: प्रपीडित:।**
**दीन: खलस्तु विकलो भीतोऽवस्था दश क्रमात्।।**

श्लोक का अर्थ है कि दीप्त, प्रमुदित, स्वस्थ, शान्त, शक्त, प्रपीडित, दीन, खल, विकल और भीत – ये ग्रहों की १० प्रकार की मानसिक स्थितियाँ होती है। इन दस स्थितियों में कब कौन अवस्था में ग्रह होता है? यह आचार्य वैद्यनाथ जी ने इस प्रकार बतलाया है –

**स्वोच्चत्रिकोणोपगत: प्रदीप्त: स्वस्थ: स्वगेहे मुदित: सुहृद्धे।**
**शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयात: शक्तोऽतिशुद्ध: स्फुटरश्मिजालै:।।**

**महाभिभूतस्त्वतिपीडित: स्यादरातिराश्यंशगतोऽतिदीन:।**
**खलस्तु पापग्रहवर्गयोगान्नीचेऽतिभीतो विकलोऽस्तयात:।।**

अर्थात् अपनी उच्च राशि में मूलत्रिकोण में स्थित ग्रह प्रदीप्त, स्वगृह अर्थात् अपनी राशि में स्थित ग्रह स्वस्थ, मित्रराशि में प्रमुदित, शुभग्रहों के वर्ग में शान्त, स्फुटरश्मिजाल से युक्त ग्रह शक्त, युद्ध में पराजित ग्रह अतिपीडित, शत्रुराशि में और शत्रुनवमांश में अतिदीन, पापग्रह के वर्ग में खल, अपनी नीचराशि में अतिभीत तथा अस्तग्रह विकल होता है।

भौमादि ग्रह के परस्पर संयोग को ग्रहयुद्ध कहते हैं –

**दिवसकरेणास्तमय: समाराम: शीतरश्मिसहितानाम्।**
**कुसुतादीनां युद्धं निगद्यतेऽन्योन्ययुक्तानाम्।।**

तथा पराजित ग्रह के लक्षण इस प्रकार कहे गये हैं –

**दक्षिणदिक्स्थ: पुरुषो वेपथुरप्राप्य सन्निवृत्तोऽणु:।**
**अधिरूढो विकृतो निष्प्रभो विवर्णश्च य: स जित:।।**

ग्रहों के राशि, अंश, कला पर्यन्त समानता होने पर ग्रह युद्धरत होते हैं। उत्तरशर से युक्त ग्रह विजयी होता है।

## ग्रहों की बालादि अवस्था (अंशों पर आधारित) –

अंशों पर आधारित ग्रहों की एक अन्य प्रकार की बालादि छ: प्रकार की अवस्था होती है। विषमराशि के प्रारम्भ से ६° राशि पर्यन्त बाल्यावस्था, ६° – १२° अंश तक कुमारावस्था, १२°– १८° अंश तक युवावस्था, १८°-२४° अंश तक वृद्धावस्था तथा २४° अंश से राशि के अन्त ३०° तक मृतावस्था होती है। समराशि में ये अवस्थायें विपरीत क्रम से होती है। यथा वृहत्पराशरहोराशास्त्र नामक ग्रन्थ में पराशर जी कहते हैं -

**क्रमाद् बाल: कुमारोऽथ युवा वृद्धस्तथा मृत:।**
**षडंशैरसमे खेट: समे ज्ञेयो विपर्ययात्।।**

**स्पष्ट चक्र - विषम राशि में –**

| **ग्रहों का अंश** | ०°-६° | ६° -१२° | १२° -१८° | १८° -२४° | २४°-३०° |
|---|---|---|---|---|---|
| **ग्रहों की अवस्था** | बाल | कुमार | युवा | वृद्ध | मृत |

**सम राशि में**

| ग्रहों का अंश | ०°-६° | ६° -१२° | १२° -१८° | १८° -२४° | २४°-३०° |
|---|---|---|---|---|---|
| **ग्रहों की अवस्था** | मृत | वृद्ध | युवा | कुमार | बाल |

आचार्य कल्याणवर्मा कृत् **सारावली नामक ग्रन्थानुसार** ग्रहों की दीप्तादि ९ अवस्था –

**दीप्त: स्वस्थो मुदित: शान्त: शक्तो निपीडितो भीत:।**

**विकल: खलश्च कथितो नवप्रकारो ग्रहो हरिणा।।**

१ दीप्त, २ स्वस्थ, ३ मुदित, ४ शान्त, ५ शक्त, ६ निपीडित, ७ भीत, ८ विकल, ९ खल ये ९ प्रकार की ग्रहों की अवस्था हरि ने कही हैं।

**दीप्तादि का ज्ञान** –

**स्वोच्चे भवति च दीप्त: स्वस्थ: स्वगृहे सुहृद्गृहे मुदित:।**

**शान्त: शुभवर्गस्थ: शक्त: स्फुटकिरणजालश्च।।**

**विकलो रविलुप्तकरो ग्रहाभिभूतो निपीडितश्चैवम्।**

**पापगणस्थश्च खलो नीचे भीत: समाख्यात:।।**

ग्रह अपनी उच्च राशि में दीप्त, अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र की राशि में मुदित, शुभग्रह के वर्ग में शान्त, अनस्तंगत शक्त, सूर्य की किरणों से अस्त ग्रह विकल, युद्ध में पराजित निपीडित, पापग्रह के वर्ग में खल और अपनी नीच राशि में ग्रह भीत अवस्था प्राप्त करता है।

**स्पष्टार्थ चक्र –**

| **ग्रह स्थान** | उच्च राशि में | अपनी राशि में | मित्र की राशि में | शुभग्रह के वर्ग में | अनस्तंगत | सूर्य किरणों से अस्त | युद्ध में पराजित | पापग्रह के वर्ग में | नीच राशि में |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **ग्रहों की अवस्था** | दीप्त | स्वस्थ | मुदित | शान्त | शक्त | विकल | निपीडित | खल | भीत |

**विशेष** – वृहत्पराशरहोराशास्त्र नामक ग्रन्थ में अधिमित्र के गृह में मुदित, मित्र के गृह में शान्त इत्यादि विरोध प्रतीत होता है।

**फलदीपिका ग्रन्थ के अनुसार –**

**स्वोच्चे प्रदीप्तः सुखितस्त्रिकोणे स्वस्थः स्वगेहे मुदितः सुहृद्भे।**
**शान्तस्तु सौम्यग्रहवर्गयुक्तः शक्तो मतोऽसौ स्फुटरश्मिजालः।।**
**ग्रहाभिभूतः स निपीडितः स्यात् खलस्तु पापग्रहवर्गयातः।**
**सुदुःखितः शत्रुगृहे ग्रहेन्द्रो नीचेऽतिभीतो विकलोऽस्तयातः।।**
**पूर्णं प्रदीप्ता विकलास्तु शून्यं मध्येऽनुपाताच्च शुभं क्रमेण।**
**अनुक्रमेणाशुभमेव कुर्युर्नामानुरूपाणि फलानि तेषाम्।।**

अर्थात् उच्च राशि में ग्रह **प्रदीप्त** कहलाता है। अपनी मूल त्रिकोण राशि में इसे सुखित कहते हैं। अपनी स्वराशि में ग्रह **स्वस्थ** कहलाता है। मित्र के गृह में मुदित, सौम्य ग्रह के वर्ग में हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो ग्रह को शान्त कहते हैं। जब किसी ग्रह का प्रकाश मण्डल पृथ्वी से दिखाई दे तो ऐसा ग्रह **शक्त** कहलाता है अर्थात् शुभ प्रभाव दिखाने की ताकत उसमें होती है। अस्त ग्रह बहुत निकृष्ट फल दिखाता है। इतना कमजोर रहता है कि वह कुछ भलाई करने के काबिल ही नहीं रहता। अस्त ग्रह को विकल भी कहते हैं अर्थात् यदि अस्त न हो तो शक्त, यदि अस्त हो तो विकल। जो ग्रह युद्ध में दूसरे ग्रह से पराजित हुआ हो उसे **निपीडित** कहते हैं। जो पापग्रह या ग्रहों के वर्ग में हो उसे खल कहते हैं। जो शत्रु गृह में हो उसे पूर्ण दु:खी और जो अपनी नीच राशि में हो उसे अतिभीत कहते हैं। प्राय: जैसा कि प्रदीप्त सुखित, स्वस्थ, मुदित, शान्त, शक्त, निपीड़ित, खल, सुदु:खित, नीच और विकल यह जो ११ अवस्थायें बतायी गयी हैं – इनमें नाम के अनुसार ही फल समझना चाहिये। प्रथम ६ अवस्थाओं में ग्रह शुभ फल देता है। उच्च में १६ आना शुभ, सुखित में १४ आना, स्वराशि में १२ आना, मित्र राशि में १० आना, शान्त अवस्था में ८ आना और शक्त अवस्था में ६ आना शुभ। निपीडित अवस्था में ६ आना अशुभ, खल अवस्था में ८ आना अशुभ फल, सुदु:खित अवस्था में १० आना अशुभ फल, नीच राशि में १२ आना अशुभ फल, और विकल अवस्था में १६ आना अर्थात् पूर्ण अशुभ फल समझना चाहिये। अच्छी अवस्था वाले ग्रह की दशा अन्तर्दशा में शुभ परिणाम होंगे। निकृष्ट अवस्था वाले ग्रह की दशा-अन्तर्दशा में अशुभ फल होगा।

## 3.4 ग्रहों की अवस्था फल विचार

ग्रहों की अवस्था के पश्चात् अब उनके शुभाशुभ फलों का चिन्तन करते हैं।

**दीप्त ग्रह का फल –**

**दीप्ते विचरति पुरुषः प्रतापविषमाग्निदग्धरिपुवर्गः।**

**लक्ष्म्यालिंगतदेहो गजमदसंसिक्तभूपृष्ठः।।**

अर्थात् यदि जन्मांग स्थित ग्रह दीप्त अवस्था में हो तो वह मनुष्य अपनी प्रताप रूप असह्य अग्नि से शत्रु वर्ग को भस्म कर विचरण करता है, तथा लक्ष्मी से देह आलिंगित होता है अर्थात् समस्त सम्पत्ति सुख प्राप्त होता है एवं उसके हाथियों के मद से पृथ्वी का उपरी भाग भीग जाता है।

**स्वस्थ अवस्थागत का फल** –

**स्वस्थः करोति जन्मनि रत्नानि सुखानि कनकपरिवारान्।**
**नृपतेर्दण्डपतित्वं गृहधान्यकुटुम्बपरिवृद्धिम्।।**

अर्थात् जन्मकाल में स्वस्थ अवस्था में स्थित ग्रह अनेक सुवर्ण के आभूषण, रत्नादि विविध प्रकार के सुख करता है, और राज्य में न्यायाधीशादि अधिकार व गृह में धान्य एवं कुटुम्ब वृद्धि करता है।

**मुदित अवस्थागत ग्रह का फल –**

**मुदिते विलसति मुदितो विलासिनीकनकरत्नपरिपूर्णः।**
**विजितसकलारिपक्षः समस्तसुखभांग नरो भवति।।**

श्लोक का अर्थ है कि यदि मुदित अवस्था में ग्रह हो तो जातक प्रसन्न चित्त होकर विलास करता है। तथा स्त्री सुवर्ण रत्न से पूर्ण, समस्त शत्रु पक्ष को जीतने वाला, समस्त सुखों का भोगकर्त्ता मनुष्य होता है।

**शान्त अवस्थागत ग्रह का फल-**

**शान्ते प्रशान्तचित्तः सुखधनभागी महीपतेः सचिवः।**
**विद्वान्परोपकारी धर्मपरो जायते पुरुषः।।**

यदि शान्त अवस्था में ग्रह हो तो चित्त में अधिक शान्ति, सुख व धन का प्राप्त कर्त्ता, राजा का मन्त्री, मनीषी, दूसरे का उपकार करने वाला, धर्मपरायण एवं भाग्यवान होता है।

**शक्त अवस्थागत ग्रह का फल –**

**स्त्रीवस्त्रमाल्यगन्धैर्विलसति पुरुषः सदा विततकीर्तिः।**
**दयितः सर्वजनस्य च शक्ताख्ये भवति विख्यातः।।**

यदि शक्त अवस्था में ग्रह हो तो जातक स्त्री, वस्त्र, माला, सुगन्धित द्रव्यों से आनन्दित होता है, उसकी कीर्ति सदा विस्तृत होती है और समस्त जनों का प्रिय व संसार में ख्याति प्राप्त होती है।

**पीड़ित अवस्थागत ग्रह का फल –**

**दुःखैर्व्याधिभिररिभिः प्रपीडयते पीडिताख्ये तु।**
**देशाद्देशं विचरति बन्धुवियोगाभिसंतप्तः।।**

यदि पीड़ित अवस्था में ग्रह हो तो जातक नाना प्रकार के दु:खों से, रोगों से शत्रुओं से पीड़ित होता है। और बन्धुओं के वियोग से दु:खी होकर देश- देशान्तर में विचरण करता है।

**भीत अवस्थागत ग्रह का फल –**

**बहुसाधनोऽपि राजा प्रध्वस्तबल: प्रपीडितो रिपुणा।**
**नाशमुपयाति विजितो भीते दैन्यं परं प्राप्त:।।**

यदि भीत अवस्था में ग्रह हो तो बहुत साधनों से युक्त राजा भी शत्रुओं से पीड़ा प्राप्त कर निर्बल और पराजित होकर नाश को प्राप्त होता है या परम दीनता को प्राप्त करता है।

**विकल अवस्थागत ग्रह का फल –**

**स्वस्थानपरिभ्रष्ट: क्लिष्टो मलिन: प्रयाति परदेशम्।**
**विध्वस्तबलो विकले रिपुबलसंचकितचित्तश्च।।**

यदि विकल अवस्था में ग्रह हो तो शत्रु बल से चकित चित्त होकर अपने स्थान से पृथक् होता है और क्लेश होने से मलीन चित्त करके दूसरे देश में जाता है, तथा उसका बल, अथवा धन नष्ट हो जाता है।

## बोध प्रश्न -1

1. ग्रहों की दिप्तादि कुल कितनी अवस्थायें होती है।
   क. ५ ख.७ ग.८ घ.१०
2. सूर्य की अवस्था कितने वर्ष की है।
   क. ५० ख.६० ग. ७० घ.८०
3. मंगल की निम्न में कौन सी अवस्था है।
   क. बालक ख. कुमार ग. १० वर्ष घ. ५० वर्ष
4. उच्च राशि में ग्रह क्या कहलाता है।
   क. सुप्त ख. प्रदीप्त ग. खल घ. शक्त
5. फलदीपिका के अनुसार स्वराशि का ग्रह होता है।
   क. स्वस्थ ख. प्रदीप्त ग. शक्त घ.सूक्त
6. यदि मुदित अवस्था में ग्रह हो तो जातक –
   क. प्रसन्न रहता है। ख. रोता है। ग. गाता है। घ. कोई नहीं

**खल अवस्थागत ग्रह का फल –**

**स्त्रीभरणदुखतप्त: समस्तधननाशकलुषितमनस्क:।**
**न जहाति शोकभारं कथमपि खलसंज्ञिते पुरुष:।।**

यदि खल अवस्था में ग्रह हो तो जातक – स्त्री पुत्रादि पालन में समर्थ न होकर उनके दु:ख से दु:खी, सम्पूर्ण धन नाश से कलुषित मनवाला कभी भी अन्त:करण में शोक रूपी भार का त्याग नहीं करता है।

**उच्च राशि में ग्रह का फल –**

**उच्चराशौ विलोमे च फलं नान्यैरिहेष्यते।**
**कालस्यातिबहुत्वाच्च तस्मात्स्वोच्चेऽतिवक्रते।।**

यदि उच्च राशि में वक्री ग्रह हो तो अन्य आचार्यों के मत में फल नहीं होता, तथा उच्चराशि में अतिवक्र होने पर भी काल की अधिकता से फल नहीं होता।

**जातकपारिजात ग्रन्थानुसार ग्रहों की अवस्थाफल विचार –**

**फलं पादमितं बाले फलार्धं च कुमारके।**
**यूनि पूर्णं फलं ज्ञेयं वृद्धे किंचित् मृते च खम्।।**

अर्थात् ग्रह यदि बाल्यावस्था में हो तो १ चरण फल, कुमारावस्था में २ चरण फल, युवावस्था में पूर्ण फल, वृद्धावस्था में ग्रह हो तो अत्यन्त अल्प फल एवं मृतावस्था में ग्रह हो तो फलाभाव होता है।

**जाग्रदादि ग्रहों की अवस्था फल –**

**स्वभोच्चयो: समसहृदभयो: शत्रुभनीचयो:।**
**जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्या अवस्था नामदृक्फला:।।**

ग्रह अपनी राशि या अपने उच्चस्थ हो तो जाग्रदवस्था, अपने मित्रगृह में या समगृह में ग्रह बैठा हो तो स्वप्नावस्था एवं अपने शत्रुगृह में या अपनी नीच राशि में ग्रह स्थित हो तो सुषुप्ति नामक अवस्था होती है। इन अवस्थाओं के फल नामसदृश ही जानना चाहिए।

**जागरे च फलं पूर्णं स्वप्ने मध्यफलं तथा।**
**सुषुप्तौ तु फलं शून्यं विज्ञेयं द्विजसत्तम्।।**

जाग्रत अवस्था में पूर्ण फल, स्वप्नावस्था में मध्य फल और सुषुप्ति अवस्था में शून्य फल प्राप्त होता है।

जातक पारिजात ग्रन्थ में ग्रहों की दीप्तादि अवस्था के साथ-साथ लज्जितादि (लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित और क्षोभित ये छ: अवस्था) अवस्था, शयनादि (शयन, उपवेशन, नेत्रपाणि,

प्रकाशन, गमन, आगमन, सभावास, आगम, भोजन, नृत्यलिप्सा, कौतुक, निद्रा आदि) अवस्था का विस्तृत वर्णन किया गया है।

**सूर्य की अवस्थाओं का फल** -

सूर्य यदि **शयनावस्था** में स्थित हो तो जातक को मन्दाग्नि रोग, पैर में स्थूलता, पित्त का प्रकोप, गुदा में व्रण एवं हृदय में शूलरोग का प्रकोप होता है। **उपवेशनावस्था** में सूर्य हो तो जातक दरिद्र, भारवाही, बहसकारक, विद्या में रत, कठोर हृदय और धन का विनाश करने वाला होता है। **नेत्रपाणि अवस्था** में हो तो मनुष्य सदैव आनन्दित, विवेकी, परोपकारी, बल तथा वित्तयुक्त, महासुखी और राजा का कृपापात्र होता है। यदि **प्रकाशन अवस्था** में सूर्य हो तो जातक उदार हृदय वाला, धनी, वाचाल, अधिक पुण्यकर्ता, महाबली और सुन्दर रूप वाला होता है। गमन अवस्था में सूर्य रहने पर जातक विदेशवासी, दुःखी, सदा आलसी, बुद्धि तथा धन से हीन, भययुत और क्रोधी होता है। सूर्य के आगमन अवस्था में रहने पर जातक परस्त्री में रत, स्वजन से रहित, सदैव भ्रमणकारी, धूर्तता में कुशल, मलिन, कुबुद्धि और कृपण होता है। सभावास अवस्था में सूर्य के रहने पर जातक परहितकारक, परोपकार में तत्पर, सदैव धन-रत्न से परिपूर्ण, गुणी, पृथ्वी पर नवीन वस्त्र-गृह से युत, महाबली, विचित्र, मित्रप्रेमी, दयालु और कलाकार होता है। आगम अवस्था में सदैव शत्रुओं से दुःखी, चंचल, दुष्ट, दुर्बल, धर्म-कर्म से हीन और मद से उन्मत्त होता है। यदि सूर्य भोजन अवस्था में हो जातक की शरीरसन्धि में सदैव पीड़ा, परस्त्री संपर्क से धननाश, बल में कमी, झूठ बोलने वाला, शिर में पीड़ा, कुअन्न भोजन और कुमार्ग में चलने वाला होता है। नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो सूर्य जातक सदैव विद्वज्जनों से सम्मानित, पण्डित, काव्य विद्याओं का मर्मज्ञ और पृथ्वीमण्डल में राजपूज्य होता है। कौतुक अवस्था में सूर्य के रहने पर जातक सदैव आनन्द हर्षयुक्त, ज्ञानी, यज्ञकर्ता, राजभवन में रहने वाला, शत्रु से भयभीत, सुरूप और काव्य विद्या में रत रहने वाला होता है। निद्रावस्था में सूर्य के रहने पर उस जातक की आँख सदैव निद्रा से युक्त रहती है, वह विदेश में रहने वाला होता है एवं उसकी पत्नी की हानि तथा अनेक प्रकार से उसके धन का नाश होता है।

**चन्द्रमा की अवस्था फल** -

जन्म समय में चन्द्रमा **शयनावस्था** में हो जातक मानी, शीतल स्वभाव वाला, कामी और धननाशकारक होता है। **उपवेशन** अवस्था में हो तो जातक रोगयुत, मन्दबुद्धि, विशेष धन से रहित, कठोर, कुकर्मकारक एवं दूसरे के धन का हरण करने वाला होता है। **नेत्रपाणि** अवस्था में चन्द्रमा के रहने पर जातक महारोगी, बकवादी, धूर्त एवं कुकर्म में रत रहने वाला होता है। यदि चन्द्रमा **प्रकाश**

अवस्था में हो तो जातक संसार में विकाशकारक, स्वच्छ गुणों से युत, राजा से धन प्राप्त करने वाला, हाथी, घोड़े आदि वाहनों से परिपूर्ण, धन, आभूषण, वस्त्रादि से युत, प्रतिदिन स्त्री से सुखी एवं तीर्थ में भ्रमण करने वाला होता है। **गमन** अवस्था में चन्द्रमा हो और विशेष करके कृष्ण पक्ष का जन्म हो तो जातक पापी, क्रोधी, सदैव नेत्ररोग से पीड़ित और शुक्ल पक्ष में हो तो डरपोक होता है। यदि चन्द्रमा **आगमन** अवस्था में हो तो जातक मानी, पैर में रोगयुत, गुप्त पाप करने वाला, दीन बुद्धि और सन्तोषरहित होता है। **सभा** अवस्था में चन्द्रमा के रहने पर जातक सभी जनों में श्रेष्ठ, राजमान्य, अधिक सुन्दर, स्त्रियों को आनन्द देने वाला, सबसे प्रेमभाव रखने वाला और गुणज्ञ होता है। यदि चन्द्रमा **आगम** अवस्था में हो तो जातक वाचाल शक्तियुक्त और धार्मिक एवं यदि कृष्ण पक्ष में हो तो दो भार्या वाला, रोगी, दुष्ट और हठी होता है। **भोजन** अवस्था में पूर्ण चन्द्रमा हो तो जातक मानी, वाहनयुत, जनों को आनन्दित करने वाला एवं कलत्र पुत्रों से सुखी होता है। यह सभी फल शुक्ल पक्ष में कहे गये हैं, परन्तु कृष्ण पक्ष में शुभ फल नहीं होता। बलवान चन्द्रमा यदि **नृत्यलिप्सा** अवस्था में हो तो जातक बली और गीतज्ञ तथा रसज्ञ होता है। कृष्णपक्ष में पापकारक होता है। **कौतुक** अवस्था में चन्द्रमा रहने पर जातक राजा या राजसदृश धनवान, कामकलाओं में चतुर एवं वेश्याओं में रमण करने पर पटु होता है। यदि चन्द्रमा **निद्रा** अवस्था में हो और गुरु से युत हो तो मानवों में श्रेष्ठ होता है। यदि गुरु युत न हो और क्षीण हो तो जातक की भार्या और एकत्रित धन का नाश होता है तथा उसके घर में श्रृगाली विचित्र शब्दों से रोती है।

**भौम अवस्था फल** –

यदि भौम या मंगल **शयन** अवस्था में हो तो जातक व्रण से युत एवं बहुत खुजली तथा दाद से पीड़ित रहता है। **उपवेशन** अवस्था में भौम हो तो जातक बली, सदा पापकर्म में रत, झूठ बोलने वाला, ढीठ, धनी और स्वधर्म से रहित होता है। **नेत्रपाणि** अवस्था में होकर भौम लग्न में बैठा हो तो जातक दरिद्र एवं अन्य भाव में हो तो नगरप्रमुख होता है। **प्रकाश** अवस्था में हो तो जातक गुण का पात्र तथा राजा से सम्मान, मान और आदर प्राप्त करता है। पंचमस्थ मंगल हो तो पुत्र कलत्र से वियोग और राहु से योग हो तो उसका महापतन होता है। **गमन** अवस्था में मंगल हो तो जातक प्रतिदिन भ्रमण करने वाला, व्रण का भय, पत्नी से विवाद, दाद, खुजली और धन की हानि होती है। मंगल के **आगमन** अवस्था में रहने पर जातक गुणयुत, मणिरत्नयुत, तीक्ष्ण शस्त्र रखने वाला, गजसदृश बली, शत्रु-नाशकर्ता एवं अपने आश्रित जनों के सन्ताप का हरण करने वाला होता है। यदि भौम **सभा** अवस्था में रहकर अपने उच्च राशिस्थ हो तो जातक युद्धकलाओं में निपुण, धर्म में अग्रगण्य और धनी होता है। यदि त्रिकोण में मंगल हो तो जातक विद्या से हीन, व्यय में स्त्री-पुत्र-

मित्ररहित, अन्य स्थानों में राजसभाश्रेष्ठ, धनी, मानी और दानी होता है। **आगम** अवस्था में मंगल हो तो जातक नास्तिक, धर्म-कर्म रहित, कर्णशूल आदि रोग से युत, कातर बुद्धि वाला और कुसंग करने वाला होता है। **भोजनावस्था** में यदि मंगल हो तो जातक मिष्ठान्नभोजी होता है। यदि बलरहित मंगल हो तो जातक नीच कर्मकारक और मानरहित होता है। **नृत्यलिप्सावस्था** में राजा से अतुल धन प्राप्त करने वाला होता है एवं उसके गृह में सभी प्रकार के रत्न, सोना, प्रवाल आदि सम्पत्ति होती है। यदि मंगल **कौतुक** अवस्था में हो तो जातक कौतुक करने वाला एवं मित्र-पुत्रादि से परिपूर्ण होता है। यदि भौम उच्चस्थ हो तो जातक राजा तथा गुणज्ञ व्यक्तियों से मान्य होता है। **निद्रावस्था** में मंगल हो तो जातक क्रोधी, बुद्धि और धन से हीन, धूर्त्त, धर्म से च्युत और रोगों से पीड़ित रहता है।

**बुध अवस्था फल –**

यदि बुध **शयन** अवस्था में रहकर लग्न में हो तो जातक भूख से पीड़ित, भ्रमण में असमर्थ एवं गुंजासदृश आँख वाला होता है तथा अन्य भाव में हो तो परस्त्रीगामी और धूर्त होता है। **उपवेशन** अवस्था में हो और लग्न में हो तो अपने गुणसमूह से पूर्ण होता है। **नेत्रपाणि** अवस्था में यदि बुध हो तो विद्या और विवेक से हीन, मित्रता से रहित एवं मानी होता है। यदि पुत्रस्थान में बुध हो तो पुत्र कलत्र सुख से हीन, अधिक कन्या सन्तान वाला एवं राजगृह से धन-लाभ करने वाला होता है। **प्रकाश** अवस्था में बुध के रहने पर जातक दान करने वाला, दयालु, पुण्यकर्ता, अनेक प्रकार की विद्या का ज्ञाता विवेकी और दुष्टों को दबाने वाला होता है। **गमन** अवस्था में बुध हो तो जातक राजभवन में आने-जाने वाला होता है और उसका गृहलक्ष्मी से पूर्ण और विचित्र होता **है। आगम अवस्था** में बुध हो तो जातक नीच की सेवा से धनोपार्जन करने वाला, दो पुत्र वाला तथा उसे प्रतिष्ठा देने वाली एक कन्या भी होती है। **भोजन अवस्था** में हो तो सदैव वाद-विवाद से धन की हानि, राजभय, दुर्बल, चंचल होता है तथा उसे स्त्री और ऐश्वर्य का सुख नहीं होता है। **नृत्यलिप्सा** अवस्था में बुध हो तो जातक मान, वाहन, रत्न, मित्र, पुत्र प्रताप से युत और सभाप्रमुख होता है। कौतुक अवस्था में हो तो जातक गायन विद्या में निपुण होता है। **निद्रावस्था** में बुध हो तो जातक को निद्रा से सुख, व्याधि, समाधि योग से युत, सहोदररहित, अत्यधिक ताप एवं स्वजनों से वाद-विवाद के कारण धन-मान का नाश होता है।

**गुरु अवस्था फल** –

यदि गुरु जन्मकाल में **शयन** अवस्था में हो तो जातक बलयुत होने पर भी कम बोलने वाला, गौर वर्ण, लम्बी डाढ़ी वाला और निरन्तर शत्रुभय से युत रहता है। **उपवेशन** अवस्था में हो तो जातक

वक्ता, गर्व करने वाला, राजा और रिपु से परितप्त, पैर, जँघा, मुख और हाथ में व्रण से युक्त होता है। **नेत्रपाणि** अवस्था में गुरु के रहने पर जातक रोगयुक्त, श्रेष्ठ सम्पत्ति से विमुख, गान और नृत्य का प्रिय, कामवासनायुत, गौर वर्ण और अन्य वर्गों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। **प्रकाश** अवस्था में गुरु हो तो गुणों से आनन्दित, सुन्दर सुख से युत एवं तेजस्वी होता है। **गमनावस्था** में हो तो जातक साहसी, मित्र और सुख से परिपूर्ण, प्रसन्न, पण्डित, विविध धन-सम्पत्ति से युत और वेद का ज्ञाता होता है। **आगमन** अवस्था में हो तो उसके गृह में अनेक मान्य जन का आगमन, सुन्दर स्त्री और लक्ष्मी सदैव अपना निवास स्थान बनाती है। **सभावस्था** में गुरु के रहने पर जातक गुरु के सदृश वाचाल, श्वेत मुक्ता-माणिक्य आदि रत्नों से परिपूर्ण, हाथी आदि वाहनों से युक्त तथा अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है। **आगम** अवस्था में गुरु हो तो उत्तम वाहन सुख, उत्तम विद्याओं का ज्ञाता, सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण तथा सर्वत्र मान प्राप्त करने वाला होता है। **भोजन** अवस्था में गुरु के रहने पर जातक सुन्दर भोजन करने वाला होता है। **नृत्यलिप्सावस्था** में हो तो जातक राजमान्य, धनी, धर्माज्ञाता, तन्त्रविद् तथा शब्द विद्या में निपुण होता है। **कौतुकावस्था** में रहने पर जातक कुतूहली, महाधनी, अपने कुल में सूर्य के समान, कृपालु, कला ज्ञाता, सुखी एवं राजभवन में रहने वाला होता है। **निद्रावस्था** का गुरु जातक को सभी कार्यों में मूर्ख, दरिद्रता से पीड़ित और पुण्यकर्म से रहित बनाता है।

**शुक्र अवस्था फल –**

यदि शुक्र **शयन** अवस्था में हो तो जातक बलवान होता हुआ भी दन्तरोगी, क्रोधीकार, धनहीन एवं वेश्यागमन करने वाला होता है। यदि शुक्र **उपवेशन** अवस्था में हो तो नवीन मणि,वज्र, सोना, आभूषण से सुख, निरन्तर शत्रु का क्षय एवं राजा से मान-आदर की वृद्धि होती है। **नेत्रपाणि** अवस्था में शुक्र यदि लग्न, सप्तम, दशम भाव में हो तो शीघ्र ही धनागम होता है। **प्रकाश** अवस्था में होकर शुक्र अपने गृह में, उच्च में, अथवा मित्रगृह में हो तो जातक मदोन्मत्त हाथी के सदृश बलशाली, राजा के समान धनी, विद्या तथा संगीत में पारंगत होता है। **गमन** अवस्था में शुक्र हो तो उसके माता की मृत्यु होती है। **आगमन** अवस्था में शुक्र हो तो जातक धनी, सत्तीर्थ में भ्रमण करने वाला तथा सदा उत्साही होता है। **सभावस्था** में शुक्र हो तो जातक अपने प्रताप से राजदरबार में चतुर, गुणी, शत्रुहन्ता करने वाला तथा धनाधिप होता है। **भोजनवस्था** में शुक्र हो तो भूख से पीड़ित, रोग का प्रकोप एवं शत्रुओं से अनेक प्रकार की परेशानी होती है। **कौतुक** अवस्था में शुक्र हो तो इन्द्रसदृश पराक्रमी, सभा में वाचाल शक्ति से युत, श्रेष्ठ विद्या का ज्ञाता और उसके गृह में सदैव लक्ष्मी का निवास होता है। **निद्रावस्था** में शुक्र रहे तो जातक अन्य की सेवा करने वाला, दूसरे की निन्दा करने

वाला, वीर, वातूनी तथा पृथ्वी पर भ्रमण करने वाला होता है।

**शनि अवस्था फल** -

यदि शनि **शयन** अवस्था में हो तो जातक प्रथम अवस्था में भूख प्यास से दु:खी और श्रान्त तथा रोगी रहता है एवं वृद्धावस्था में भाग्यवान होता है। शनि के **उपवेशन** अवस्था में रहने पर जातक प्रबल शत्रु से संतप्त, व्यर्थ व्यय करने वाला, दाद-खुजली से युक्त, अभिमानी तथा राजदण्ड भोगने वाला होता है। **नेत्रपाणि** अवस्था में शनि के रहने पर जातक सुन्दर पत्नी और लक्ष्मी से युक्त, राजा तथा अपने हितचिन्तकों से उपकृत तथा बहुत कलाओं में निपुण होता है। **प्रकाश** अवस्था में शनि के स्थित होने से अनेक प्रकार के गुण, धन और बुद्धि से युक्त, कृपालु एवं शिव का भक्त होता है। **गमन** अवस्था में शनि के रहने पर जातक महाधनी, पुत्रों से आनन्दित, व्ययकारक, शत्रु की भूमि का हरण करने वाला एवं राजभवन का पण्डित होता है। **आगमन** अवस्था में शनि के रहने पर जातक गदहे पर पद प्राप्त करने वाला, पुत्र-स्त्री सुख से हीन, दीन एवं आश्रयहीन होकर पृथ्वी पर भ्रमण करता है। **सभा** अवस्था में शनि के रहने पर रत्न, सोना, मोती आदि रत्नों से आनन्दित, नीतिज्ञ एवं महाधनी होता है। **आगम** अवस्था में शनि के रहने पर रोग की वृद्धि, मन्दमति एवं राजदरबार से आर्थिक वृद्धि करने से मति से हीन होता है। यदि शनि **भोजन** अवस्था में हो उसे सरस भोजन, नेत्रज्योति में कमी एवं मोह से बुद्धि में चंचलता प्राप्त होती है। **नृत्यलिप्सा** अवस्था में धार्मिक, धन से परिपूर्ण, राजपूज्य, धीर-वीर एवं समर में महावीर होता है। **कौतुक** अवस्था में शनि के रहने पर जातक पृथ्वी और धन से युक्त, अत्यन्त सुखी, सुशील स्त्री के सुख से पूर्ण, कवि और कला का ज्ञाता होता है। यदि शनि **निद्रावस्था** में हो तो जातक धनी, सुन्दर गुण से युक्त, पराक्रमी, प्रचण्ड शत्रु को परास्त करने वाला और वेश्यागामी होता है।

**राहु अवस्था फल** –

यदि राहु **शयनावस्था** में हो तो जातक अधिक क्लेश से परेशान होता है। यदि राहु वृष, मिथुन, कन्या, अथवा मेषस्थ होकर शयनावस्था में हो तो जातक धन-धान्य से सुसम्पन्न होता है। यदि राहु **उपवेशन** अवस्था में हो तो जातक दाद रोग से पीड़ित होता है एवं राजभवन में मान्य होने पर भी उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। **नेत्रपाणि** अवस्था में राहु के रहने पर जातक नेत्ररोग से पीड़ित होता है, साथ ही उसे दुष्ट, शत्रु, चोर का भय और धन का नाश होता है। **प्रकाश** अवस्था में राहु के रहने पर जातक सुन्दर आसन, सुयश, धन तथा गुण की उन्नति, राजा से

अधिकार प्राप्त, प्रतिष्ठा, नूतन मेघसदृश आकृति वाला एवं विदेश से उन्नति करने वाला होता है। **गमनावस्था** में राहु के रहने पर जातक अधिक सन्तति वाल, पण्डित, धनी, दाता एवं राजपूज्य होता है। राहु के **आगमन** अवस्था में रहने पर जातक क्रोधी, सदैव बुद्धि एवं धन से वर्जित, कुटिल, कंजूस, अनेक गुणों से परिपूर्ण और धन सौख्य से युत रहता है। **आगम** में राहु हो तो जातक व्याकुलता, शत्रुओं का भय, बन्धु-बान्धव से वाद-विवाद स्वजन की हानि, धननाश, शठ और दुर्बल होता है। **भोजनावस्था** में राहु रहने पर जातक भोजन से विकल, मन्द बुद्धि, कार्य सम्पादन में दीर्घसूत्री एवं स्त्री पुत्रजन्य सुख से हीन होता है। **नृत्यालिप्सावस्था** में राहु के रहने पर जातक को महारोग वृद्धि का भय, नेत्ररोग, शत्रुभय तथा धन एवं धर्म की हानि होती है। **कौतुक** अवस्था में राहु हो तो जातक स्थानहीन, दूसरे की स्त्री में रत एवं सदैव दूसरे के धन का अपहरण करने वाला होता है। **निद्रावस्था** में राहु हो तो जातक गुणी, पुत्र-कलत्रादि सुख से युक्त, धीर, गर्वयुक्त और धन से परिपूर्ण होता है।

**केतु अवस्था फल –**

यदि केतु मेष, वृष, मिथुन, कन्या राशिस्थ होकर **शयनावस्था** में हो तो जातक धनवान होता है एवं अन्य राशियों में हो तो रोगकारक होता है। **उपवेशन** अवस्था में केतु हो तो जातक को

दाद-खुजली का रोग होता है, साथ ही शत्रु, वात, राजा, सर्प आदि का भय रहता है। **नेत्रपाणि** अवस्था में केतु हो तो नेत्ररोग, दुष्ट, सर्प, शत्रु और राजकुल से भय होता है। केतु प्रकाश अवस्था में हो तो जातक धनवान, धार्मिक, विदेश में रहने वाला, उत्साही, सात्विक और राजा का सेवक होता है। यदि केतु **गमनावस्था** में हो तो अधिक पुत्र वाला, महाधनी, पण्डित, गुणवान, दाता और उत्तम मनुष्य होता है। **आगमन** अवस्था में केतु के रहने पर विभिन्न रोग, धननाश, दन्तरोग, महारोग, चुगलखोर और दूसरे की निन्दा करने वाला जातक होता है। **सभावस्था** में केतु के रहने पर जातक वाचाल, अभिमानी, कंजूस, लम्पट और ठगविद्या का ज्ञाता होता है। **आगम** अवस्था में केतु के रहने पर जातक पापियों का प्रमुख, बन्धु-बान्धव से विवाद करने वाला, दुष्ट एवं शत्रु और रोग से पीड़ित होता है। **भोजनावस्था** में केतु के रहने पर जातक भूख से सदैव पीड़ित, दरिद्र, रोगयुक्त एवं पृथ्वी पर भ्रमण करने वाला होता है। **नृत्यलिप्सावस्था** में केतु हो तो जातक रोग से व्याकुल, आँख में बुद्-बुद्रोग, किसी के कथन को न धारण करने वाला, धूर्त और अनर्थकारी होता है।

**कौतुकावस्था** में केतु हो तो जातक कौतुकी, वेश्या में रत रहने वाला, स्थान से च्युत, दुराचारी और दरिद्र होकर पृथ्वी पर घूमने वाला होता है। **निद्रा**वस्था में केतु हो तो जातक धन-धान्यजन्य महती सुख वाला एवं विभिन्न प्रकार के गुणों को मनन करते हुए समय व्यतीत करने वाला होता है।

**ग्रहावस्थानुरूप भावों का शुभाशुभत्व कथन –**

जन्म समय में शयनावस्था में स्थित शुभ ग्रह जिस भाव में हों उस भाव का शुभ फल शंकारहित होकर फलकथन करने वालों को जानना चाहिए। भोजनावस्था में स्थित पाप ग्रह जिस भाव में बैठे हों उस भाव का फल हानि जानना चाहिए। यदि पापग्रह निद्रावस्था में रहकर सप्तम भाव में हों तो शुभ फल प्राप्त होता है, परन्तु पापग्रह से दृष्ट हो तो शुभ फल नहीं होता है। पंचम भाव में स्थित निद्रा या शयन अवस्था में पापग्रह हों तो शुभ फल होता है। निद्रा, शयन अवस्था में रहकर अष्टम भाव में पापग्रह बैठे हों तो उस जातक की राजा से या शत्रु से अपमृत्यु होती है। यदि शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक का गंगादि पवित्र तीर्थस्थानों में मरण होता है। शयन, भोजनावस्था में स्थित पापग्रह दशम भाव में हो तो जातक को पूर्वजन्मोपार्जित कर्मों के कारण विभिन्न दु:ख भोगना पड़ता है। चन्द्र, कौतुक या प्रकाशावस्था में रहकर दशम भाव में बैठे हों तो जातक को निश्चय ही राजयोग होता है। इस प्रकार बलाबल, शुभ-अशुभ का विचार कर सभी भावों का फल जानना चाहिए।

## बोध प्रश्न -2

1. ग्रह यदि अपनी मित्र की राशि में हो तो ......... अवस्था में होता है।

2. सम राशि में 6 से 12 अंश तक का ग्रह .......... अवस्था में होता है।

3. नीच राशि का ग्रह ........... होता है।

4. विषम राशि में 12 से 18 अंश तक का ग्रह ........ होता है।

5. उपवेशन अवस्था में ग्रह हो तो जातक ............. होता है।

6. जन्म समय में शयनावस्था में स्थित शुभ ग्रह जिस भाव में हों उस भाव का ...... फल होता है।

## 3.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि जातक शास्त्र के प्राय: समस्त ग्रन्थों में ऋषियों द्वारा ग्रहों की अवस्था का उल्लेख किया गया है। जब आप प्रमुख कुछ ग्रन्थों का अवलोकन करेंगे तो पायेंगे कि उन अवस्थाओं के प्रकार भी अलग-अलग दिखलायी पड़ते है। जैसे – अंशों पर आधारित ग्रहों की बालादि अवस्था, ग्रहों की दीप्तादि अवस्था और ग्रहों की मानसिक अवस्था आदि। सारावली नामक ग्रन्थ में आपको दीप्तादि अवस्थाओं के 9 प्रकार और जातकपारिजात ग्रन्थ में ग्रहों की 10 प्रकार की मानसिक स्थितियों का वर्णन प्राप्त होगा। ग्रहाणां अवस्था वा स्थिति: ग्रहावस्था: भवति। अर्थात् ग्रहों की अवस्था अथवा स्थिति का नाम ग्रहावस्था है। ग्रहों के विभिन्न अवस्थाओं को हम विविध ग्रन्थों के आधार पर समझ सकते हैं। मंगल बालक है, बुध कुमार, वृहस्पति की ३० वर्ष, शुक्र की १६ वर्ष, सूर्य की ५० वर्ष, चन्द्रमा की ७० वर्ष तथा शनि, राहु और केतु की वय (अवस्था) १०० वर्ष है।

## 3.7 पारिभाषिक शब्दावली

दिप्तादि अवस्था – ग्रहों की दिप्तादि 9 अथवा 10 अवस्थायें होती है।

खल ग्रह – नीच ग्रह

षड् – 6

ग्रहावस्था – ग्रहों की अवस्था

वय – अवस्था

सुप्तावस्था – सोया हुआ।

## 3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्नों के उत्तर – 1**

1. घ 2. क 3. क 4. ख 5. क 6. क

**बोध प्रश्नों के उत्तर – 2**

1. मुदित 2. भीत 3. वृद्ध 4. युवा 5. रोगयुक्त एवं मन्दबुद्धि 6. शुभ

## 3.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

जातकपारिजात- मूल लेखक – आचार्य वैद्यनाथ, टिका – हरिशंकर पाठक।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र – मूल लेखक – महर्षि पराशर, टिका- पं. पद्मनाभ शर्मा।

लघुजातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. कमलाकान्त पाण्डेय।

वृहज्जातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. सत्येन्द्र मिश्र।

सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा, टिका – डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी।

## 3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. ग्रहों की अवस्था से क्या तात्पर्य है।
2. ग्रहों की कितने प्रकार की अवस्थायें होती है। विस्तारपूर्वक लिखिये।
3. सूर्य की विभिन्न अवस्थाओं का फल लिखिये।
4. ग्रहावस्था का गणितीय पक्ष का उल्लेख कीजिये।
5. गुरु, शुक्र एवं शनि की अवस्थाओं का फल लिखिये।

# इकाई – 4 विंशोपक बल साधन

इकाई की संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 विंशोपक बल परिचय

4.4 विंशोपक बल साधन

4.5 सारांश

4.6 पारिभाषिक शब्दावली

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

4.9 सहायक पाठ्यसामग्री

4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

## 4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई MAJY-601 के द्वितीय खण्ड की चौथी इकाई से सम्बन्धित है, जिसका शीर्षक है – विंशोपक बल साधन। इससे पूर्व की इकाई में आपने ग्रहों की अवस्थाओं का अध्ययन कर लिया है। आइए अब इस इकाई में विंशोपक बल से सम्बन्धित ज्ञान का अध्ययन करते हैं।

विंशोपक बल का सम्बन्ध ग्रहों से है। फलादेश ज्ञान कथन में सूक्ष्मता हेतु विंशोपक बल का ज्ञान आवश्यक है। ग्रहों के बलाबल ज्ञान विंशोपक बल पर ही आधारित होता है।

विंशोपक बल के ज्ञान से आप सभी ग्रहों की अवस्थाओं के साथ-साथ उसके बलाबल का भी सम्यक्तया विश्लेषण कर लेंगे। फलस्वरूप कुण्डली फलादेश में आप और प्रवीण हो जायेंगे।

## 4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- बता सकेंगे कि विंशोपक बल क्या है?
- विंशोपक बल का विश्लेषण कर सकेंगे।
- विंशोपक बल के प्रकार को बता पायेंगे।
- विंशोपक बल का महत्व समझ लेंगे।
- सिद्धान्त एवं फलित ज्योतिष में विंशोपक बल की क्या भूमिका है? इसे समझा सकेंगे।

## 4.3 विंशोपक बल का परिचय

विंशोपक बल होरा या फलित शास्त्र का एक अभिन्न हिस्सा है। यह सदैव ग्रह तथा संधि के मध्य स्थित होता है। इसलिए इसके ज्ञानार्थ ग्रह तथा संधि के मध्य का गणितीय आनयन करते हैं, फलस्वरूप विंशोपक बल का हमें बोध हो जाता है। इसके ज्ञानाभाव में ग्रहों का सम्यक्तया फलादेश नहीं किया जा सकता है।

ग्रह तथा संधि के अन्तर को 20 से गुणा कर भाव तथा संधि के अन्तर से भाग देने विंशोपक बल मिलता है। भाव के समान ग्रह रहने से पूर्ण फल होगा और संधि के समान रहने से ग्रह निष्फल रहेगा। भाव तथा संधि के बीच में रहने से अनुपात द्वारा उसका विंशोपक बल लाया जाता है। आचार्य पराशर ने वृहत्पराशरहोराशास्त्र में विंशोपक बल को उद्धृत करते हुए लिखा है कि -

**मूल श्लोक: -**

**उदयादिषु भावेषु खेटस्य भवनेषु वा।**
**वर्गविंशोंपकं वीक्ष्य ज्ञेयं तेषां शुभाऽशुभम्।।**
**अथात: सम्प्रवक्ष्यामि वर्गविंशोपकं बलम्।**
**यस्य विज्ञानमात्रेण विपाकं दृष्टगोचरम्।।**
**गृहविंशोपकं वीक्ष्य सूर्यादीनां खचारिणाम्।**
**स्वगृहोच्चे बलं पूर्णं शून्यं तत्सप्तमस्थिते।।**
**ग्रहस्थितिवशाज्ज्ञेयं द्विराश्यधिपतिस्तथा।**
**मध्येऽनुपाततो ज्ञेयं ओजयुग्मर्क्षभेदत:।।**

अर्थात् लग्न से द्वादश भावों का और स्पष्टग्रहों का विंशोपक बल देखकर जातक का शुभाशुभ फल बताना चाहिए। अत: यहाँ आचार्य पराशर जी द्वारा विंशोपक बल का विचार किया जा रहा है। स्वगृह और उच्च में पूर्ण बल प्राप्त होता है एवं उससे सप्तम तथा नीच में बलाभाव हो जाता है। मध्य में अनुपात से बल का ज्ञान करना चाहिए।

**सूर्यहोराफलं दद्युर्जीवार्कवसुधात्मजा:।**
**चन्द्रास्फूजिदर्कपुत्राश्चन्द्रहोराफलप्रदा:।।**
**फलद्वयं बुधो दद्यात् समे चन्द्रं तदन्यके।**
**रवे: फलं स्वहोरादौ फलहीनं विरामके।।**
**मध्येऽनुपातात् सर्वत्र द्रेष्काणेऽपि विचिन्तयेत्।**
**गृहवत् तुर्यभागेऽपि नवांशादावपि स्वयम्।।**
**सूर्य: कुजफलं धत्ते भार्गवस्य निशापति:।**
**त्रिंशाशके विचिन्त्यैवमत्रापि गृहवत् स्मृतम्।।**

वृहस्पति, सूर्य और भौम- ये ग्रह सूर्यहोरा का फल देते है। चन्द्र शुक्र और शनि – ये ग्रह चन्द्रहोरा का फल प्रदान करते हैं तथा बुध, चन्द्र और सूर्य दोनों होरा का फल देता है। सम राशियों में चन्द्रहोरा का और विषम राशियों में सूर्यहोरा का फल प्रबल रूप से प्राप्त होता है। होरादि वर्ग के मध्य भाग में पूर्ण फलदायक होते हैं एवं अवसान में फलाभाव होता है, अतएव बीच में सर्वत्र अनुपात से फल अवगत करना चाहिए। इसी प्रकार द्रेष्काण आदि वर्गों का भी फल कहना चाहिए। चतुर्थांश में गृहसदृश फल जानना चाहिए, साथ ही त्रिशांश में सूर्य भौम तुल्य और चन्द्रमा शुक्र के तुल्य फलदायक होता है। इसमें प्राय: गृहसमान ही फल होता है।

**लग्नहोरादृकाणांकभागसूर्यांशका इति।**

**त्रिंशांशकश्च षडवर्गा अत्र विंशोपका: क्रमात्।।**

**रसेनत्राब्धिपंचाश्विभूमय: सप्तवर्गके।**

अर्थात् लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश द्वादशांश और त्रिंशांश ये ६ षड्वर्ग कहलाते हैं। इनमें क्रम से ६,२,४,५,२,१ इतने विंशोपक बल होते है।

**ससप्तमांशके तत्र विश्वका: पंच लोचनम्।**

**त्रय: सार्द्धं द्वयं सार्द्धवेदा द्वौ रात्रिनायक:।।**

**स्थूलं फलं च संस्थाप्य तत्सूक्ष्मं च ततस्तत:।**

सप्तमांशसहित पूर्वोक्त लग्न, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश सप्तवर्ग है। उनमें क्रम से ५,२,३,५/२ (ढ़ाई), ९/२ (साढ़े चार), २,१ – ये विंशोपक बल हैं। ये स्थूल विंशोपक बल है, अनुपात से सूक्ष्म विंशोपक बल का साधन करना चाहिए।

**दशवर्गा दिगंशाढया: कालांशा षष्टिभागका:।**

**त्रयं क्षेत्रस्य विज्ञेया: पंचषष्टयंशकस्य च।।**

**सार्द्धैकभागा: शेषाणां विश्वका: परिकीर्तिता:।**

पूर्वोक्त सप्तवर्ग में दशांश, षोडशांश और षष्टयंश युक्त करने पर दशवर्ग होते है। उनमें क्षेत्र में ३, षष्टंयश में ५ एवं शेष में ३/२ (डेढ़) -३/२ (डेढ़) विंशोपक बल होते हैं।

**अथ वक्ष्ये विशेषेण बलं विंशोपकाह्वयम्।**

**क्रमात् षोडशवर्गाणां क्षेत्रादीनां पृथक्-पृथक्।।**

**होरात्रिंशांशदृक्काणे कुचन्द्रशशिन: क्रमात्।**

**कलांशस्य द्वयं ज्ञेयं त्रयं नन्दांशकस्य च।।**

**क्षेत्रे सार्द्धं च त्रितयं वेदा: षष्टयंशकस्य हि।**

**अर्धमर्धं तु शेषाणां ह्येतत् स्वीयमुदाहृतम्।।**

**पूर्णं विंशोपकं विंशो धृति: स्यादधिमित्रके।**

**मित्रे पंचदश प्रोक्तं समे दश प्रकीर्तितम्।।**

**शत्रौ सप्ताधिशत्रौ च पंचविंशोपकं भवेत्।**

अब यहाँ इस श्लोक में गृहादि १६ वर्गों का पृथक्-पृथक् विंशोपक बल कहा गया है। होरा में १, त्रिशांश में १, द्रेष्काण में १, षोडशांश में २, नवमांश में ३, क्षेत्र में साढ़े तीन ७/२, षष्टयंश में ४ और शेष में १/२-१/२ आधा-आधा इस प्रकार कुल २० विंशोपक बल होते हैं। ये सभी विंशोपक बल

स्ववर्ग में हो तो पूर्ण २० बल, अपने अधिमित्रराशि में हो तो १८, अपने मित्र राशि में हों तो १५, समराशि में हों तो १०, शत्रुवर्ग में रहने पर ७ और अधिशत्रु राशि में हों तो ५ विंशोपक बल होता है।

**स्पष्ट विंशोपकबलसाधनम् –**

**वर्गविश्वा: स्वविश्वघ्ना: पुनर्विंशतिभाजिता:।**
**विश्वा फलोपयोग्यं तत्पंचोनं फलदं न हि।।**
**तदूर्ध्वं स्वल्फलदं दशोर्ध्वं मध्यमं स्मृतम्।**
**तिथ्यूर्ध्वं पूर्णफलदं बोध्यं सर्वं खचारिणाम्।।**

सभी वर्ग विंशोपक को अधिमित्रादि पूर्वोक्त विंशोपक से गुणा कर २० से भाग देने पर तत्तवर्ग में स्पष्ट विंशोपक बल फलादेशोपयोगी होता है। यह विंशोपक बल ५ से अल्प रहने पर फलदायक नहीं होता, बल्कि ५ से उपर १० तक स्वल्प फलप्रद और १० से १५ तक मध्यम तथा १५ से २० तक पूर्ण फलदायक होता है।

**अथाऽन्यदपि वक्ष्येऽहं मैत्रेय: त्वं विधारय।**
**खेटा: पूर्णफलं दद्यु: सूर्यात् सप्तमके स्थिता:।।**
**फलाभावं विजानीयात् समे सूर्यनभश्चरे।**
**मध्येऽनुपातात् सर्वत्र ह्युदयास्तविंशोपका:।।**

सूर्य से सप्तम स्थान में जितने ग्रह रहते हैं, वे सभी पूर्ण फल प्रदान करते हैं। सूर्य के तुल्य जो ग्रह रहते हैं, वे समस्त फल प्रदान करने में असमर्थ होते हैं। मध्य में त्रैराशिक अनुपात से फल का ज्ञान करना चाहिए।

**वर्गविंशोपकं ज्ञेयं फलमस्य द्विजर्षभ।**
**यच्च यत्र फलं बुद्ध्वा तत्फलं परिकीर्तितम्।।**
**वर्गविंशोपकं चादावयुदयास्तमत: परम्।**
**पूर्णं पूर्णेति पूर्णं स्यात् सर्वदैवं विचिन्तयेत्।।**
**हीनं हीनेति हीनं स्यात् स्वल्पेऽल्पात्यल्पकं स्मृतम्।**
**मध्यं मध्येति मध्यं स्याद्यावत्तस्य दशास्थिति:।।**

ग्रहों के फलाफल का आधार वर्गविंशोपक बल ही है, अत: वर्ग-विंशोपक बल को सम्यक् प्रकार से जानकर ग्रहों के उदय, अस्त को भी अच्छी तरह जान लेना परमावश्यक है। पूर्ण विशोंपक में भी दो प्रकार है। जैसे सामान्य पूर्ण १५ से साढ़े सत्रह १७.१/२ तथा अति विशिष्ट पूर्ण साढ़े सत्रह से २० है। इसी प्रकार मध्य में में दो भेद हैं। सामान्य मध्य १० से साढ़े बारह तक है और साढ़े बारह से १५ तक

उत्कृष्ट मध्य है। एवमेव हीन में भी ढ़ाई से ५ तक सामान्य हीन और ० से ढ़ाई तक अत्यन्त हीन होता है। इसी प्रकार स्वल्प में भी दो भेद हैं, जैसे ५ से साढ़े सात तक अत्यन्त स्वल्प और साढ़े सात से १० तक सामान्य स्वल्प है। इस प्रकार वर्गविंशोपक बलानुसार ग्रहों के सम्पूर्ण दशाफल को अवगत कराना चाहिए।

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, की केन्द्र संज्ञा होती है। २,५,८,११ की पणफर संज्ञा है और ३,६,९,१२ की आपोक्लिम संज्ञा है। लग्न से ५,९ की कोण संज्ञा है, ६,८,१२ की दुष्ट स्थान और त्रिक संज्ञा है। ४,८ को चतुरस्र कहते हैं। एवं ३,६,१०,११ की उपचय वृद्धि संज्ञा होती हैं।

तनु, धन, सहोदर, बन्धु, पुत्र, शत्रु, स्त्री, रन्ध्र, धर्म, कर्म, लाभ एवं व्यय- यह लग्न से द्वादश भावों के नाम हैं।

लग्न से नवम भाव से पिता का विचार अथवा सूर्य से नवम भाव से पिता के शुभ-अशुभ फल का विचार करना चाहिए। लग्न से दशम, एकादश भाव से जो विचार करने को कहा गया है, उस वस्तु का सूर्य से दशम, एकादश स्थान से विचार करना चाहिए। इसी प्रकार लग्न से ४,२,११ और ९ स्थान से जो विचार करने को कहा गया है, उसका विचार चन्द्र से ४,२,११ और ९ स्थान से भी विचार करना चाहिए। लग्न से तृतीय भाव से जो विचार करने को कहा गया है, उसका भौम से तृतीय भाव से भी विचार करना चाहिए और लग्न से षष्ठ भाव में जो विषयवस्तु विचार करने को कहा गया है उसका बुध से षष्ठ भाव से भी विचार करना चाहिए। लग्न से पंचम भाव से पुत्र सन्तति का विचार करने का विधान है, उसका गुरु से पंचम भाव से भी विचार करना चाहिए। इसी प्रकार शुक्र से सप्तम में स्त्री का और शनि से अष्टम भाव से मृत्यु का विचार करना चाहिए। इसी प्रकार जिस भाव से जिसका विचार करने को कहा गया है, उस का उस भाव के अधिपति से भी उसका विचार करना चाहिए।

## विंशोपक बल साधन-

सूर्य ३/७/१९/३५ दशम भाव ३/६/३१/२५ संधि ३/२१/२२/३०।।

(३।२१।२२।३०)– (३।७।१९।३५) = ०।१४।२।५५।। (१४।२।५५)×२०= २८०।५८।२० एकजातीय १०११५००।

(३।२१।२२।३०) – (३।६।३१।२५) = ०।१४।५१।५ एक जातीय किया तब ५३४६५

इतना हुआ। पूर्वसाधित एक जातीय राशि में इसका भाग देने से लब्ध १८।५४ सूर्य का विंशोपक

हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का भी साधन करना चाहिये।

**बोध प्रश्न –**

1. भाव तथा संधि के बीच में रहने से अनुपात द्वारा उसका ........... लाया जाता है।
2. १,४,७,१० की ............. संज्ञा होती है।
3. लग्न से द्वादश भावों का .............. देखकर फलादेश करना चाहिए।
4. ५ एवं ९ वें स्थान की .......... संज्ञा है।
5. लग्न से ९ वें भाव से .......... का विचार करना चाहिए।
6. सभी विंशोपक बल स्ववर्ग में हो तो पूर्ण ........ बल होता है।
7. ग्रहों के फलाफल का आधार ........... बल ही है।

## 4.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जान लिया है कि विंशोपक बल होरा या फलित शास्त्र का एक अभिन्न हिस्सा है। यह सदैव ग्रह तथा संधि के मध्य स्थित होता है। इसलिए इसके ज्ञानार्थ ग्रह तथा संधि के मध्य का गणितीय आनयन करते हैं, फलस्वरूप विंशोपक बल का हमें बोध हो जाता है। इसके ज्ञानाभाव में ग्रहों का सम्यक्तया फलादेश नहीं किया जा सकता है।
ग्रह तथा संधि के अन्तर को 20 से गुणा कर भाव तथा संधि के अन्तर से भाग देने विंशोपक बल मिलता है। भाव के समान ग्रह रहने से पूर्ण फल होगा और संधि के समान रहने से ग्रह निष्फल रहेगा। भाव तथा संधि के बीच में रहने से अनुपात द्वारा उसका विंशोपक बल लाया जाता है। लग्न से द्वादश भावों का और स्पष्टग्रहों का विंशोपक बल देखकर जातक का शुभाशुभ फल बताना चाहिए। अत: यहाँ आचार्य पराशर जी द्वारा विंशोपक बल का विचार किया जा रहा है। स्वगृह और उच्च में पूर्ण बल प्राप्त होता है एवं उससे सप्तम तथा नीच में बलाभाव हो जाता है। मध्य में अनुपात से बल का ज्ञान करना चाहिए।

## 4.7 पारिभाषिक शब्दावली

विंशोपक बल – ग्रहों के सप्तवर्गादि में क्रम से ५,२,३, ढ़ाई, साढ़े चार, दो और एक ये विंशोपक बल कहे गये हैं।
सप्तवर्ग – षडवर्ग में सप्तमांश को जोड़ने से सप्तवर्ग हो जाता है।
नवमांश – 3 अंश 20 कला का एक नवमांश होता है। राशि के नवें भाग को नवमांश कहते हैं।

द्वादशांश – राशि का 12 वॉं अंश द्वादशांश होता है। 2 अंश 30 कला इसका मान होता है।

त्रिशांश – एक त्रिशांश 1 अंश के बराबर होता है।

भांश – राशि का २७ वाँ भाग एक भांश के बराबर होता है।

## 4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न के उत्तर -**

1. विंशोपक
2. केन्द्र
3. विंशोपक बल
4. त्रिकोण
5. पिता
6. २०
7. वर्गविंशोपक

## 4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

जातकपारिजात- मूल लेखक – आचार्य वैद्यनाथ, टिका – हरिशंकर पाठक।

वृहत्पराशरहोराशास्त्र – मूल लेखक – महर्षि पराशर, टिका- पं. पद्मनाभ शर्मा।

लघुजातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. कमलाकान्त पाण्डेय।

वृहज्जातक – मूल लेखक – वराहमिहिर, टिका – डॉ. सत्येन्द्र मिश्र।

सारावली – मूल लेखक – कल्याणवर्मा, टिका – डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी।

## 4.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विंशोपक बल से आप क्या समझते से है।
2. षोडश वर्गों के विंशोपक बल लिखिये।
3. विंशोपक बल का साधन कीजिये।
4. विंशोपक बल का महत्व प्रतिपादित कीजिये।
5. सोदाहरण विंशोपक बल को स्पष्ट कीजिये।